संपादक-मंडल

संरक्षक – श्री राम नरेश सिंह, प्राचार्य

प्रधान संपादक – डॉ. उपेन्द्र प्रसाद

सह-संपादक – मयंक भार्गव, डॉ. ओम प्रकाश आर्य, निशि हेमरोम

प्रथम पंक्ति – बाँये से दाँये बैठे हुए – सूरज (225), अमित (314), अंकित (214), जितेन्द्र (213)– छात्र संवाददाता

द्वितीय पंक्ति – बाँये से दाँये बैठे हुए – श्रीमती निशि हेमरोम, श्री मयंक भार्गव, श्री रामनरेश सिंह, डॉ. उपेन्द्र प्रसाद, डॉ. ओमप्रकाश आर्य

तृतीय पंक्ति – बाँये से दाँये खड़े – सुमन (02), पीयूष (15), शिवाधीन (39), मनोहर (07), निखिल (10), ऋषभ (38) अतीश (159) – छात्र संपादक

विद्यालय के परिकल्पक - संस्थापकों के प्रति श्रद्धा-सुमन

स्व. श्रीकृष्ण सिंह
तत्कालीन मुख्यमंत्री

स्व. बद्रीनाथ वर्मा
तत्कालीन शिक्षा–मंत्री

स्व. एल.पी सिंह
तत्कालीन मुख्य सचिव

स्व. जगदीश चन्द्र माथुर
तत्कालीन शिक्षा–सचिव

स्व. एफ.जी. पिअर्स
शिक्षा विशेषज्ञ

डॉ० नीरा यादव
मंत्री
मानव संसाधन विकास विभाग
झारखण्ड, राँची

झारखण्ड सरकार

कार्यालयः एम.डी.आई. भवन,
धुर्वा, राँची –4
फोन : 0651–2400716
: 0651–2400932
फैक्स : 0651–2400637

शुभकामना संदेश

गुरुकुल परंपरा तथा आधुनिक शिक्षण-पद्धति का सम्मिलित केन्द्र नेतरहाट आवासीय विद्यालय विगत कई दशकों से, न केवल देश, अपितु विदेशों में भी अपने अस्तित्व को प्रमाणित कर रहा है। ज्ञान, संयम, सेवा एवं संस्कार की शिक्षा से ही मानव की शिक्षा पूर्ण होती है-

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

ज्ञान के पथ का अनुसरण कर मनुष्य शांति को प्राप्त करता है। मुझे प्रसन्नता है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उनके चरित्र-निर्माण पर भी बल दिया जाता है।

मैं विभागीय मंत्री-सह-अध्यक्षा, सामान्य निकाय, नेतरहाट आवासीय विद्यालय, होने के नाते इसके चतुर्दिक् विकास की कामना करती हूँ।

विद्यालय स्थापना-दिवस के इस शुभ अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डा० नीरा यादव)

राजीव गौबा, भा.प्र.से.
सरकार के मुख्य सचिव
Rajiv Gauba, I. A. S.
Chief Secretary to Government

झारखण्ड सरकार
मंत्रालय, धुर्वा,
राँची - 834 004, झारखण्ड
Government of Jharkhand
Mantralaya, Dhurwa,
Ranchi - 834 004, Jharkhand

संदेश

शिक्षा के क्षेत्र में नेतरहाट आवासीय विद्यालय एक विलक्षण प्रयोग है और यह विद्यालय अपनी प्रयोगधर्मिता से शिक्षा-जगत् एवं समाज को विमुग्ध करता चला आ रहा है। आज शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग एवं वाद-संवाद किए जा रहे हैं। प्रसन्नता का विषय है कि नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने स्थापना-काल से ही इन चिंतन मूल्यों के प्रति सजग-सचेष्ट रहा है। यहाँ गुरुकुल परंपरा और आधुनिक शिक्षण-पद्धति का अद्‌भुत संयोग देखने को मिलता है। यहाँ का परिवेश, यहाँ की आधारभूत संरचना, आश्रम-व्यवस्था और खुला वातावरण सबों को आमंत्रित करता है।

मैं विद्यालय के स्थापना-दिवस पर समस्त विद्यालय परिवार के लिए मंगलकामना करता हूँ कि विद्यालय अपने कर्मयोग से अपनी कीर्तियों को सँजोए रखेगा।

राजीव गौबा

नागेन्द्र नाथ सिन्हा (भा. प्र. से.)
प्रधान सचिव

ग्रामीण विकास विभाग
झारखण्ड सरकार
एफ० एफ० पी० भवन, प्रथम तल,
धुर्वा, राँची–834004
फोन–0651–2400244 (का०)
फैक्स–0651–2400245
ई–मेल–rddjharkhand2013@gmail.com

संदेश

नेतरहाट विद्यालय की स्थापना की 61 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर मैं अपने जीवन में योगदान के लिए कृतज्ञता एवं जीवन गढ़ने के 'मिशन' की निरंतर सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

नेतरहाट विद्यालय मात्र शैक्षणिक एवं बौद्धिक प्रतिभाएँ माँजने का माधयम न होकर पूर्ण मानव गढ़ने का उपक्रम है। इस दृष्टि ने अब तक विद्यालय–गतिविधियों को अनुप्राणित किया है। यह आज भी प्रासंगिक है। टाटा स्टील के नारे कि 'हम स्टील भी बनाते हैं' जैसा ही विद्यालय का सूत्रवाक्य 'यहाँ हम विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास भी करते हैं' होना चाहिए। मैं नेतरहाट विद्यालय के प्राचार्य, समस्त शिक्षक वृंद एवं अन्य हितधारकों से इसे अपने चित्त में सहेजने एवं तदनुसार कार्य करने का आग्रह एवं निवेदन करता हूँ।

पुन: मेरी ओर से समस्त विद्यालय समुदाय, नेतरहाट विद्यालय समिति एवं समस्त पूर्व शिक्षक वृंद एवं पूर्व विद्यार्थी वृंद को बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(एन. एन. सिन्हा)

आराधना पटनायक, भा.प्र.से.
सरकार के सचिव
Aradhana Patnaik, I. A. S.
Secretary to Government

School Education & Literacy
Department
Government of Jharkhand

संदेश

नेतरहाट आवासीय विद्यालय गुरुकुल की गुरु-शिष्य परंपरा के तहत् अपने विद्यार्थियों को संस्कार पूर्ण शिक्षा देते आ रहा है। इस विद्यालय का अपना अलग गौरवमय इतिहास रहा है। विद्यालय की विशिष्टता गुरु-शिष्य परंपरा में अध्ययन एवं अध्यापन की है।

विद्यालय परिवार द्वारा विद्यालय पत्रिका 'सर्जना' का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। मेरी आशा है कि 'सर्जना' के विशेषांक में प्रकाशित रचनाओं से राष्ट्र एवं समाज को नये चिंतन और दिशा बोध प्राप्त हो सकेगा।

इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार को ढेर सारी शुभकामनाएँ।

12.10.15

आराधना पटनायक

Dr. Manish Ranjan *I.A.S.*
Director of Secondary Education

Government of Jharkhand
School Education and Literacy Department
(Directorate of Secondary Education)

Message

It is a matter of pride to pen down the message for *"Sarjana"* the school Magazine of *Netarhat Vidyalaya, Netarhat*. I trust this magazine symbolizes accommodation of voice of the value system every *Hatian* upholds. It is a concoction of events, activities, views, opinions, ideas and one's imagination put into words.

Academic excellence along with Co-curricular and extra co-curricular activities completes the process of education. And it gives me great satisfaction that school is achieving acme of success and ensures dazzling future of its students.

The school magazine is a platform for students to express their creative pursuit which develops in them originality of thought and perception. The contents of the magazine reflect the wonderful creativity of thoughts and imagination of its *Antewasis*. This creativity chases away the boredom acquired through the monotonous routines of daily life and refreshes mind, body and soul of cadets. It also instills in them the feeling of team work and harmonious coordination. As the human race in this world is one big team, and in all aspects of life, everyone has to act like an ideal team member or just like a '*Hatian*'.

Netarhat Vidyalaya, Netarhat has played a pivotal role in shaping the character and blooming the intellectual, emotional and spiritual personality of students, resulting in nation building. It creates lifelong learners and indeed is a nursery of leaders of tomorrow.

The self confidence, strong will power and value based personality of '*Netarhat Old Boys* (*Nobs)*' is known worldwide; it can even move mountains and it creates miracles. The credit should certainly go to the devotion, dedication and determination of *Pradhan Jee, Sriman Jees* and *Maata Jees* who shape up future of students with passion, which leads to achieving pinnacle of glory and success.

I also take this opportunity to appreciate the hard work put in by each and every member of the Magazine Committee, which is highly commendable. It would certainly be able to leave imprints for future trails.

I wish success to *Netarhat Vidyalaya, Netarhat* in all its endeavours.

Best wishes!

(Manish Ranjan)

नरेन्द्र भगत, भा.प्र.से. (से.नि.)
सभापति, कार्यकारिणी समिति
नेतरहाट विद्यालय समिति

नेतरहाट विद्यालय समिति
(सोसाइटीज निबंधन अधिनियम, 1860 के अधीन निबंधित)
मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड
एच.ई.सी., एम.डी.आई. भवन, धुर्वा, राँची-834004
निबंधन संख्या : 688/2009-10

संदेश

'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' - ज्ञान के पथ पर अग्रसर नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने स्थापना दिवस 15 नवम्बर के अवसर पर 'सर्जना' पत्रिका के विशेषांक के माध्यम से विद्यालय के वार्षिक क्रिया-कलापों, उपलब्धियों, संकल्पों एवं छात्रों की रचनाधर्मिता को प्रकाशित कर प्रस्तुत करने जा रहा है; इस हेतु बधाई।

विगत पांच वर्षो से किंचित व्यवधानों एवं जड़ता से मुक्त होकर विद्यालय की शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं परंपरागत गतिविधियां व्यावहारिक स्तरों पर गतिशील हुई हैं। इसकी गरिमा तथा परम्पराओं को अक्षुण्ण रखते हुए विद्यालय की आधारभूत संरचनाओं के नवीनीकरण-कार्य प्रगति पर हैं; कुछेक नई परियोजनाएं - विशेषकर कृषि विषय से संबंधित-मूर्त्तरूप ले चुकी हैं; कुछेक अन्य परिकल्पित परियोजनाओं के सूत्रण तथा कार्यान्वयन आगामी महीनों में संभावित है।

सूचना-क्रान्ति के इस युग में विद्यालय आधुनिकतम संसाधन-सम्पन्न सुविधा से शीघ्र परिपूर्ण हो; कुल मिलाकर, विद्यालय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी विद्यालयों की पंक्ति में अपनी पहचान बनावे, यह मेरी कामना है।

विद्यालय के 61वें स्थापना-दिवस पर, इस पत्रिका के माध्यम से, समस्त विद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मुझे विश्वास है कि झारखण्ड सरकार तथा 'समिति' के मार्गदर्शन में विद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा।

नरेन्द्र भगत
नरेन्द्र भगत

सुशील कुमार चौधरी
भूतपूर्व मुख्य सचिव, झारखण्ड सरकार
सह
भूतपूर्व सभापति,
नेतरहाट विद्यालय कार्यकारिणी समिति, राँची

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि प्राचीन गुरुकुल परंपरा तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का सम्मिश्रण नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपनी स्थापना के इकसठवें पड़ाव पर विद्यालय - पत्रिका 'सर्जना' का विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

'समत्वं योग उच्यते'। समता का नाम ही योग है-इस विचारधारा की नींव पर स्थापित यह विद्यालय अपनी परंपराओं के साथ-साथ नवीनता के समावेश से निरंतर आगे बढ़ रहा है। इस अवसर पर मैं समस्त विद्यालय- परिवार तथा पत्रिका के संपादक को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

एस. के. चौधरी

कृष्ण स्वरूप प्रसाद
एम. एस. सी./एम. एड.
भूतपूर्व सह-शिक्षक एवं उप-प्राचार्य
सदस्य-नेतरहाट विद्यालय कार्यकारिणी समिति

184 / C2, हरिहर सिंह रोड,
मोराबादी, राँची - 834 008
0651-2551880, 98353-65611

संदेश

नेतरहाट विद्यालय जैसे अद्वितीय शिक्षण संस्थान से जुड़े रहने का मेरा सौभाग्य रहा है। मेधा के आधार पर चयनित झारखण्ड राज्य के प्रतिभा सम्पन्न बालकों को मितव्ययी, कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वावलंबी, चरित्र-निर्माण जैसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में व्यक्तिगत रूप से ध्यान एवं निदेशन में सतत् प्रयत्नशील प्राचार्य, शिक्षणकगण एवं कर्मचारी वृंद को विद्यालय के बासठवें स्थापना-दिवस पर बधाई।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करता रहेगा।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'सर्जना' अत्यन्त ही रोचक, उपयोगी एवं विद्यालय के क्रिया-कलापों की पूर्ण झलक देने में सक्षम होगी, ऐसी आशा है।

स्थापना - दिवस के कार्यक्रमों की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

13/10/2015

कृष्ण स्वरूप प्रसाद

प्राचार्य की कलम से...

नेतरहाट आवासीय विद्यालय की स्थापना प्रकृति के महाप्रांगण में एक विराट उद्देश्य के साथ हुई थी। अपने हीरक पड़ाव को पार करने वाला यह विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट सृजन सिद्ध हुआ है। अपने छात्रों को सत्य, प्रेम, करुणा, स्वाध्याय, श्रमशीलता, सहभागिता एवं समता का साधक बनाकर इस विद्यालय ने राष्ट्रीय चरित्र के विकास में योगदान देकर अपनी सार्थकता सिद्ध की है। यहाँ बिना किसी भेदभाव के छात्रों को व्यक्तित्व-निर्माण का अवसर मिलता है जिससे नेतरहाट विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र विद्यालय के आदर्शों का संबल लेकर अपनी प्रतिभा, क्षमता एवं समर्पणशीलता से समाज एवं राष्ट्र का गौरव बढ़ा रहे हैं। शैक्षणिक-जगत में कई दशकों से शिक्षा का अलख जगाने वाला, ज्ञान का दीप प्रज्वलित करने वाला भारत एवं झारखंड का गौरव नेतरहाट आवासीय विद्यालय अपने बच्चों में पढ़ाई के साथ-साथ सुसंस्कार, सुआचरण का बीजारोपण करता है एवं उन्हें सुयोग्य, जिम्मेदार नागरिक बनाता है। आज के भौतिकवादी युग में गुरु-शिष्य परंपरा विलुप्त सी हो रही है, पर हमारे विद्यालय में प्राचीन परंपराओं का आज भी निर्बाध रूप से पालन हो रहा है। शिक्षकों एवं छात्रों के बीच सहज एवं स्वस्थ रिश्ता आज भी हमारे विद्यालय में कायम है। यहाँ की परंपराएँ हम सबको एक सूत्र में बाँधती हैं।

इस अनूठे विद्या-मंदिर के पावन परिवेश में पल्लवित एवं पुष्पित हुए अध्ययनशील प्रवृत्ति के प्रतिभाशाली छात्रों पर विद्यालय को सदैव अभिमान रहा है। यह विद्यालय पूर्ववर्ती एवं अध्ययनरत छात्रों के लिए मातृवत है, जिसके आँचल की शीतल छाया में छात्र पलते-बढ़ते हैं एवं उनका सर्वांगीण विकास होता है। विद्यालय के प्रति पूर्ववर्ती छात्रों का आकर्षण विद्यालय एवं इसके आदर्शों के प्रति उनके भावनात्मक जुड़ाव का परिचायक है।

काल-प्रवाह के साथ परंपरा एवं आधुनिकता के साथ अनुकूलित होता हुआ यह विद्यालय बासठवें स्थापना-दिवस पर 'सर्जना' पत्रिका द्वारा अपनी रचनात्मकता का आह्वान कर रहा है। छात्रों में रचनात्मक प्रतिभा विकसित करने, उन्हें कल्पना शील बनाने, व्यक्तिगत सोच एवं समझ को उन्नत करने के उद्देश्य से विद्यालय-पत्रिका के माध्यम से उन्हें एक रचनात्मक मंच प्रदान किया जाता है ताकि अलग-अलग क्षेत्रों में उनके अंदर छिपी सृजनशीलता प्रस्फुटित हो सके। बच्चों की प्रतिभा पहचानकर प्रारंभ से ही कौशल-विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। आज के बहुविध परिवेश में रोजगार की दृष्टि से भी छात्रों के सामने कई विकल्प हैं। अत: अपनी प्रतिभा को पहचान कर सही विकल्प चुनने की आवश्यकता है। सृजनात्मक साधना हेतु छात्रों को विभिन्न विषयों पर विशिष्ट सोच के साथ लिखने की आदत डालनी चाहिए। इससे उनके मौलिक विचार सामने आते हैं; उनकी भाषा समृद्ध होती है, उनकी तार्किक एवं विश्लेषण क्षमता बढ़ती है एवं उनका मस्तिष्क उन्नत होता है।

मेरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में झारखंड सरकार एवं नेतरहाट विद्यालय समिति के मार्गदर्शन में विद्यालय का मन, मस्तक एवं मस्तिष्क पूर्व की भाँति और उन्नत होता जाएगा। मैं सरकार एवं समिति के प्रति अंत:करण से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। विद्यालय की दृढ़ आधारशिला रखने वाले भूतपूर्व प्राचार्यों एवं शिक्षकों को मेरा नमन एवं वर्तमान शिक्षकों, प्रशिक्षकों, कार्यकत्ताओं एवं प्रिय छात्रों को शुभकामनाएँ।

राम नरेश सिंह

सम्पादकीय.....

हीरक जयंती का एक वर्ष सरक गया... मुठ्ठी की रेत की तरह! लेकिन, मुठ्ठी अभी भी बँधी हुई है - विमुग्धता और सशक्तता में लिपटी हुई। लगता है, कल की बात हो!

विद्यालय परिवार की रचनाधर्मिता, आशा-आकांक्षाओं और मधुर कल्पनाओं की अभिव्यक्ति 'सर्जना' का एक और विशेषांक आपके हाथों में है।

अपने देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में लक्ष्यत: और कार्यत: परिवर्तन नही किया जा सका, फलस्वरूप आज निर्माण की बेला में यही क्षेत्र अधिक अशांत, अस्थिर और विघटनशील है। अतीत की गौरव-गरिमा-परंपरा और आधुनिक भौतिकवाद और पूँजीवाद की गहरी अन्विति और सामंजस्य के अभाव में सब कुछ सतही और छिछला दिखता है। व्यावसायिक शिक्षा के, नाम पर शिक्षा के व्यवसाय का ताण्डव सर्वत्र व्याप्त है। अक्षर-ज्ञान, हुनर और कौशल-विकास ही शिक्षा नहीं है। आत्मिक उन्नयन या विराट मानव के सृजन की जगह मानव-सम्पदा ही श्रेय एवं प्रेय बन कर रह गयी है।

विद्या को हमारे मनीषियों ने दो वर्गों में विभक्त किया है-परा विद्या और अपरा विद्या। परा विद्या आत्मिक उन्नयन, आत्म-संस्कार और विराट-विभ्राट मानव की रचना की प्रक्रिया है, तो अपरा विद्या समस्त भौतिकता और देह-धर्म से संबद्ध। आधुनिकता की सबसे बड़ी चुनौती है दोनों के संतुलन और समरसता की।

भारतीय चिन्तन में औपनिषदिक चिन्तन आज भी दुग्ध-धवल अरूणाभ शिखर है-

विद्याबुद्धिरविद्यायाम ज्ञानात्तात जायते,
बालोऽग्निं किं न खद्योतमसुरेश्वर मन्यते?
तत्कर्मयन्न बन्धााय सा विद्या या विमुक्तये
आयासायापरं कर्म विद्याऽन्या शिल्प कौशलम्।

प्रहलाद की उक्ति है कि अज्ञान के कारण अविद्या को भी लोग विद्या कहने लगते हैं, जैसे बच्चे जुगनू को भी चिनगारी समझते हैं, परन्तु वस्तुत: कर्म तो वह है, जो फँसानेवाला, सांसारिक दाँव - पेचों में पड़ाए रखनेवाला न हो और विद्या भी वही है, जो आत्यंतिक सुख शांति की जननी हो, परम तृप्तदायिनी हो। इसके अतिरिक्त और समस्त कार्य केवल परिश्रम के लिए और सभी विद्याएँ शिल्प या हुनर हैं।

विद्या केवल अध्यात्म-विद्या है। वही आत्मज्ञान पूर्वक लोकमंगल की सीख देती है। इस कार्य के सहायक उसके और जितने अंग-उपांग हैं उन्हें भी विद्या कहना ठीक होगा। यदि हम भारतीय मनीषा के इतिहास को देखें तो लगता है, विद्या के आत्यन्तिक उन्नयन की प्रतिक्रिया में ही आज अविद्या की तीव्र गतिशीलता है। आवश्यकता है दोनों के संतुलन की, देह और आत्मा का संतुलन; भौतिकता और अध्यात्म का संतुलन।

शिक्षा-संस्थानों में ही राष्ट्र का व्यक्तित्त्व निर्मित होता है, अत: आश्चर्य का विषय नहीं है कि भारतीय मनीषा ने, प्रत्येक अतीत युग में, शिक्षा के क्षेत्र को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा तथा तत्कालीन शासन-व्यवस्था के नियत्रंण से उसे मुक्त रखा। आज आवश्यकता है-उसी सम्मान और उन्मुक्तता को पुन: स्थापित करने की।

अन्तत: विद्यालय के इकसठवें पग-निक्षेप पर यही मंगल कामना है-

संगच्ध्वं संवदध्वं संवोमनांसि जानताम!

उपेन्द्र प्रसाद
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

हमारे प्राचार्य, शिक्षक एवं प्रशिक्षक

प्रधान माता के साथ माताएँ

अग्र पंक्ति बाँयें से : सर्व श्रीमती रूपवती प्रधान, डॉ. शोभा पाण्डेय, प्रीता झा, आशा सिंह (प्रधान माता), माधुरी गुप्ता, प्रमिला प्रसाद, यात्रा शारदीय, मृदुला झा।

द्वितीय पंक्ति बाँयें से : सर्व श्रीमती प्रतिमा पाण्डेय, राधा कुमारी, ममता सिंह, आशा मुनी टूटी, नूतन आर्या, अपर्णा भार्गव, निशि हेमरोम।

हमारे शिक्षक – प्रशिक्षक

अंग्रेजी विभाग – श्रीमती निशि हेमरोम, श्री रामनरेश सिंह (प्राचार्य), श्री राजेश कुमार राय (अध्यक्ष)

कला विभाग – श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्त (अध्यक्ष), श्री परमेश्वर प्रसाद

संस्कृत विभाग – डा० ओम प्रकाश आर्य, श्री सुरेश कुमार झा (अध्यक्ष), श्री विंध्याचल पांडेय

भौतिकी विभाग – सर्वश्री राजकुमार प्रसाद (अध्यक्ष), मारूति प्रताप सिंह, सतीश कुमार झा, मनोज कुमार (प्रशिक्षक)

अर्थशास्त्र विभाग – सर्वश्री अंजनी कुमार पाठक, डा० प्रसाद पासवान

गणित विभाग – सर्वश्री राकेश कुमार, मो० मजहर अली, डा० अनुरंजन झा (अध्यक्ष) अभिषेक मिश्र

हिन्दी विभाग – सुश्री सेवंती तिर्की, सर्वश्री मयंक भार्गव, डा० उपेन्द्र प्रसाद (अध्यक्ष), नरेन्द्र मंडल

राजनीति विज्ञान विभाग – सर्वश्री मुकेश कुमार, अनिल कुमार सिंह (अध्यक्ष)

हमारे शिक्षक - प्रशिक्षक

रसायन विभाग – सर्वश्री गोपाल किसान (लैब पि०), बुधनलाल महली (प्रशि०), ओम प्रकाश तियु, डा० गिरीन्द्र प्रसाद (अध्यक्ष), रविप्रकाश सिंह

इतिहास विभाग – डा० शोभा पांडेय (अध्यक्ष), श्री अंशुमान चटर्जी

भूगोल विभाग – सर्वश्री विधुशेखर देव, मुरलीधर कोटवार (अध्यक्ष), विनोद टोप्पो

कम्प्यूटर विभाग – सर्वश्री रवि रंजन (अध्यक्ष), सिल्वेस्टर मुर्मू

जीवविज्ञान – सर्वश्री अंजन किंकर (प्र० स०), उदय कुमार मराण्डी, श्रीमती राधा कुमारी (अध्यक्ष), गोपाल कालुंडिया, श्रीमती अंजना मिंज (स्टोर)

संगीत विभाग – सर्वश्री दिवाकर मिश्र, शिशिर सौरभ (अध्यक्ष)

कृषि विभाग – श्री रंजन सिंह (अध्यक्ष), श्रीमती ममता कुमारी (प्रशिक्षिका)

उपदेष्ट्री – सुश्री शीतल वरनवाल

माताएँ

सर्व श्रीमती कृष्णा झा

अरूणिमा

उषा पाठक

उमा पाण्डेय

रंजना सिंह

डॉ. अदिति लाल

सर्व श्रीमती दीपाली राय

श्रावणी चटर्जी

शशि पासवान

माया सिंह

सोना कुमारी

प्रशासनिक पदाधिकारी - श्री सुहर्ष कुमार

प्राचार्य एवं प्रशासनिक पदाधिकारी के साथ कर्मचारीगण

काश! ऐसे कुछ और स्कूल होते हमारे यहाँ

मैट्रिक का रिजल्ट आये और टॉपर नेतरहाट आवासीय विद्यालय का न हो, ऐसा विरले ही होता है। आज से नहीं, उन दिनों भी यही हाल था जब बिहार का बंटवारा नहीं हुआ था। इस साल भी सभी टॉपर यानी टॉप टेन नेतरहाट विद्यालय के ही थे। मन में सवाल आता है कि नेतरहाट में कैसे पढ़ाई होती है कि टापर यहीं से निकलते है और यहाँ से निकले अनेक बच्चे आइएएस–आइपीएस बनते हैं। गत 31 दिसंबर और एक जनवरी को मैं नेतरहाट में ही था। नेतरहाट विद्यालय भी गया था। विद्यालय का मुख्य गेट बंद था। आग्रह करने पर खुला। उस दिन विद्यालय कमेटी की बैठक हो रही थी। मुख्य भवन के प्रवेश द्वार पर यह श्लोक लिखा है, जो सभी को प्रेरित करता है–

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

उस दौरान विद्यालय में छुट्टी चल रही थी, छात्र घर गये हुए थे। आश्रम भी खाली थे। एक शिक्षक से मुलाकात हुई, उनसे सवाल पूछे–यहाँ की दिनचर्या क्या है? कैसे बच्चों को पढ़ाते हैं? विस्तार से उन्होंने जवाब दिया, कतई महसूस नहीं हुआ कि राष्ट्रीय स्तर के एक विद्यालय के शिक्षक से बात हो रही है। बड़े विनम्र, एक आश्रम उनके जिम्मे था, पत्नी स्कूल के बच्चों के खाने का प्रबंध देखती थीं। बिल्कुल गुरूकुल पद्धति से वहाँ बच्चों का जीवन चलता है। छात्रों की ओर से गुरु और गुरुमाता के प्रति आदर का भाव, शिक्षक और गुरुमाता भी स्कूल के बच्चों और अपने बच्चों में फर्क नहीं कर पाते। अपने बच्चे जैसी देखभाल करते है। अब स्कूलों में यह कहाँ दिखने को मिलता है? गाँधी के विचारों पर आधारित इस स्कूल में नाई, धोबी से लेकर दर्जी तक होते हैं, ताकि बच्चों को कहीं और भटकना नहीं पड़े। ठीक एक स्वावलंबी गाँव की तरह।

बच्चों में स्वानुशासन है, किसी को कहना नहीं पड़ता कि यह पढ़ने का समय है, सुबह चार बजे उठना पड़ता है, योग व्यायाम से लेकर खेलकूद तक की शिक्षा दी जाती है। व्यावहारिकता पर अधिक जोर,बच्चों को स्वावलंबी बनने की शिक्षा दी जाती है, शिक्षक ज्ञानवान हैं, साथ में है पढ़ाने और बच्चों को बेहतर नागरिक बनाने का जुनून। समर्पण का अद्भुत उदाहरण। ऐसा नहीं है कि नेतरहाट के बच्चों को सिर्फ परीक्षा में अच्छे नंबर लाने के लिए पढ़ाया जाता है। किसी विषय की गहराई से जानकारी दी जाती है। पढ़ाई का तरीका भी अलग है। बच्चों के लिए सब कुछ पूर्व निर्धारित है। कब उठना है, कब तक पढ़ना है, कब योग करना है। कब प्रार्थना में जाना है, कब खेलना है, कब खाना है, कब सोना है। यही कारण है कि इस स्कूल से निकले छात्र देश के प्रतिष्ठित पदों पद कार्यरत हैं। राजीव रंजन इसी स्कूल के छात्र रहे हैं जो कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर है, उन्हें 2011 में नोबेल प्राइज के लिए नामित किया गया था।

ऐसी बेहतरीन संस्था पर किसी भी राज्य को गर्व हो सकता है। लेकिन यह भी सत्य है कि दूसरा नेतरहाट विद्यालय झारखण्ड, बिहार या देश के अन्य हिस्सों में नहीं बन सका। जवाहर नवोदय विद्यालय खोल कर आश्रम स्कूल की परिकल्पना को आगे ले जाने का प्रयास तो किया गया लेकिन नेतरहाट स्कूल जैसी गरिमा पाने में वे सफल नहीं रहे। नेतरहाट स्कूल की परिकल्पना फ्रेडरिक गार्डन पीयर्स की थी, जिन्होंने देश में कई आवासीय स्कूल बनाये। वे प्रसिद्ध दार्शनिक जे कृष्णमूर्ति के विचारों से प्रभावित थे। जब बिहार में ऐसा विद्यालय खोलने की बात आयी तो उन्हें जे.सी. माथुर और डा० सच्चिदानंद सिन्हा जैसे लोगों का सहयोग मिला। श्री कृष्ण बाबू की सहमति मिली और 1954 से यह स्कूल अस्तित्व में आ गया। उनके काम को आगे बढ़ाया वहाँ के पहले प्राचार्य चार्ल्स नेपियर ने, एक ऐसा स्कूल जहाँ गरीब अमीर छात्र साथ–साथ पढ़ सकते हैं, पैसा आड़े नहीं आता। खर्च सरकार वहन करती है।

लेकिन एक चुनौती भी है। राज्य में बेहतरीन उच्च शिक्षण संस्थान नहीं रहने के कारण आगे की पढ़ाई वे कहाँ करें? उच्च शिक्षा की सुविधाओं का अभाव कहीं प्रतिभाओं की राह न रोक दें?

अनुज सिन्हा, वरिष्ठ सम्पादक
(प्रभात खबर से साभार)

गुरुकुल – शान्ति निकेतन और नेतरहाट विद्यालय

आज के इस आधुनिक युग में जहाँ गुरूकुल परंपरा पर आधारित विद्यालय लुप्त होते जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर नेतरहाट विद्यालय लगातार विश्व पटल में अपनी कीर्ति पताका फहरा रहा है। इस विद्यालय के सितारे पूरे विश्व भर में जगमगा रहे हैं। इस विद्यालय के संदर्भ में यह भी कहा जाता है कि 'नेतरहाट आवसीय विद्यालय गुरुकुल परंपरा पर आधारित अंतिम विद्यालय है।' लेकिन जब भी मैं यह वाक्य पढ़ता या सुनता हूँ तो मेरे जेहन में पाठ भवन विश्वभारती शांतिनिकेतन का नाम याद आता है। हालांकि विश्वभारती शांतिनिकेतन एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है लेकिन वहाँ प्रारंभिक शिक्षा की भी व्यवस्था है। अर्थात् विश्वभारती के दो विभाग पाठ भवन और शिक्षा सत्र में कक्षा एक से बारह तक की पढ़ाई होती है। जब भी गुरूकुल परंपरा की बात की जाती है नेतरहाट विद्यालय और पाठ भवन विश्वभारती में बहुत सारी समानताएँ दीख पड़ती है या फिर, यह भी कहा जा सकता है कि इन दोनों शिक्षण संस्थाओं ने गुरुकुल परंपरा को एक नई ऊँचाई प्रदान की है। दोनों ही संस्थाओं ने इस देश को कई महान विभूतियाँ समर्पित की हैं।

आज की शिक्षा पद्धति जहाँ बंद कमरों एवं कृत्रिमता में सिमटती जा रही है वहीं दूसरी ओर ये दोनों संस्थान प्रकृति की गोद में पलकर शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाईयों को प्राप्त कर रहे है। कहना न होगा कि यहाँ के छात्रों की सफलता से प्रकृति भी अधिक प्रफुल्लित और आनंदित नजर आती है। इस बात में कोई संदेह नहीं कि गुरु शिष्य के संबधों में जो घनिष्ठता और मधुरता नेतरहाट आवासीय विद्यालय में है, शायद ही विश्व के किसी अन्य विद्यालय में हो। लेकिन कुछ ऐसी ही बात पाठ भवन विश्व भारती में देखी जा सकती है। गुरु–शिष्य के आदर्श संबंधों को इन दोनों विद्यालय में देखा जा सकता है। इन दोनों विद्यालयों की अपनी–अपनी परंपराएँ हैं लेकिन दोनों का लक्ष्य गुरूकुल परंपरा को और सुदृढ़ और भव्य रूप प्रदान करना है।

पाठ भवन और नेतरहाट विद्यालय विशिष्ट विद्यालय हैं और यहाँ की मान्यताएँ भी आम संस्थानों से भिन्न तथा विशिष्ट हैं। उदाहरण के तौर पर सभी विद्यालयों में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को सर या मैम कहा जाता है लेकिन नेतरहाट विद्यालय में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को क्रमशः श्रीमान जी एवं 'माता जी' कहा जाता है। दूसरी ओर पाठ भवन में क्रमशः 'दादा (भैया) एवं 'दीदी' कहा जाता है। शायद गुरु–शिष्य के अटूट रिश्ते के पीछे यह एक कारण हो सकता है। इन सभी संबोधन के माध्यम से विद्यार्थी अपने को गुरु के अधिक निकट महसूस करते है और पूरा विद्यालय उन्हें एक परिवार की भाँति महसूस होता है। इस मधुर वातावरण में छात्र विद्यालय परिसर में अपने पारिवारिक रिश्तों को पुनः प्राप्त कर लेते हैं। इन विद्यालयों के छात्र अपने शिक्षकों में ही माता–पिता, भाई–बहन आदि सभी रिश्तों को खोज लेते है और परिणामस्वरूप सहज रूप में ज्ञान का आदान–प्रदान प्रारंभ हो जाता है। किसी भी आवासीय विद्यालय के लिए यह जरूरी होता है कि विद्यार्थी विद्यालय में अपने परिवार के सदस्यों की कमी महसूस नहीं करे और जब नेतरहाट आवासीय विद्यालय के छात्र अपने गुरु को श्रीमान जी एवं माताजी कहकर संबोधित करते है तो उन्हें एक अपनेपन का एहसास होता है। यही बात पाठ–भवन में दादा और दीदी के संबोधन में देखी जा सकती है।

विश्वभारती के रूप में हम जिस संस्था को जानते है उसकी शुरूआत 1901 ई० में एक छोटे से विद्यालय के रूप में हुई थी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शांतिनिकेतन आश्रम में इसकी स्थापना की। रवीन्द्रनाथ के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर शांतिनिकेतन आश्रम के स्रष्टा थे। रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक आदर्श विद्यालय की स्थापना करना चाहते थे। उनकी जीवन स्मृति से हमें पता चलता है कि छोटी उम्र में ही तब के स्कूल की रीति–नीति तथा शिक्षक एवं छात्रों के आचरण से रवीन्द्रनाथ संतुष्ट नहीं थे और शायद उसी वेदना के कारण उन्होंने शांतिनिकेतन विद्यालय का निर्माण किया। उन्होंने शिक्षा प्राप्ति के लिए एक ऐसे स्थान की खोज की, जहाँ नगर–जीवन की विभिन्न बाधाओं से दूर बच्चों के शरीर–मन के साथ प्रकृति का स्पर्श हो सकेगा। जब नेतरहाट विद्यालय की स्थापना शहर से दूर प्रकृति के बीच एक निर्जन पठार

में की गई तब भी इनके संस्थापक मनीषियों के मन में भी यही बात रही होगी। प्राचीन भारतीय शिक्षा ऐसी ही प्रकृति के बीच जंगलों में रहकर प्राप्त की जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका प्राप्त करना नहीं है अपितु राष्ट्र हित में चरित्र निर्माण करना है। शिक्षा से जीवन का मूल लक्ष्य प्राप्त होता है। आजीविका का संबंध केवल अभाव और आवश्यकता से होता है किंतु जीवन का लक्ष्य परिपूर्णता से संबंधित होता है। इस दृष्टि से नेतरहाट विद्यालय स्थापना काल से ही छात्रों को जीवन में परिपूर्णता हासिल करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

विश्वभारती शांतिनिकेतन में शिक्षा के कई केन्द्र तथा विभाग है। इनमें से एक प्रमुख विभाग है पाठ भवन विद्यालय। प्रारंभ में 1901 ई० से 1921 ई० तक यह विद्यालय शांतिनिकेतन ब्रह्मचर्याश्रम तथा 1921 ई० से 1924 ई० के दौरान विश्वभारती पूर्ण विभाग के रूप में था। 1925 ई० से यह विश्वभारती पाठ भवन के नाम से प्रचलित है। पाठ भवन की स्थापना एक ऐसे समाज के रूप में की गई थी जिसमें गुरु–शिष्य गृही–अतिथि, बंगाली–अबंगाली, भारतीय–अभारतीय सभी एक साथ पड़ोसी बनकर रहेंगे। विद्यार्थी अपने पड़ोसियों को जानेंगे, उनसे प्यार करेंगे, उनकी सेवा करेंगे। शिक्षक और छात्रों के बीच एक घनिष्ठ संबंध स्थापित हो तथा पूरे समाज में सहयोग और सौहार्द्र का माहौल हो। आजादी के पूर्व सभी मूल्यों की शुरूआत पाठ भवन में हुई तो आजादी के बाद नेतरहाट विद्यालय ने इन मूल्यों को और भी अधिक उत्कृष्ट रूप प्रदान किया और गुरुकुल परंपरा पर आधारित सर्वश्रेष्ठ विद्यालय बनने का गौरव प्राप्त किया। पाठ भवन और नेतरहाट विद्यालय ने आश्रम और तपोवन की शिक्षा पद्धति को जीवित बनाए रखा और गुरु–शिष्य परंपरा की एक मजबूत नींव भारतीय समाज को प्रदान की।

किसी भी विद्यालय में शैक्षिक क्रिया–कलापों के साथ–साथ सह–शैक्षिक क्रियाकलापों का छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। निःसंदेह आज के समय में जितने सह–शैक्षिक क्रियाकलाप नेतरहाट विद्यालय में होते हों। चाहे वह हिन्दी कविताओं की अद्‌भुत एवं बेमिसाल अंत्याक्षरी प्रतियोगिता हो, हिन्दी और अंग्रेजी नाटकों का भव्य मंचन, हो या फिर चित्रकला तथा संगीत का उत्कृष्ट प्रदर्शन हो। नेतरहाट विद्यालय में सह–शैक्षिक क्रियाकलापों की एक अद्‌भुत परंपरा है जो अपने स्थापना काल से ही यहाँ के अंतेवासी छात्रों को जीवन के हर क्षेत्र में प्रवीण बनाती रही है।

पाठ भवन विश्वभारती में सह–शैक्षिक क्रियाकलापों की बात की जाय तो गीत, नृत्य, नाटक चित्रकारी, हस्तशिल्प, ग्राम सेवा कार्य, कृषि कार्य आदि प्रारंभ से ही है। पाठ भवन में हर सप्ताह साहित्य सभा का आयोजन किया जाता है वहाँ के अंतेवासी छात्र–छात्राएँ स्वरचित रचनाएँ कहानी, कविता लेख आदि की प्रस्तुति करते हैं। पाठ भवन के छात्र विशेष रूप से नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प के क्षेत्र में प्रतिभावान है। विश्वभारती के कई उत्सव एवं त्योहार में वहाँ के छात्र नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प आदि का प्रदर्शन करते है। समय–समय पर वहाँ के छात्रों के हस्तशिल्प की कला की प्रदर्शनी लगाई जाती है। गीति–नाट्य को प्रस्तुत करना वहाँ की एक विशेष परंपरा है जिसमें गीतों के माध्यम से नाट्क की प्रस्तुति की जाती है।

पाठ भवन विश्वभारती और नेतरहाट विद्यालय में बहुत सारी समानताएँ होने के बावजूद दोनों संस्थानों की कुछ अलग–अलग परंपराएँ भी है। दोनों संस्थान विशिष्ट संस्थान है और दोनों ने शिक्षा के क्षेत्र में नई बुलंदियों को छुआ है। पाठ भवन विश्व भारती में आज भी पेड़ों के नीचे प्रकृति के बीच में कक्षाएँ होती हैं वहीं दूसरी ओर नेतरहाट विद्यालय 'स्मार्ट क्लास' की ओर अग्रसर है। नेतरहाट विद्यालय में आज आश्रम व्यवस्था कायम है जहाँ अंतेवासी छात्र अपना सारा काम स्वयं करते हैं वही दूसरी ओर पाठ भवन के छात्रावास आधुनिक छात्रावास का रूप ले चुके हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि गुरूकुल परंपरा को इन दोनों विद्यालयों ने जीवित रखा है फिर भी दोनों की अपनी अलग–अलग पहचान एवं परंपराएँ हैं जो दोनों को अपनी तरह का अनोखा एकलौता विद्यालय का रूप प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपराओं एवं मूल्यों को जीवित रखने के लिए मैं इन दोनों विद्यालयों को शत्–शत् नमन करता हूँ।

नेरन्द्र कुमार मंडल
हिन्दी शिक्षक

आश्रमों के अन्तेवासी

आश्रमों के अन्तेवासी

आश्रमों के अन्तेवासी

व्यायाम प्रशिक्षक

चिकित्सालय

पुस्तकालय

प्राचार्य के साथ चतुर्थवर्गीय कर्मचारीगण

रसोइये

मैंने-तुमने प्यार किया था

मैंने–तुमने प्यार किया था–
मैंने–तुमने प्यार किया था, तुमने–मैंने प्यार किया था
मैं अनजानी, तुम अनजाने, हमने भी क्या प्यार किया था
मैंने–तुमने प्यार किया था।

डरी–डरी हिरणी–सी चंचल
शर्मीली नीली आँखों को
तल–तल निर्झर ऊपर पत्थर
बर्फीली झीली आँखों को
जानें कैसे तेरे तट उस चलने को तैयार किया था–
मैंने–तुमने प्यार किया था।

मैं अनजानी, तुम अनजाने, हमने भी क्या प्यार किया था
रात जगी, भिनसार भटकती
कंटिल उपवन, पंकिल गलियाँ
डलिया भर जी भर कर तोड़ीं
नवल धवल बेला की कलियाँ
कर तेरे, कंपित कर धरकर जीवन–धन उपहार दिया था–
मैंने–तुमने प्यार किया था।

हलचल–सी मच गई नगर में
चर्चा घर–घर गली–डगर में
हमने कोई पाप किया ज्यों
चुप–चोरी घुस मन–मन्दिर में
तन के–मन के अन्दर कुछ–कुछ होना सच स्वीकार किया था–
मैंने–तुमने प्यार किया था।

इस जीवन के अन्दर–अन्दर
भी कोई जैसे जीवन ज्यों
चंचल मन के भीतर सुस्थिर
सुस्थित जैसे कोई मन ज्यों
लक्ष्मी मैंने अमृत बाँटा, तुमने शिव विषधार पिया था–
मैंने–तुमने प्यार किया था।

बिछड़े–बिछड़े हम जीवन भर
हाथ हमारा कभी न छूटा
कच्चे धागों में क्या जादू
यह मनबंधन कभी नटूटा
फेरे हमने नहीं लगाये, सात समुन्दर पार किया था
मैंने–तुमने प्यार किया था, तुमने–मैंने प्यार किया था
मैं अनजानी, तुम अनजाने, हमने भी क्या प्यार किया था।
मैंने–तुमने प्यार किया था।

–शिवदास पाण्डेय
(भूतपूर्व शिक्षक)

वाणी-वंदना

निश्चित भूखंड मिला सबको
कोटी सपाद शत् जन घनता,
नय निर्णय का अधिकार मिले
हिन्दी भाषा को संप्रभुता।

सुरभारती भाषा की दुहिता,
उर्दू की भगिनी हूँ निश्चय,
भारत की हूँ पहचान, सखे!
क्या है तुमको बोलो, संशय।

आशा के लेकर नवोन्मेष
मै दीप जलाने आयी हूँ,
गलियों से लेकर नगरों तक
मैं राह दिखाने आयी हूँ।

ले नवकेतन मानवता का
मैं हूँ देखो किलकित कानन,
मेरे ललाट पर बिंदी है
आँगन–आँगन हो नन्दन वन।

निःशंक अंक में आ जाओ
बन जाऊँगी मैं वर वाणी
जूड़े में गजरा बाँध खड़ी
गह ले मेरी पुलकित वाणी।

छंदों की छाया से छनकर
कविता बनकर में द्रुत चली,
रस्मों रीतियों से गुजर–गुजर
ऊष्णिल ऊर्मि ले बह निकली।

खुसरो की मस्ती का मोती,
हूँ बरदाई का वीर बखान,
दक्षिण से आयी भक्ति का
नवधा राधन, पूजन, गुणगान।

महाप्राण की विजन वल्लरी,
मैं प्रसाद की लोल लहर,
मैं हूँ महीयसो दीपशिखा,
कल कंत पंत का मसृण स्वर।

अवधी प्रांगण की तुलसी बन
पावन परिणय मेरी पहचान,
ब्रज की गलियों की राधा हूँ,
वंशीधर का पीला परिधान।

मैं हूँ दिनकर की रसवंती,
कब जाने मैं हुँकार बनी,
सदियों की बेड़ी में जकड़ी,
जनता की प्रीत पुकार बनी।

तलवारों से बचती आयी,
बंदूको से लड़कर आयी,
नदियों के क्षरित कगारों से
सद्यः स्नाता बनकर आयी।

मुझको लेकर तुम लड़ो नहीं,
मै नहीं कोई हूँ बंजारन,
कह लो माता, मौसी भगिनी,
कर दूँगी तेरा कुल पावन।

माँ की ऐसी मैं हूँ बेटी
बाँधी अक्षर पद से चोटी,
मैं राष्ट्र धर्म की हूँ चेटी,
सबको देती आयी रोटी।

मेरे फूलों की लड़ियों से
रच लो सुन्दर सा हार, सखे!
लोकाराधन है व्रत निष्ठा
केवल इच्छा, सब मान रखे।

कितनी सदियाँ अब बीत चुकी
श्रृंगार सदा रचती आयी
नख से शिख तक शिख से नख तक
मैं भार सदा सहती आयी।

मैं बोली से उपबोली से,
उस भाषा और विभाषा से,
अब विविध विधा से विलसित हो
मैं निकल गयी सब बंधन से।।

ह–से हिम्मत पाकर भी मैं,
इ–से इज्जत करती आयी,
न–से नंदित द–से दयिता,
ई–से ईप्सित पाती आयी।।17।।

मैं दिव्यलोक की दिव्य परी
उस देवयान से उतर गयी,
जनमानस रस में खूब पगी
फिर नागर जन के बीच गयी।

मैं देवनागरी के पथ से
सुंदर रूपों में बह निकली,
त्रिपथगा से ली होड़ मचा
वह सागर में, मैं गली–गली।

दुर्गम कान्तारों, झीलों से
मैं घास चबाने खेत गयी,
अमृत के प्यारे प्याले में
संदेशमुखी परदेश गयी।

कर्णों की जाति नहीं पूछो
एकलव्य गोत्र क्यों जानोगे?
था सत्यकाम कितना अकाम,
अपनी जाति बतलाओगे।

देने का मूल्य नहीं होता,
लेने से हीन मनुज होता,
विनिमय से दुनिया चलती है,
दाता सम तुल्य नहीं होता।

अपने सुंदर से जीवन में
मत पालों छद्मो की छाया,
सुंदर दिखता है जग निश्चय
पर सुंदर है सबसे माया।

गंगा यमुनायित हो अविकल
यमुना जल भी गंगायित हो,
कृष्णा कावेरी की धारा
कल्मष धोकर भी पावन हो।

गागर में सागर लेकर मैं
जब सात समंदर पार गयी,
सबसे मिलकर सन्देश सुना
सारी शंका निर्मूल हुई।

अभिलाषा कोटि कंठों की
मैं लोकतंत्र की सिंहवाहिनी,
अकड़ी भी नहीं, लुढ़की भी नहीं
सम शान्ति दया की गंधवाहिनी।

मेरा एक सुंदर सपना है,
मैं चिर कुमारिका बनी रहूँ,
मधुपर्क तेरी निर्झरिणी से
कल–कल सरिता सी बहा करूँ।

विंध्याचल पाण्डेय 'मधुपर्क'
सह–शिक्षक संस्कृत
bindhyachalpandey1962@gmail.com

कल मेरे घर बादल आया

कल मेरे घर बादल आया
बोला कि दवाजा खोलो,
घर में बैठे क्या करते हो
आओ मेरे संग संग खेलो।

मस्त पवन के झूले पर चढ़
तुम्हें गगन की सैर कराऊँ,
इन्द्र धनुष में कर प्रवेश,
दुनिया के सारे रंग दिखाऊँ।

देखो हरी भरी यह धरती
ऊपर से कैसी लगती है,
क्या अरमान छिपे हैं दिल में
हम सब से यह क्या कहती है।

कहती मेरे प्यारे बच्चो
जल जीवन है इसे बचाओ,
अगली पीढ़ी को देने को
तुम भी तो कुछ वृक्ष लगाओ।

प्यार करो आपस में इतना
निज समाज को स्वर्ग बनाओ,
दीन दुखी जन की सेवा कर
पुण्य कमाओ खुशियाँ पाओ।

समय कीमती है जिसने भी
इसे छोड़कर मुट्ठी खोली,
सपने–सपने रहे निरंतर
नहीं भरी जीवन की झोली।

हम सब भी कुछ सीख धरा से
प्रगति मार्ग पर कदम बढ़ाएँ,
मिल अमृत बूंदें बरसाकर
धरती की नित प्यास बुझाएँ।

अभिषेक मिश्र
गणित विभाग

चेतावनी

समय की चिलचिलाती धूप में
नुक्कर के तंग चौराहे पर खड़ा
इंसानियत ाक पहरूआ
आसमान की ओर देख कर बोला
मेरी बार–बार की चीत्कार
चीख और पुकार
का जो तुम मजाक बनाते हो
और जरूरत पड़ने पर
दुबक जाते हो
क्या सोचते हो
इन मुश्किलों से हम डर जाएँगे
अबतक अपनता बनाते थे
अब तुम्हारा मुकद्दर भी हम बनाएँगे।

अभिषेक मिश्र

बंधन

भाई के विगलित हृदय का स्पंदन है राखी
बहना के वृहत स्नेह का विवरण है राखी

मानो तो एक कच्ची सूत है राखी
और समझो तो
दो दिलों से अभिभूत है राखी

कुछ खट्टी कुछ मीठी यादों का निमंत्रण है राखी
नजर न लगे भाई को कभी
कलाई पर बाँधी है ऐसी अंजन राखी

दो मज़हब के अंतरद्वंद्वों की दीवार तोड़ती है राखी तभी तो
मुँह बोले भाई के खातिर
जाती सरहद पार है राखी

पूरे वर्ष के प्रेम का समाहार है राखी
भाई की आशक्ति और बहन का आचमन है राखी।

सेवंती तिर्की
शिक्षिका हिन्दी विभाग

क्रांति गीत

क्रांति की मशाल को तू हर घड़ी जलाए जा।
राह में रोशनी के लिए पथिक को दिखाए जा।।

तिमिर का आक्रांत यहाँ,
पंछी भी अब श्रांत यहाँ,
धरा किरण खोज रही–
जिससे हो शांत जहाँ।
मार्ग शांति का जग में आज तू बताए आ।
क्रांति की मशाल को तू हर घड़ी जलाए जा।।

जन–जन भय से काँप रहा,
सदियों से अन्याय सहा;
अब न कदम रूकेंगे अपने–
जातिवादी पहाड़ ढहा।
समता का मार्ग जहाँ में नित नया बनाए जा।
क्रांति की मशाल को तू हर घड़ी जलाए जा।।

शहीदों की है आन हमें,
भारत भू की शान हमें;
झंकृत करती उर को अब–
राष्ट्र गान की तान हमें।
सबके न्याय हेतु संघर्ष का गीत सुनाए जा।
क्रांति की मशाल को तू हर घड़ी जलाए जा।।

एक अब अपना वतन हो
लहलहाता यह चमन हो;
गूंजे मधुमय गान वहाँ–
जहाँ कोई न निर्धन हो।
दीप हेतु स्नेह वर्तिका को प्रतिपल लाए जा।
क्रांति की मशाल को तू हर घड़ी जलाए जा।।

राजेश रमण
लिपिक

लोग

इस मुल्क में हर जुल्म से इश्क करने लगे हैं लोग,
छोड़ मोहब्बत की दामन मुखलिफ बनने लगे है लोग।
इस जन्नत–ए–जमीं पे कयामत से फिर आया बजूद,
हर इक तराना उसी का गुनगुनाने लगे हैं लोग।
शिलाओं से दिल लगाकर जजबातों से दिल हटाकर,
मार्ग श्मशान के तय करने लगे है लोग।

महफूज इंसानियत से हटकर डूब हैवानियत में फिर,
कत्ल मासूम असगर का करने लगे है लोग।
खुदा–ए–दरबार में, अक्ल–ए इन्तहान में,
दर दर यूँ असफल होने लगे हैं लोग।
अगर जीना है तो जिन्दगी जियो जी भर के,
क्यों अंधकार में जीने लगे हैं लोग।

जगन्नाथ रजक
लिपिक

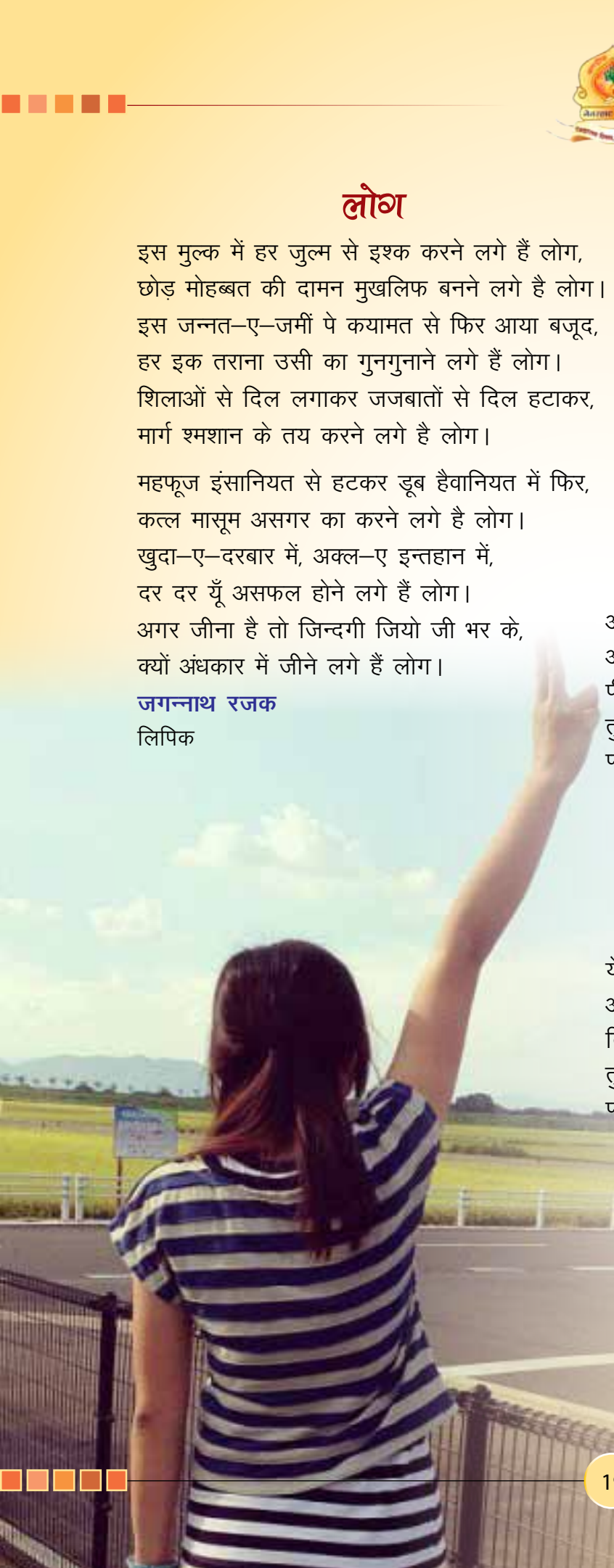

अनदेखी राहें

अनदेखी राह सब चल रहें हैं
अस्ताचलगामी ढल रहे हैं
पीड़ा भरी है राह आगे
तुम इसे विराम दो।
प्यार का वरदान दो।।

हृदय भारत का जल रहा है
मोम सदृश पिघल रहा है।
दिल्ली के दिल में बड़ी जलन है
तुम इसे आराम दो।
प्यार का वरदान दो।।

ये कहानी चल रही हैं,
अर्थहीन यह पल रही है,
दिखता नहीं है अंत इसका
तुम इसे अंजाम दो।
प्यार का वरदान दो।।

लफ्ज खाली आ रहे हैं,
बेतार, नीरस गा रहे हैं
तुम इन्हें लयबद्ध कर दो,
प्रेम का मधुगान दो।
प्यार का वरदान दो।

ऋषभ ठाकुर
38

जा रहा हूँ....

जा रहा हूँ छोड़कर, न वापस आना है।
मुझे तुमसे प्यार था, गुजरा जमाना है।

तेरा और मेरा हाथ, हाथ पे हाथ पुराना है।
लाख अश्क हो आँखों में, आँसू नहीं बहाना है।

मजबूर हूँ दिल की बात, तुमको नहीं बताना है।
पास आकर दूर जाकर तुमको नहीं रूलाना है।

तुम ठहरे नादां और मैं दिल–ए–मजबूर,
बातें दिल में दबाए, वापस चले जाना है।

वो पायल की छन–छन, वो घूँघट उठाना,
उठाकर धूँघट तेरी, न चेहरा दिखाना है।

बरसती बदरिया चली तुम्हें बुलाने को,
जाते बादल का दिल मुझे बहलाना है।

दिल की आग है, बदन जल जायेगा तेरा,
इन स्फुर्लिंगों से तुमको बचाना है।

तेरा हाथ पकड़कर तुझे पास बुलाना,
उन यादों को दिल में बसाकर छुपाना है।

तेरी याद मुझको, मेरी याद तुझको,
इन यादों को दिल के कब्र में दबाना है।

आना है, जाना है, पाना है, खोना है,
खोकर भी तुमकों, कभी न भुलाना है।

जा रहा हूँ छोड़कर, न वापस आना है,
मुझको तुमसे प्यार था, गुजरा जमाना हैं।

आयूष आनंद
08

सुन्दर

तुम्हारा लक्ष्य हो सौंदर्य, पर सौंदर्य क्या है?
छिपाना रूप अपना, दिखाना झूठ ही सौंदर्य है क्या?
सत्य ही सुन्दर है ऐसा मान लेना–
सौंदर्य के खातिर है आगे चल निकलना।

चढ़ाकर लेप चन्दन का स्वयं सारे बदन में
जरा सोचो कि शीतलता कहीं आती है मन में
लगाकर केश में तुम तेल गन्धिल–
सोचो, क्या मन भी गन्धिल हुआ है?

भ्रम है स्वप्न के संसार को जीवन बताना,
भ्रम है रात्रि के राकेश को सुन्दर बताना,
चंद्रमा रात का, क्षण सुन्दर है लगता, भ्रम बनाता,
दिन का सूर्य ही हर सत्य से पर्दा उठाता।

सुमन पाँखें क्षणिक सौंदर्य का प्रर्याय होती,
क्षुधा पीड़ित मनुज को यह नहीं स्वीकार्य होती।
सौंदर्य की स्थिरता केवल सत्य में है,
सत्य का सुन्दर निरूपण सत्य में है।

पर न जाने लोग क्यों इस भ्रम में रहते,
निर्बल कार्य, झूठे रूप को सुन्दर हैं कहते
मुखौटा क्रीम का नित पोतकर तनकर निकलते
हम हैं सुन्दर, सभ्य हैं हम, और खुद को सत्य कहते

भाल सूखा एक का है और पिचके गाल है–
और एक का आनन बस रक्त से ही लाल है।
उस लाल में सौंदर्य है यह जानते हो–
फिर मुखौटे को भला क्यूँ मानते हो?

कभी जीवन में स्वप्निल भाव को आने न देना,
जीवन पथ में इस भ्रमजाल को छाने न देना,
सुन्दरता सत्य में है सत्य शक्ति का निरूपण
सुन्दरता गति में है गति का पर्याय जीवन।

सुमन शेखर
02

पाक को पत्र

भला मासूमों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?
तुम्हारी गोली ने इंसान जला डाला है।
गर छीना चैन है, हमने तुम्हारी साँसों से।
तो मोहब्बत से हमने ही तुम्हें पाला है।
तुम्हारी.....

जहाँ की श्वेत घाटियों में बर्फ जमते हैं।
तुम्हारे लोग क्यों कश्मीर को हड़पते हैं।
कश्मीर हमारा है तुम्हारा क्यों है?
छिप–छिप के तुमने लोगों को मारा क्यों हैं?
हमने बचपन से इसे कोख में संभाला है
तुमने इस स्वर्ग को तो नर्क बना डाला है।
तुम्हारी.....

हमारी हार का तुम जश्न मनाते क्यों हो?
बेबस बच्चों को अनाथ बनाते क्यों हो?
हमारी हार में अगर तुम्हारी जीत छिपी।
तो ये हार मेरी जीत की ही माला है।
तुम्हारी .....

हमने हरदम हमारे हाथ ही पहले बढ़ाए
तेरी तकदीर की तकलीफ हमने ही उठायी
लगता है खून तेरा खून नहीं हाला है।
बेकसूर हाथों को तुमने काट डाला है।
तुम्हारी .....
अगर शर्म अब भी आ गई सँभल जाओ
प्यार का पाठ गर पढ़ना है तो आगे आओ
वरना इन हाथों ने तलवार भी सँभाली है
हमने भी हाथों में चूड़ियाँ नहीं डाली है
तुम्हारी .....

मुझे इक बात समझ में नहीं आती है
क्यों गोली के निशाने पर मेरी ही छाती है?
याद उस दिन को कर जब हम तुम्हारे साथ में थे
साथ हम दूजे मिलके हँसते और गाते थे।
साथ में मंदिर तुम और मस्ज़िद हम जाते थे।
अब क्यों मंदिर और मस्ज़िद में लगा ताला है।
तुम्हारी .....

है हिम्मत अगर तो आओ सामने आओ।
बाजू में दम है कितना? हमको भी दिखलाओ
हमें भी देखना है गोली की ताकत तुम्हारी
जा धंसे सीने में या चीरे हौसला हमारी
बस! करो माफ मासूमों को न तड़पाओ
भूल गए पाक? युद्ध में तुम्हें पछाड़ा है।
तुम्हारी.....

पीयूष कुमार
15

माँ कहाँ हो तुम?

माँ, कैसे अपनी व्यथा सुनाऊँ,
कोई न रहा मेरा जीवन में,
हर–पल याद तुम्हारी आती,
पल–पल मुझे तड़पाती हो
माँ, कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

रवि के तीव्र आतप में जब,
सारा चमन सहम गया था,
तेरी ममता की छाया में,
मैं अमर गान गा रहा था।
माँ, कहाँ छोड़ तुम चल गयी हो!

सर्वस्व अपना कर दिया समर्पण,
कर सका न मैं तेरा अर्चन
अपना पावन आँचल छोड़ गयी हो
आँगन को सूना कर गयी हो!
माँ; कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो,

बीते दिनों की याद हैं लम्हें,
जब तेरी गोद होती मेरी पनाहें
चाँद–सितारों की कहानी
हर दम होती तेरे लबों पे,
माँ, कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

करूणा, प्रेम और दुआओं को
इस हर्षित हृदय के अरमानों को,
मेरे बचपन की यादों को
आज उठाकर चली गयी हो,
माँ, कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

इन आँसुओं की कीमत ही क्या?
जिन्हें तेरा आँचल छू न पाए,
स्वर्ग से सुंदर घर भी क्या
जहाँ तेरी खुशियाँ ही न हो
माँ कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

माँ, तू ममता की सरगम
तू है मेरी खुशियों का दामन,
अब सुन ले मेरी पुकार
क्या, हिमगिरि में छिप गयी हो
माँ, कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

पर्वत रोये, सरिता रो गयी,
शस्य–श्यामल धरती रोई,
मेरी आशाओ के दीप बुझे
क्या, रत्नाकर–गर्भ में चली गयी हो,
माँ कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

माँ, कहाँ तुम्हें खोजूँ मैं
क्या तारों की महफिल में बैठी हो,
माँ कहाँ छोड़ तुम चली गयी हो!

भाष्कर
164

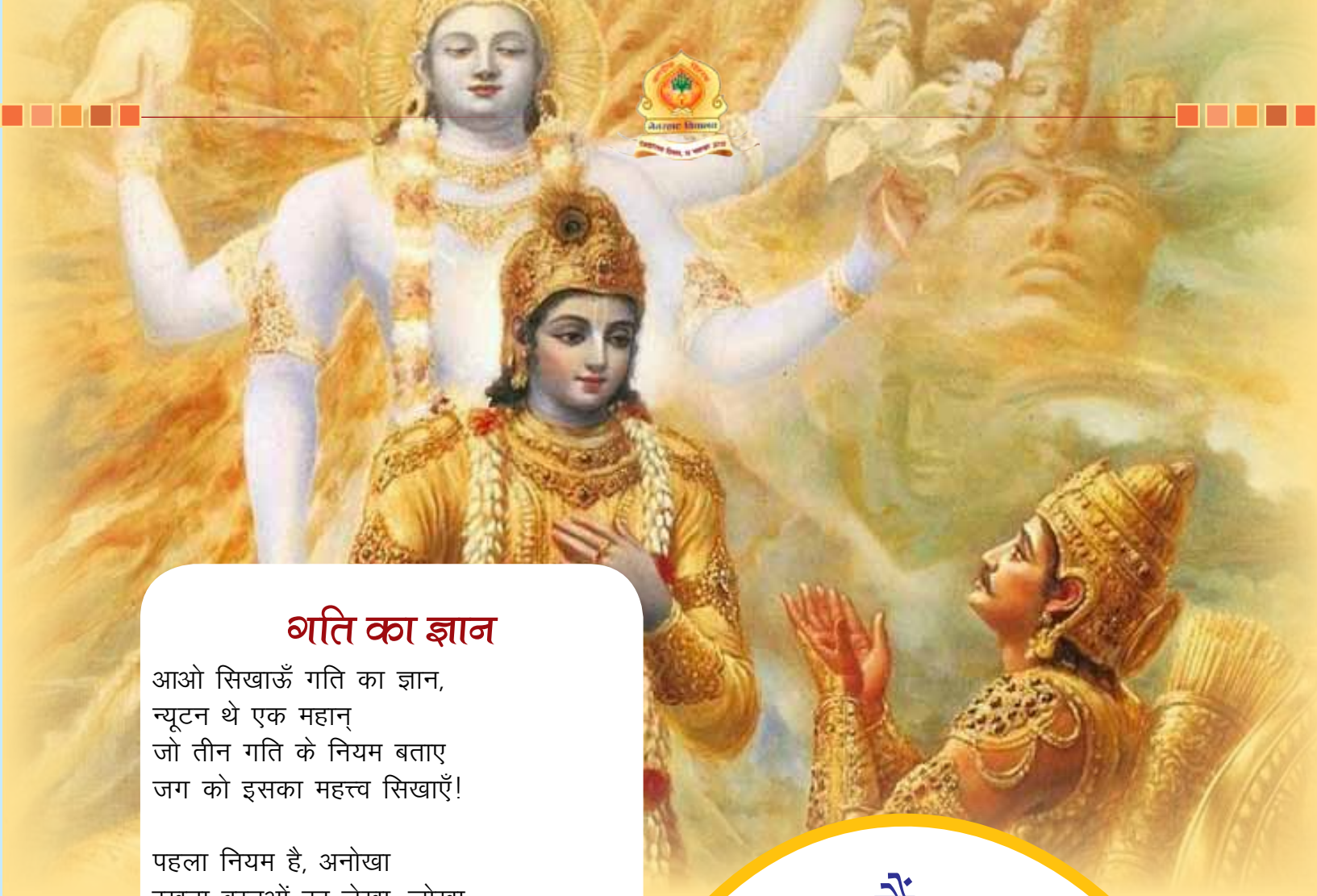

गति का ज्ञान

आओ सिखाऊँ गति का ज्ञान,
न्यूटन थे एक महान्
जो तीन गति के नियम बताए
जग को इसका महत्त्व सिखाएँ!

पहला नियम है, अनोखा
रखता वस्तुओं का लेखा–जोखा
वस्तु स्थिर है या गति में
या जो रहना चाहता है उसी में

संवेग–समय का संबंध बतलाता
जो इसका परिवर्तन दर कहलाता
बल के समानुपाती होते हैं वे
द्वितीय गति नियम कहलाते हैं ये
तृतीय गति नियम का ज्ञान संतुलन
होने न देता कोई असंतुलन
प्रत्येक कार्य के विपरीत कार्य
जिसके कारण ये करता अनेकों चमत्कार

जाना तुमने गति के नियम तीन
जिसका उपयोग होता प्रतिदिन
इस बार तुम दिमाग लगाओ
तीन–चार गति के नियम और खोज लाओ।

शुभमराज
138

मैं...

अंदर – ही– अंदर टूट चुका था
पराया तो पराया ही अपनों से भी लुट चुका था
मेरा न कोई साथ था
न मेरे ऊपर किसी का हाथ था
अपने भी रूठने लगे थे
सपने भी टूटने लगे थे
पता नहीं किस अटल में खो गया यह सुनकर
कब मृत हो सो गया यह सुनकर
थोड़ा चिड़चिड़ाया, गिड़गिड़ाया, दरवाजा खटखटाया
कड़ी थोड़ी सरकी, दरवाजा भी थोड़ा खुला
थोड़ी किरणे आयी, घर में समायी
आयी किरणों से उलझ न पाया
क्या करूँ 'मैं' अब भी समझ न पाया।

प्रेमाशीष कुमार रजक
641

कविता पर कविता

जमाने बीत गये,
कविता निकली ही नहीं अंदर से
आज आकर कुछ लिखने बैठा हूँ।

किसे याद करूँ, प्रियतम तुम्हें
या प्रकृति पर ही कविता लिख डालूँ
बहुत ऋणी हूँ मैं माँ का
'माँ' भी शीर्षक हो सकती है।

'नेतरहाट' भी मेरा जीवन है।
इसे कैसे भूल जाऊँ?
नहीं, आज कविता पर कविता लिखता हूँ।

कविता को विरह वेदना का संगीत कहते हैं लोग
पर मैं न ही विरह हूँ
न ही वेदना है मुझे, मगर हाँ
कविता को तो वेदना है।
अनाचार से जूझ रही है कविता।

कहाँ गये निराला, प्रसाद, महादेवी, दिनकर
जैसे लोग।
क्या ये जन्म नहीं लेते?
या इन्हें जन्म लेने नहीं दिया जाता
कहाँ गई कविता?

ढूँढने निकला तो
लोग कविता की किताब बेचते नज़र आए
कोई खरीदते नहीं
लोग आलोचक तो मिले
कोई पक्षधर नहीं।

लोगों ने अपमान तो किया
कोई सराहा नहीं
कहाँ गई कविता?

कविता पर कविता क्या लिखूँ
कविता कोई लिखता ही नहीं।
किस कविता को आधार बनाऊँ?

कविता–कविता ही नहीं।
लोग लिखते हैं माँग पर
खुद से कोई सींचता ही नहीं
दिनकर को बहुत ढूँढ़ा
अब कोई चीखता ही नहीं
कहाँ गई कविता?

शायद,
बन गई कविता।
कश–म–कश मैंने तो कदम बढ़ाया
न चाहकर भी कविता बनायी
साग्रह निवेदन है,

कविता पनपने दें सींचे इसे
तब मैं फिर लिखूँगा
आ गई कविता।

राजेश कुमार मौर्य
83

मैं रोया नहीं

मैं आशिक था तुम्हारी आशिकी का,
बिछुड़ कर तुमसे मै रोया नहीं।
दिल ने इज़ाजत दी इंतजार करने को,
लबों ने शब्द पिरोया नहीं।
शिकायत तेरी करता हूँ सितारों से,
रातों को मैं कभी सोया नहीं।

सपनों में साथ सजाते आशियाँ थे,
हकीकत में इसको संजोया नहीं,
वो हँसना, वो रोना, वो सिसकर मनाना,
इन यादों को मैंने खोया नहीं।
मोहब्बत के फूल थे भीतर समाये ये पौधे जमीं
पर मैं बोया नहीं।

जिन हाथों से मैने छूआ था तुमको,
उन हाथों को अब तक मैं धोया नहीं।
जिन सासों की सांसें थी तुम्हारी सांसे,
उन सांसों की बोझ तुमने ढोया नहीं।
मैं आशिक था तुम्हारी आशिकी का,
बिछुड़कर तुमसे मैं रोया नहीं।

आलोक कुमार

29

किसान की तरक्की का

सूरज निकला

किसान की तरक्की का सूरज निकला,
लेकिन अंधेरा फिर भी ना पिघला,
किसानों ने संघर्ष किया,
उसका रस दूसरों ने पिया;
किसानों ने बदल दिया हर–चीज़ का रूख
खाना पीना, रहना और सबकुछ
खुद दुखभरी जिंदगी जीता
पर औरों के लिए खुशनुमा जिंदगी लाता,
अमीरों के लिए सब है खुशनुमा
उनके घरों में दुःख है गुमाँ,
आलिशान बंगला, महंगी गाड़ियाँ
ढ़ेर सारे नौकर, देर रात पार्टियाँ
यही है अमीरों की निशानी
वही पर बर्वाद हो रही है गरीबों की जिंदगानी,
किसान की तरक्की का सूरज तो है निकला
पर क्या अभी तक अंधेरा है पिघला।

प्रेम कुमार रजक

169

नेतरहाट विद्यालय हमारा है

पावन ज्ञानदीप गुरूकुल अपना,
देश को आलोकित करना है सपना
ज्योति राज्य का आज है
नेतरहाट विद्यालय हमारा
हमको इस पर नाज है
पारंगत विज्ञ हैं गुरूजन सब;
कर्मठ हैं गुरूकुल शिरोमणि प्रधान;
प्रगल्भ सभी सहकर्मी अपने
अतदीपा विहरथ अपनी पहचान
चार्ल्स नेपियर की अमर कल्पना
हमें कभी नहीं है भूलना
स्वप्न को साकार करने
दे दिए हैं वचन अपने
शिष्ट, शिक्षित प्रतिभा भरा सर्वांगीण विकास का
यहीं किंचित छुपा हुआ राज है
नेतरहाट विद्यालय हमारा हमको इस पर नाज है
लक्ष्य न ओझल होने पाएँ;
आओ हम सब कदम बढ़ाएँ;
सदा बहती ज्ञान की गंगा
धरा सकल सब ज्ञान की;
मिलती है सीपियाँ यहाँ
हिन्दी, कला, विज्ञान की
आज बना यह विद्या मंदिर
जन–जन का सरताज है
नेतरहाट विद्यालय हमारा हमको इस पर नाज है
मातृभूमि का आशीष लेकर
वचन सभी यह देते हैं
इस साधना क्षेत्र की गरिमा की
प्रतिष्ठा का व्रत लेते हैं
एक यहीं मंतव्य हमारा
एक यहीं आवाज़ है
नेतरहाट विद्यालय हमारा हमको इस पर नाज हैं।

रोहित कुमार
03

अब पेड़ विद्रोह करेंगे

ऋषियों ने पेड़ लगाए थे।
संतान समझ सहलाए थे।
इनकी छाँवों में ही
अपने घर बसाए थे।
लेकिन आज लोग इसे
सिर्फ पैसों से आँकते है।
इस पर कृपाण चला
विदेशों में बाँचते है।
वे समझ नहीं पाते है।
स्वयं को सुखी रखने के लिए,
पेड़ों की लाशों पर
ऊँचे महल बनाते हैं।
इसलिए अब पेड़ विद्रोह करेंगे
औरों से नहीं मोह करेंगे।
सूख जाएँगी इनकी डालियाँ
या वे धरा पर गिर पड़ेंगे।
तब, बादल भी नहीं रोएगा,
मनुष्य हवा बिन सोयेगा।
फिर दाने–दाने का अकाल होगा।
यहीं आगे का काल होगा
इसलिए, आओ प्रण करते है,
जीवन को सुखी रखते है।
अब पेड़ काटने की नहीं,
पेड़ लगाने की बात करते है।

दीपक कुमार
147

कभी सोचा न था.....

जिंदगी के इस मोड़ पर
हर कोई मेरा साथ छोड़ देगा
जिसे हमने हमेशा अपना समझा
वो हमसे यूँ मुँह मोड़ लेगा
कभी सोचा न था!

जिनके साथ हमारी काफी यादें जुड़ी है
जिनके भरोसे हमारी सारी बातें टिकी है
जिनके साथ हमने जिंदगी के हसीं लम्हें जिये है
वो उन बातो उन यादों को यूँ नागवार कर देगा
कभी सोचा न था!

सभी कहते है, शायद सच कहते है कि
हर सुख, दुःख में अपने हमेशा साथ देते हैं
अपनों की खातिर हमेशा दूसरों को मात देते हैं
किन्तु कभी अपने ही हमें यू तनहा छोड़ देंगे!
कभी सोचा न था....

पता नहीं क्यूँ पर फिर भी ये दिल
उनकी बातों का बुरा नहीं मानता
ये कम्बख्त तो बहुत भोला है
भला बुरा में फर्क ही नहीं जानता
इतने गमों को सहने के बाद भी
ये कम्बख्त उन्हे मुआफ़ कर देगा
कभी सोचा न था.....

आज अकेला हो गया हूँ
मैं इस नश्वर संसार में
क्या पता कल क्या हो
संग मेरे भरे बाजार में
मेरी जिन्दगी में भी ये मुकाम आयेगा
कभी सोचा न था।

काश! कोई होता जिसे मैं अपना कह पाता
जिसके साथ मै अपना हर सुख–दुःख बाँट पाता
होता कोई जिसके सहारे, मै ये तनहापन दूर कर पाता
एक भटके रहगुजर औ इन तन्हाईयों के साथ
मेरा मौत से दीदार होगा।
मेरा मौत से दीदार होगा।
कभी सोचा न था...

कुमार संभव

130

आपाधापी

आपाधापी के इस जीवन में....

मैं! एक रोज

ठंडी कोमल बयार के साथ निरूपता के सघन जंगल की ओर बढ़ रहा था जहाँ न चिड़िया की चहचहाहट थी और न ही झरनों के गिरते स्वर निर्वाध गती से मैं बढ़ता चला जा रहा था तत्क्षण्!

मेरी दृष्टि एक असहाय पर पड़ी! जिनके साथ भगवान ने न्याय नहीं किया था।

मुँह और कान से अपंग थी वह, उनकी आँखों से टपकते आँसू देखकर मेरा दिल भर आया।

टपकते आँसू मानो किसी हार के मोती बिखरते हों....

या कमल के फूल से ओंस की बूँद भड़ती हो या हो सकता है दिल के सारे रिश्ते एक–एक कर टूट रहा हो.... कितना दुखद प्रसंग है यह –

हाय, कितने अरमान लिए बैठी होगी वह कितनी इच्छाएँ मन में पाल रखी होगी पर, भगवान की थोड़ी–सी चूक....

पूरी जिन्दगी बदल डाली पता नहीं मुझे क्यूँ बदल डाली

पता नहीं मुझे क्यूँ लगा–

यह आँसू भगवान की चूक की नहीं यह किसी की याद में निकल आया या, समाज के दिये दर्द के मारे हृदय का रक्त पानी बनकर निकल आया नहीं–नहीं ... हो सकता है जिसे देखकर उसे सुकून मिलता था।

शायद! अब वो दुनिया में न रहा हो... काश मैं उनके टपकते आँसू का रहस्य जान पाता...।

राजकुमार राज

26

झारखण्ड

खण्ड–खण्ड हो गयी संस्कृति
खण्डित हो गये वन प्रांत खण्ड
एक खण्ड उसका बना जो
कहलाया वह झारखण्ड।
छिंटक कर छीटे संस्कृति के
कई बूंद गिरे इस भवन में
कई संस्कृतियाँ बनी उनसे
नाम गूँज उठा हर पवन में
संस्कृतियों का संयुक्त रूप यह
जंगल झाड़ों का प्रदेश
हरियाली ही हरियाली है,
दिखे न जाने कितने वेश
इतिहास बयाँ करती है इसकी
अनेक वीरों की अमर गाथा
वीरों का देश बना यह
दूर करने माता की व्यथा
ख्याति का सिरमौर है यह
खनिजों का है सरताज
फिर भी क्यों गरीब रहे यह
पीछे यह है क्यों आज।
संकल्प तो कर लेते हैं सब
कोई संकल्प पूरा करके तो दिखाए
पिछड़े हुए प्रदेश को
आओ मिलकर विकसित बनाएँ।

रौशन कुमार
018

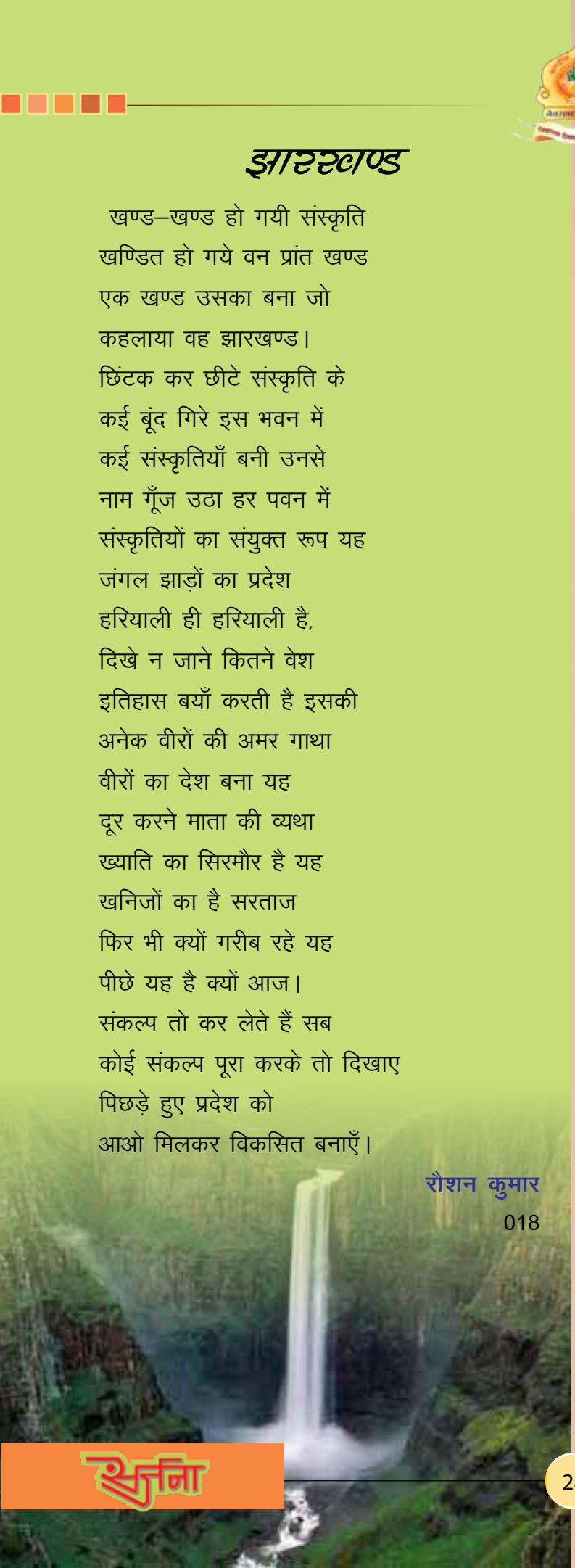

है एक भोली माँ

कौन नहीं जानता उन्हें
हर जुबाँ पर नाम उनका
हर दिल में चाहत उनके लिए
हर वो जिंदगी उनके लिए
जिनकी वह हकदार है
पूछते हैं सभी कौन है वह
कहता हूँ मैं
है एक भोली माँ।
जो प्यार करती है! बेशुमार हमसे
ममता के आँचल में रखती है हमें
हमारी हर नादानी को माफ करती है वह
हर सुख–दुःख में छाया बनकर साथ चलती है वह मेरे
है एक भोली माँ।
ना जाने किस दिल से प्यार करती है वह हमें
हम तो भुला देते हैं उन्हें
पर वह नहीं भुलाती हमें
रिश्ता ऐसा बन जाता है उनसे
चाहें छिपायें, छिपाया जाता नहीं
है एक भोली माँ।
तुम्हारी लोरी का एहसास तो है मुझे
पर क्या करूँ तुम्हें बताने का वक्त नहीं
तुमसे इतना दूर जो आ गया हूँ, कि
तुम्हे अपना हाल बताकर तुम्हें दुःख में देखना मुझे
मंजूर नहीं
है एक भोली माँ।

आतीश कुमार
267

गुरु

जो सही बात सिखलाते हैं,
जो सही मार्ग दिखलाते हैं,
तम को जो दूर भगाते हैं
अंतर की ज्योति जलाते हैं
वे ही तो गुरु कहलाते हैं।

गुरू कारखाने के मालिक हैं
जहाँ महापुरूष तैयार हुए।
संदीपनी विवेकानंद,
अर्जुन और एकलव्य हुए।

जो हमें मनुष्य बनाते हैं
वे ही तो गुरु कहलाते हैं।
उनके भी तो दो आँख, कान
सर एक पैर दो होते हैं

पर ऐसा क्यों होता है कि
बस वे ही गुरु कहलाते हैं।
हम किसी भी कठिन परिस्थिति,
में जब भी कभी फँस जाते हैं।
हम सदा गुरु के सीखों को,
अपने संग में पाते हैं।

यह कारण ही तो है प्रमुख कि,
बस वे ही गुरु कहलाते हैं।
यदि गुरु का मैं गुणगान करूँ
तो जीवन पूरा लग जाए
इसमें भी गुणगान गुरू का
पूर्ण नहीं हो पाएगा।

इस कारण में तो
अब केवल इतना कहना चाहूँगा
जो सच्चरित्र हमें बनाते हैं
वे ही तो गुरु कहलाते हैं।

गोपाल सिंह
370

मेरा गाँव

कल–कल छल–छल नदी किनारे
बसा हुआ है मेरा गाँव
जहाँ खिलें हैं फूलों की कलियाँ
और थिरकते बच्चों के पाँव

कोयल जहाँ है कूक सुनाती
बंजारों को राह दिखाती
भौरों की गुंजार यहाँ पर
प्रेम का है संदेश फैलाते

झन–झन–झन–झन बालाओं के नुपुर
हैं बाल कृष्ण को खूब लुभाते
राजा–रानी की मधुर कहानी
दादा–दादी हैं खूब सुनाते

पीली चादर ओढ़े धरती
एक अजब सा राग सुनाती है
जहाँ खेतों में बैलों की जोड़ी
किसानों का साथ निभाती है

जहाँ हर बैल है हीरा–मोती
और हर किसान झूरी है
नहीं कोई है गया यहाँ पर
नहीं कांजी–हौस जाने की मजबूरी है

दुःख का कोई नाम नहीं
हुर तरफ है सुख की छाँव
जहाँ मनुज–मनुज में भेद नहीं
और थिरकते बच्चों के पाँव
ऐसा ही है मेरा गाँव।

आलोक अमन

गाँव बदला सा लगता है.....

हर कुछ यहाँ अनजाना सा क्यों लगता है,
हर शक्स परेशान सा क्यों लगता है!

चबूतरा पर वही बेल का पेड़, हरा–भरा ठिगना,
मेरे आँगन की तुलसी कुछ बोलने ही वाली है!

इन पेड़ों का दादी से बतियाना रहस्मयी ज्ञान लगता है,
फिर क्यों गाँव का पुराना पीपल बेजुबान लगता है!

दिवाली–दशहरा आज भी संग–संग है,
होली का आज भी अपना रंग है!

रमज़ान तो पर्वो की शान लगता है,
फिर क्यों हर पर्व मुहर्रम का बखान लगता है!

छोटु बड़ा हो गया, वो... वो चन्दर चाचा,
काले से बाल उजले हो गये!

हर चेहरा अपनी पहचान सा लगता है,
फिर क्यों हर शख्स मेहमान सा लगता है!

वो गली मंदिर को जाती है,
और ये... ये तो सेठवा की दूकान!

इ चौक का नीम अभी भी जवान लगता है,
फिर क्यों हर शहर सुनसान सा लगता है!

बिजली आयी है और कहीं–कहीं बल्ब जलता है,
बहुत कोई **LED** और **ANDROID** रखता है!

बाकि गाँव तो आज भी वही है,
पर मुझे हर ओर श्मसान सा क्यों लगता है!

हर कुछ यहाँ अनजाना सा क्यों लगता है,
हर शक्स परेशान सा क्यों लगता है!!!

बंटी कुमार
609

मुक्ति का संकल्प

स्वार्थ सिक्त झूठे आदर्शो से, यह धरती ऊब चुकी
बोझिल मन के अश्रु कणों में, मानवता अब डूब चुकी

बंधक बन बंदूकों के सब, द्वन्द्व प्रेम के हार रहे
मन से मन की दूरी बढ़ती, जीवन ज्योति निहार रहे

जिसके माथे खून चढ़ा है, बात नहीं कुछ सुन सकता
कितना भी कर यत्न कभी, ना डोर प्रीत की बुन सकता

कल कल करती कानन में, कोयल की बोली रूठी है
बेलगाम बढ़ बंदो से डर, गई राह यह झूठी है

जग सुधार का बोझ उठाया, है अनजाने कंधों ने
नर संहार मचा रखा है, राह भटकते बंदों ने

उल्टी राह चले है पागल, ये उनकी मन मर्जी है
चादर ताने उंघ रहा है, शासन की खुद गर्जी है

कुलिस कलंकी कायर कर्मो, से मानवता मरती है।
रक्तिम है यह भूमि घाव से, प्रतिपल रूदन करती है

लाठी के बल पर चलती अपनी–अपनी सरकारें है
इसके दोषी कौन वही जो नौजवान नाकारे हैं

उसने खुद को गिरवी रखा है बेमारी भत्तों पर
जो समूह में ना रह पाया, मधुमक्खी सा छत्तों पर

नवचेतन नवस्वप्न सत्य करने की आज कसम खालें
आओ हम सब मिलकर, धरती के कष्ट मिटा डालें

निखिल कुमार
10

उड़ा परिन्दा

तकदीर बदलने की चाहत में उड़ा परिंदा आसमान में,
और न था कुछ व्याकुल मन में कठिन लक्ष्य के सिवा ध्यान में।

बचपन ने तो खूब हँसाया, पर दो पल का मेहमान रहा,
बाकी है इक कठिन परीक्षा इस बात से भी अन्जान रहा।

पापा की ऊँगली को थामे, जिसने देखी दुनियाँ सारी,
कंधों का बोझ समझने की, अब आयी भी जिसकी बारी।
थम जायेगी धमा–चौकड़ी उन छोटे गलियारों में,
होगी अब तकलीफ भी जो ना होती थी अक्सर हारों में।

टुकड़े दो पन्ने के अब ना, बन पाएँगे कोई कश्ती,
होगी बस आहट बूँदों की, रह जाएगी सूनी बस्ती।

रितेश कुमार पाठक,
स्टोर कीपर
भौतिकी विभाग

ऐ सुख

तू कहाँ मिलता है, क्या कोई तेरा स्थायी पता है,
क्यूँ वन बैठा है अंजाना, आखिर क्या है तेरा ठिकाना,
कहाँ–कहाँ ढूँढ़ा तुझको, पर तू नहीं मिला मुझको,
ढूँढ़ा ऊँचे मकानों में, बड़ी–बड़ी दुकानों में,
स्वादिष्ट पकवानों में, चोटी के धनवानों में,
वो भी तुझको तुझको ढूँढ़ रहे थे, बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे,
क्या आपको कुछ पता है! ये सुख आखिर रहता कहाँ है,
मेरे पास तो दुःख का पता था, जो सुबह–शाम अक्सर मिलता का,
परेशान हो के रपट लिखवाई, पर ये कोशिश भी काम न आई,
उम्र अब ढलान पर है, हौसले थकान पे हैं,
हाँ, उसकी तस्वीर है मेरे पास, अब भी बची हुई है आस
मैं भी हार नहीं मानूगाँ, सुख के रहस्य को जानूँगा,
बचपन में मिला करता था, मेरे साथ रहा करता था,
पर जब से मैं बड़ा हो गया, मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया,
मैं फिर भी नहीं हुआ हताश, जारी रखी उसकी तलाश,
एक दिन जब आवाज ये आई, क्या मुझको ढूँढ रहा है भाई,
मैं तेरे अंदर छुपा हुआ हूँ, तेरे ही घर में बसा हुआ हूँ,
मेरा नहीं है कुछ भी मोल, सिक्कों में मुझको न तोल,
मैं बच्चों की मुस्कान में हूँ, हारमोनियम की तानों में हूँ,
पत्नी की खुशी में हूँ, परिवार के संग जीने में हूँ,
माता–पिता के आशीर्वाद में, रसोइघर के महाप्रसाद में,
बच्चों की सफलता में हूँ, माँ की निश्चल ममता में हूँ,
हर पल तेरे संग रहता हूँ और अक्सर तुझसे कहता हूँ,
मैं तो हूँ बस एक एहसास, बंद कर दे मेरी तलाश;
जो मिला उसी में संतोष कर, आज को जी ले, कल की न सोच,
कल के लिए उसी में संतोष कर, आज को जी ले, कल की न सोच,
कल के लिए आज को न खोना, मेरे लिए कभी दुःखी न होना।
मेरे लिए कभी दुःखी न होना।

मनोज कुमार
प्रशिक्षक

एक और रात.....

एक और रात थी न तुम साथ थी ।।टेक।।
मैं ही था औ तुम्हारी साँस थी
दिल तो मैंने ही तोड़ा
फिर भी एक आस थी
दूर तो मैं था, नहीं तुम पास थी।
एक .....
गंध थी पर फूल न खिले
मिलकर भी हम न मिले
कहता तो था सपनों में रोज
आज मेरे होठ न हिले
होठो पे आज न वो बात थी।
एक .....
जब तुम पास थी तो दर्द न था
ठण्ड तो थी पर सर्द न था
तुम्हारा कसूर क्या था? न जान सका
इश्क को तेरे न पहचान सका
आज मैं हूँ, कल तुम उदास थी।
एक .....
अपना हाल किससे बताऊँ?
तुम्हारा प्यार किससे जताऊँ?
पास होकर भी सब दूर लगते है।
दर्द–ए–दिल किससे सुनाऊँ,
मेरी आँखों में तुम्हारी आस थी।
एक .....
तुम्हे भुला दिया, ये मेरा कसूर था
मन में तुम थी, मैं मजबूर था
करीब होकर भी दूर थे, शायद
भगवान को यही मंजूर था
ये मेरे अंत की शुरुआत थी।
एक .....
अब रातें यूं हीं कटती हैं।
हँसी निकलने से डरती है।
जिंदगी का सफर, नहीं पता
हर पल मेरी साँसे मरती है
तुम नहीं पर पायल की झंकार थी।
एक .....
तुमसे बिछुड़ कर न जी सकूँगा
जहर भी पीना चाहूँ, न पी सकूँगा
हाँ! पता है मेरी गलती मुझे
इस टूटे दिल को न सी सकूँगा
तुम बिन एक और बरसात थी।
एक .....
एक रात कही चल दिया
लोग झूमे मैं भी मचल दिया
मैं शराबी था, शराब के
नशे में वहीं पिफसल गया
वो तुम्हारी ही बारात थी।
एक .....
तुम खुश तो हो! इतना बता दो
बस एक बार चेहरा दिखा दो
जी तो नहीं सका चैन से
कम से कम चैन से मरना सिखा दो
मेरी साँसें तुम्हें सौगात थी।
एक .....

- मोनू कुमार
156

स्वयं से स्वयं तक

प्रातः बेला! बहुत मौज मस्ती से चला आ रहा हूँ–जंगल–पहाड़–नदी–नाले सबको लाँघता हुआ। और, उसपर अपनी ही गाड़ी से यात्रा, मन बड़ा प्रसन्न है। आराम से यात्रा सम्पन्न हो रही है। विशुनपुर के पहले या उसके आस–पास की घाटी, बहुत ही मनोरम है। बगल के सीट पर मेरी धर्म पत्नी बैठी हैं और अचानक मैं स्वयं से ही बात करने लगता हूँ।

कोई अंदर से पूछ बैठा, स्वामी कलानंद-

- सरस्वती तुम क्या कर रहे हो?
- मैं गाड़ी चला रहा हूँ।
- तुम गाड़ी चला रहे हो?
- हाँ! हाँ! मैं गाड़ी चला रहा हूँ– बिल्कुल होशपूर्वक जगे हुए गाड़ी चला रहा हूँ।
- कैसे चलाते हो गाड़ी?
- स्टेयरिंग पकड़े हुए हैं और ठाठ से गाड़ी चल रही है।
- अपनी गाड़ी को कैसे कंट्रोल करते हो?
- स्टेयरिंग से, ब्रेक, एक्सलेटर और क्लच पर पैर रखकर।
- अच्छी बात है!
- क्या तुम गाड़ी हो?
- बिल्कुल नही।
- यह बताओ, क्या तुम गाड़ी के हर पार्ट–पुर्जे को कंट्रोल करते हो।
- नहीं साहेब, मैं तो सिर्फ स्टेयरिंग पकड़ता हूँ। बाकी पैर से क्लच, ब्रेक और एक्सलेटर को नियंत्रित करता हूँ।
- यानि तुम गाड़ी नहीं हो।
- बिल्कुल नहीं, मैं तो सिपर्फ चालक हूँ।
- बिल्कुल ठीक कहा, तुम्हारी तरह मैं भी एक चालक हूँ।
- पर तुम हो कौन
- मैं शुद्ध चेतना हूँ, तुम मुझे ईश्वर कह लो, ब्रह्म कह लो, ऊर्जा कह लो, अल्ला या गॉड कह लो, जो तुम्हारी मर्जी।
- तब तुम चालक कैसे हो?
- तुम्हारा शरीर ही मेरी गाड़ी है, उसमें मैं बैठा हूँ। तुम्हारे दोनों भवों के बीच जो जगह है जिसे तुम आज्ञा–चक्र या शिव–नेत्र कह लो, या विज्ञान की भाषा में पिनियल ग्लैण्ड कह सकते हो, वहीं मेरा ड्राइविंग सीट और स्टेयरिंग है, जहाँ से मैं पूरी गाड़ी चलाता हूँ। यहीं बैठकर गाड़ी का मैं दिशा निर्देश करता हूँ।
- तुम्हारी गाड़ी का ब्रेक कहाँ है? एक्सलेटर कहाँ है? क्लच कहाँ है?
- अरे–अरे! वह तो मैं बताना ही भूल गया, शरीर के सारे चक्र गियर है, मन एक्सलेटर है, मूलाधार, स्वाधिष्ठान एवं मणिपुर चक्र ब्रेक भी है। मणिपुर चक्र के पास ही पेट्रोल टंकी जुड़ा है। थोड़ा प्रयास करो तो अनुभव में उतरने लगेगा। देखा! अनुभव में बात आ रही है न!
- हाँ, हाँ अनुभूत हो रही है।
- अब यह बताओ, तुम्हारे गाड़ी जब पंचर होती या खराबी आती है, तब इसे किसी मिस्त्री के पास ले जाते हो।
- हाँ, बिल्कुल ले जाता हूँ।
- मेरी भी अपनी गाड़ी कभी–कभी खराब हो जाती है और उसे किसी डॉक्टर मिस्त्री की जरूरत पड़ जाती है। अच्छा स्वामी कलानंद सरस्वती, तुम्हारी यह गाड़ी बिल्कुल खराब हो जाए या खत्म हो जाए या जब किसी काम की न रहे, तो भी क्या तुम इसे चला पाओगे
- बिल्कुल नहीं साहेब।
- तब क्या करोगे?
- इस गाड़ी को छोड़ दूँगा और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूसरी गाड़ी की तलाश करूँगा।
- मैं भी यही करता हूँ। जब देख लेता हूँ कि यह शरीर रूपी गाड़ी किसी काम की नही है तो मैं मोह नहीं करता, तुरंत इस गाड़ी को छोड़कर दूसरी गाड़ी की तलाश में निकल पड़ता हूँ या कुछ दिन अपने घर जाकर विश्राम करता हूँ। मेरी बात समझ रहे हो न यही शरीर रूपी गाड़ी बदलने की घटना मृत्यु है। हरदम याद रखना। गाड़ी, गाड़ी है और ड्राइवर, ड्राइवर है। यही ड्राइवर चेतना है। जब तक चेतना है गाड़ी चल रही है। चेतना छोड़ दे तो गाड़ी निर्जीव हो जाती है।

ठीक है मस्ती में जाते जाओ, गाते जाओ .....

कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो। नाम लेते चलो, काम करते चलो।।

- राजेन्द्र प्रसाद गुप्त

साधन बने साध्य नहीं

पंद्रह के - पंद्रह
पंद्रह दूनी तीस
तियो पैंतालिस
चौके साठ
दाम पचहत्तर
छक्की नब्बे .....

कोई एक, एक तरफ खड़ा हो आगे बोलता जाता फिर पीछे–पीछे अन्य सभी। हमने तो भाई इसी विधि से पहाड़े याद किए थे। अमूमन सभी को पच्चीस–तीस तक के पहाड़े याद रहते थे। वाह! क्या मनोरंजक तरीका था याद करने का।

अभी कुछ दिनों पूर्व एक सर्वेक्षण रिपोर्ट में कहा गया कि भारतीय छात्रों की गणितीय क्षमता इन दिनों पूर्व की तुलना में कम हो गई है।

जिस तरह अन्य क्षेत्रों में डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल बढ़ा है उसी तरह मनोरंजन एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका उपयोग बढ़ता ही जा रहा है। निश्चित रूप से सूचना एंव संचार के इन नए तकनीकों से हम काफी लाभन्वित हो रहे है। मानव जीवन में एक अजीब ऊर्जा आनंद, ताजगी एवं गति का एहसास हो रहा है। तकनीक के इस्तेमाल से सीखना और सिखना एक आनंददायक एहसास बन चुका है। नयी तकनीक की देन दृश्य–श्रव्य माध्यमों से बच्चे काफी आसानी से विषय की ओर आकर्षित होते है एवं समझने की क्षमता भी काफी बढ़ जाती है।

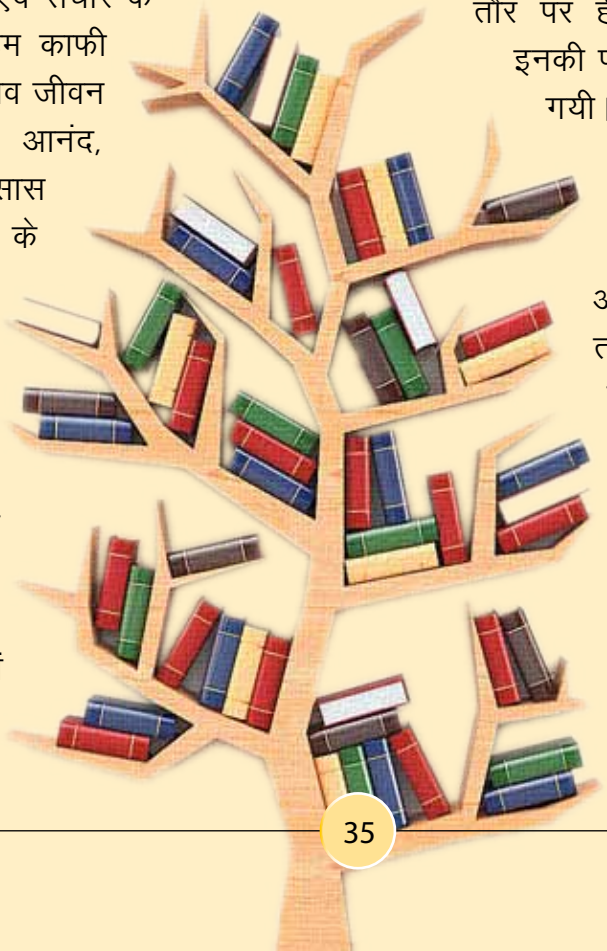

आज की कक्षाएँ काफी स्मार्ट हो चुकी है।

दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय, महाविद्यालय तक छात्रों की पहुँच इनके द्वारा काफी आसान हो गयी है। तरह–तरह की शिक्षण सामग्री, इनसे जुड़ी नवीनतम जानकारी आपके एक क्लिक के इंतजार में हर पल तैयार है। पढ़ने के लिए न तो भारी–भरकम पुस्तकों ग्रंथों की जरूरत है और न ही पुस्तकालय की।

सब कुछ बटन दबाते ही आपके स्क्रीन पर उपलब्ध है और तो और इस तकनीक से पर्यावरण को कितना लाभ है, सोचा है आपने? कितने वृक्ष कट कर कागज बनने से बच गए।

अब और क्या–क्या उपलब्धियाँ है, क्या–क्या फायदे हैं इस नई तकनीक के, मुझे बताने की आवयश्कता नहीं है, सभी मुझसे कुछ ज्यादा ही जानकारी रखते होंगे।

प्रारंभ में यह कुछ खास लोगों तक व्यक्तिगत तौर पर ही उपलब्ध था। फिर धीरे–धीरे इनकी पहुँच जन सामान्य तक होती चली गयी। मोबाइल कम्प्युटर लौपटॉप, टैब जैसे साधन अब हर आय वर्ग के लोगों के पास उपलब्ध है। मनोरंजन के क्षेत्र में तो क्रांति सी आ गयी है। विशेषकर संगीत प्रेमी तो लोगों के सर चढ़कर बोल रहा है। हर आम या खास कान में इअर फोन लगाए संगीत सुनते दिखाई दे जाते हैं।

Organization for Economic Co-Operation and Development (OECD) का एक अध्ययन रिपोर्ट चौकाने वाला एवं विचारणीय है। रिपोर्ट कहता

है कि शिक्षा में तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न कर सकता है। इस संस्था के शिक्षा निदेशक एंड्रियास श्लेचर का कहना है कि स्कूल में इंटरनेट का खूब उपयोग करने वाले छात्र उन छात्रों से बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं जो इनका कम इस्तेमाल करते हैं। यह निष्कर्ष एक कोरी कल्पना नहीं वरन् एक व्यापक शोध–अध्ययन का नतीजा है।

छात्रों के मूल्यांकन के आधार पर यह कहा गया है कि बिना समुचित नियंत्रण के बच्चों को उपलब्ध करायी जा रही डिजिटल सुविधाएँ सूचना के बोझ को बढ़ाने और नकल करने जैसी प्रवृत्तियों को बढ़ाती है। OECD के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि 96 प्रतिशत बच्चे घर पर कम्प्यूटर का इस्तेमाल करते थे, 72 प्रतिशत स्कूल में इनका इस्तेमाल करते थे। कुछ देशों में इनके इस्तेमाल का औसत 50 प्रतिशत से भी कम था।

इन छात्रों के प्रदर्शन का अध्ययन करने पर पाया गया कि जो छात्र इन संसाधनों का इस्तेमाल सामान्य तौर पे करते हैं, उनका प्रदर्शन उनके तुलना में बेहतर था जो इनका उपयोग बहुत कम करते हैं। परन्तु जो छात्र इसका उपयोग ज्यादा करते है उनका प्रदर्शन अधिक खराब था। इनका ज्यादा इस्तेमाल करने वाले छात्र, पढ़ने, सीखने, गणित, विज्ञान आदि क्षेत्रों में बेहतर नहीं थे और वे अकेलेपन और असुरक्षा की भावना से ग्रसित थे। अनकी कार्यशैली में तारतम्यता का अभाव पाया गया, आत्मविश्वास के स्थान पर निर्भरता पाई गयी। कैस्परस्की लैब द्वारा किए गए एक शोध मे पाया गया कि करीब 73 प्रतिशत युवा डिजिटल लत के शिकार हैं जो किसी न किसी इंटरनेट प्लेटफार्म से खुद को जोड़े रखते हैं। नतीजतन कई मानसिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है जैसे

- फोमो (FOMO) - Feat of Missing out
  - यानि सोशल मीडिया पर अकेले हो जाने का डर।
- फैड (FAD) - Face book Addiction Disorder इस मानसिक बीमारी के तहत बीमार लगातार अपनी तस्वीर पोस्ट करता है और अन्य के पोस्ट का इंतजार करता है।
- याद्दाश्त में कमी।
- इअरफोन के कारण दुर्घटनाओं की लम्बी फेहरिस्त बन चुकी है।
- सेल्फी की लत।
- वास्तविक दुनिया को छोड़कर कल्पना लोक में अनवरत विचरण जीवन के प्रति उदासीनता को जन्म देता है।

इस इंटरनेट यानी अंतर्जाल के जाल में मानव उलझता चला जा रहा है। अन्य सर्वेक्षण एवं आँकड़े तो और भी भयावह तस्वीर पेश करते हैं। आज मानव सभ्यता विशेषकर युवा वर्ग तेजी से इस व्यसन में डूबता जा रहा है। चीन के शंघाई मेंटल हेल्थ सेन्टर के एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इंटरनेट की लत शराब और कोकीन की लत से होने वाली स्नायविक बदलाव पैदा कर सकती है। कई देशों में अब डिजिटल डिटोक्स यानी डिजिटल नशामुक्ति केन्द्र खोले जा रहे हैं।

निःसन्देह ये उच्च तकनीक हमारे लिये बड़े काम के हैं। हम कई क्षेत्रों में इनसे लाभान्वित हो रहे हैं नित नई ऊँचाइयों को हम इनकी बदौलत प्राप्त करते जा रहे हैं।

परंतु सावधान।

हमें विचार करना होगा फलाफल पर। मानव और मापदण्ड तय करने ही होंगे। ताकि हमारी युवा पीढ़ी इस अंतरजाल के मकड़जाल में न उलझ पाए। इनके विवेकपूर्ण, संतुलित एवं समुचित उपयोग के लिये जन जागरूकता पैदा करना वक्त की माँग है।

रवि प्रकाश सिंह
शिक्षक
रसायन शास्त्र विभाग

राष्ट्र के चरित्र निर्माण में

नेतरहाट विद्यालय का योगदान

नेतरहाट विद्यालय के परिकल्पक महानुभावों में से एक स्व. एफ जी पीयर्स का कहना था कि एक अच्छे विद्यापीठ के लिए तीन तत्त्व आवश्यक हैः ज्ञानवान शिक्षक, जिज्ञासु विद्यार्थी एवं एक पेड़। सौभाग्य से नेतरहाट विद्यालय में इन तीनों तत्त्वों की प्रचुरता रही है और वह भी उत्कृष्ट कोटि की। गुरुकुल की गुरु–शिष्य परंपरा का आधुनिक परिसंस्करण नेतरहाट विद्यालय हमारे समक्ष विद्यमान है। शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को समाज के लिए उत्तरदायी और उपयोगी सदस्य बनने की क्षमता प्रदान करना हैं। नेतरहाट विद्यालय का सृजन अनगढ़ हीरों को तराशने के लिए हुआ है। समाज के विभिन्न परिवेशों से आए कुसुमों को विकास का पर्याप्त अवसर प्राप्त कराने के उद्देश्य से नेतरहाट जीवन में विविध क्रिया–कलापों के माध्यम से ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण का विकास होता है। इससे देश के भावी नागरिकों को नयी सुदृढ़ दिशा मिलती है।

गुरूकुल का स्थापत्य नेतरहाट विद्यालय के मूल में है। आधुनिक भारत की धारा अपनी लय में इसे सिंचित–पोषित करती रही है। शिक्षाविदों द्वारा उत्तर–आधुनिक भावभूमि पर प्रकृति की छाया में विद्यालय की परवरिश की गयी है। राष्ट्र निर्माण ही इस विद्यालय की स्थापना का मूल उद्देश्य रहा हैं। इसकी स्थापना पूर्व की बहस में भाग लेते हुए स्व. सरयू प्रसाद सिंह जी ने अपने मूल्यवान शब्दों में कहा था–'यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि शिक्षा की दुनिया में हम सबसे पीछे हैं। किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए सबसे अधिक जरूरत मानव–संसाधन को शिक्षित करके, उनको सभ्य बनाने की हैं। हमारा राष्ट्र एक विकासशील राष्ट्र है आधुनिक काल में विकसित देशों ने अपनी शिक्षण पद्धति को बदलकर उद्योगों एवं व्यापार के क्षेत्र में काफी उन्नति की है। हमें भी शिक्षा में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है जिससे हमारा राष्ट्र भी एक विकसित राष्ट्र कहला सके। इन महान युगद्रष्टाओं ने स्वप्न देखा था एक ऐसे संस्थान का जहाँ गरीब प्रतिभाशाली छात्रों को वर्ग–भेद, जाति भेद, संप्रदाय–भेद से ऊपर उठकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाए तथा सच्चे जनतांत्रिक मूल्यों के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें तैयार किया जाए ताकि हमारे देश का भविष्य गौरवान्वित महसूस कर सके।

नेतरहाट उस दर्शन का नाम है जो अपनी हर पीढ़ी के छात्रों को ''अत्तदीपा विहरथ'' जैसे सूत्र वाक्य से जोड़कर रखता है। आज भी नेतरहाट में धर्म, जाति, वर्ग अथवा भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर किसी भी तरह की विषमता परिलक्षित नहीं होती है, जो धर्मनिरपेक्ष आधुनिक भारतवर्ष की नींव को मजबूत बनाता है। नेतरहाट के रूप में ऐसे विशिष्ट विद्यालय का निर्माण इस उद्देश्य के साथ हुआ। यह विद्यालय उन बच्चों के लिए था जो धनाढ्य वर्ग के न हो परन्तु उनके चेहरे पर मेधा की वह चमक हो जो दूसरों को प्रकाशित कर सके। उन बच्चों के लिए इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी। नेतरहाट विद्यालय के निर्माण के साथ जो इच्छाएँ स्व. एफ. पियर्स तथा अन्य महानुभावों के मन में दौड़ रही थी। वह काल–क्रम में फलीभूत हुई। प्राचीन काल में ऋषि–मुनि विजन एकांत प्रांतों में अपने आश्रम बनाते थे। नेतरहाट के शिक्षकों ने भी ऋषियों की तरह यहाँ आकर विद्या की ज्योति जलायी जो अब भी प्रदीप्त है। सच्चा गुरू शिष्य का रूपांतरण कर देता है। सौभाग्यवश नेतरहाट विद्यालय को ऐसे शिक्षक मिले जिन्होने राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को साकार करने में अपना जीवन अर्पित कर दिया। इस विद्यालय में शिक्षक केवल पढ़ाते नहीं है अपितु जीवन के हर क्षेत्रों में छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं। यहाँ छात्रों को स्वावलंबी, आत्मनिर्भर रहना सिखाया जाता है। नेतरहाट विद्यालय की दिनचर्या ऐसी रखी गयी जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके।

किसी भी कार्य को करने के लिए तन व मन दोनों की आवश्यकता होती है, जिसके कारण हम कोई भी कार्य सफलतापूर्वक कर पाते है। ध्यातव्य है कि राष्ट्र–निर्माण केवल विराट और महान कार्यो से ही नहीं होता। एक सफाई कर्मी अपने हिस्से का कार्य कर राष्ट्र की प्रगति में अपने हिस्से का योगदान देता है नेतरहाट में उन सभी कार्यो का सम्मान करते हुए उन कार्यो को करने वाले कार्यकर्ताओं को भी 'जी' लगाकर बुलाया जाता है यथा–धोबीजी, नाईजी आदि।

विभिन्न कला–कौशलों में प्रवीणता प्राप्त कर नेतरहाट के छात्रों को सर्वांगीण विकास हेतु प्रेरित किया जाता है जिससे वे अपने भीतर निहित शक्तियों को जगा सके। अपने जीवन में अच्छाई को अंगीकार कर सके। नेतरहाट अपने छात्रों को आजीवन प्रगतिशील रहना सिखाता है अगर पूरे राष्ट्र में इन नैतिक प्रतिमानों का विकास हो तो संस्कृति की सूखी डाली, लहलहा उठेगी और मनुष्य उस सत्य के लिए राह पा सकेगा जिसकी ओर संकेत करते हुए कवि चण्डीदास ने कहा था–'साबार ऊपर मानुष सत्य ताहार ऊपर नाहिं''।

राष्ट्र का निर्माण युवकों के हाथ में होता हैं। इन युवकों की जैसी शिक्षा होगी, राष्ट्र का भविष्य भी वैसा ही बनेगा। शिक्षा–प्रणाली पर ही किसी समाज का उत्थान–पतन उन्नति–अवनति, धर्म–अधर्म निर्भर करता है। शिक्षा को धर्म, नैतिकता, सत्य प्रेम और शांति से जोड़कर जीवन का सही विकास किया जा सकता है। एक संत का कथन है सत्य मेरा–प्रचार है, धर्म मेरा आचार है, शांति मेरा स्वभाव है लोग ध नाढ़य वर्ग के होते है वे तो अपना जीवन–निर्वाह अन्य विद्यालयों के माध्यम से कर लेते है। निर्धन वर्ग के लोगों के लिए यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती। ऐसे दलित कुसुमों के लिए नेतरहाट विद्यालय एक वरदान है अगर किसी पुष्प का सही उपयोग न हुआ तो उसका सारा जीवन व्यर्थ हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जब एक मेधावान बच्चा जो अपनी योग्यता का प्रदर्शन नहीं कर पाता है तो तो उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जब एक मेधावान बच्चा जो अपनी योग्यता का प्रदर्शन नहीं कर पाता है तो उसका जीवन व्यर्थ (नीरस) है। इसलिए ऐसे बच्चे का चयन कर यह विद्यालय उसको जीवन के सच्चे मार्ग पर अग्रसर करता है जिससे उसका जीवन संवर जाता है तथा वह दूसरे कई जीवन को सँवारने का माध्यम बनता है। इस प्रकार सुयोग्य नागरिकों की संख्या बढ़ने से एक चरित्रवान राष्ट्र का निर्माण होता है। इस उद्देश्य की ज्योति के लिए नेतरहाट विद्यालय आज भी कर्म–पथ पर बढ़ा जा रहा है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अपने में दिव्य आकांक्षाओं एवं ऐसे ही महान उद्देश्यों को लेकर चलने वाला नेतरहाट विद्यालय समाज एवं राष्ट्र निर्माण की मजबूत कड़ी है। आशा है आने वाले हजारों वर्षो तक यह ज्योति पुंज अपने प्रकाश से समाज का पथ आलोकित करेगा एवं अपने होनहार ध्वजवाहकों के जरिए संस्कृति को नयी दिशा देगा एवं सभ्यता की एक मिसाल कायम करेगा। सहस्त्राब्दियों बाद भी अपनी गरिमा–परंपरा–उपलब्धियों की कीर्ति–पताका लहराता रहेगा।

अतुल कुमार
129

हीरक जयंती: एक प्रतिवेदन

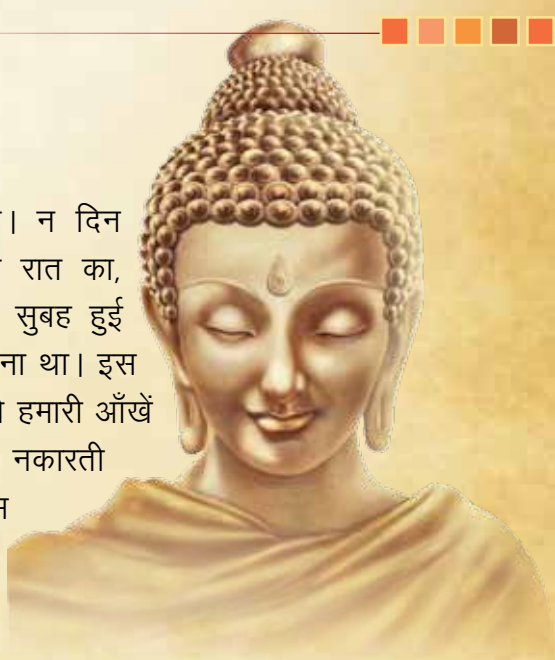

समय के साथ–साथ अनेक कृतियों का निर्माण होता है और अनेकों का विनाश हो जाता है। निर्माण के वर्तमान होते हैं और विनाशों को इतिहास के पन्नों पर ढूँढा जा सकता है। पर जो कृति अपने अतीत को लाँघकर वर्तमान में प्रवेश करती है और पुनः अपना एक स्वर्णिम अतीत बनाने को तत्पर रहती है वही कृति अमरत्व को प्राप्त करती है। इसी पाथेय पर अग्रसरित है हमारा गरिमामंडित आवासीय विद्यालय नेतरहाट।

सूरज की आड़ी–तिरछी किरणें देवद्रुम की सघन छाया से छनकर नेतरहाट की वादी को अपनी रक्तिम आभा से उज्ज्वलित करती प्रतीत होती है। प्रतिष्ठित नेतरहाट विद्यालय का यहाँ होना अपने आप में अनूठा है। ''अत्तदीपा विहरथ'' के महामंत्र को साकार करता यह विद्यालय ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्चबरानिबोधक'' का भी संदेश देता है। ऐसे ही महामंत्र और संदेशों के कारण नेतरहाट पठार की उबड़–खाबड़ भूमि न जाने कितने मनीषियों, महात्माओं ज्ञानियों की कर्मभूमि व रंगभूमि रह चुकी है यह कालजयी शैक्षणिक संस्थान। यह विद्यालय अपने 60वीं पड़ाव को पार कर चुका है और अब निरन्तर गति शील है।

2014 को विद्यालय ने अपनी 60वीं वर्षगाँठ ''हीरक जयंती मनायी। जिस तरह किसी घर में दुल्हन के आने के 6 माह पूर्व ही घर अपना रंगरूप बदलने लगता है उसी तरह यह पठार भी इस अवसर पर अपना रंगरूप बदलने लगी थी। चारों ओर उत्साह एवं उमंग का माहौल था। सब एक–दूसरे से पूछते–''हीरक'' में क्या–क्या हो रहा है? और एक हम थे। कि बिना बताए मन को संतुष्टि ही नहीं मिलती। होटलों और लॉजों को आने वाले अतिथि 2–3 माह पूर्व ही सुरक्षित करा चुके थे। इन सबों के बीच आश्रमों एवं सड़कों की मरम्मत इस माहौल का पुख्ता सबूत था कि वास्तव में यह पर्व महान ही होगा। समस्त विद्यालय परिवार इंतजार में था और महोत्सव की उल्टी गिनती ही कर रहा था। छात्रों की ऊर्जा, उमंग, उत्साह एवं मेहनत अपनी पराकाष्ठा पर थी। न दिन का ख्याल था न रात का, बस एक बार जो सुबह हुई तो फिर थकना मना था। इस क्रम में कभी–कभी हमारी आँखें विश्वास करने से नकारती थी कि जिस कच्ची सड़कों से हम छात्र देर रात गुजरे वह सुबह–सुबह एकाएक पक्की...!! समय के तो मानो पर लग गए हो, 9, 10, 11 नवम्बर अचानक दिनांक पत्री से गायब। अब बारी थी 12 नवम्बर की जिसमें सारे कार्यक्रमों को अंतिम स्पर्श देते हुए प्राचार्य के समक्ष प्रस्तुत करना था। प्रस्तुतिकरण के दरम्यान सूर्य कब अस्त हो गया पता ही नहीं चला। अब इंतजार था अगली सुबह का। समस्त विद्यालय परिवार इस महापर्व को यादगार बनाने के लिए तैयार था और आखिर वह दिन आ ही गया जिसका हर किसी को बेसब्री से इंतजार था। आज सूर्य भी महापर्व में सरीक होने के लिए अन्य दिनों की अपेक्षा कुछ पहले ही निकल आया। शनैः–शनैः चमचामाती सड़कों पर अतिथियों एवं नोबा बन्धुओं की गाड़ियाँ सज गयी। इन सबों के बीच हीरक जयंती समारोह के मुख्य पंडाल की भव्यता देखते ही बनती थी। दर्शक दीर्घा दर्शकों से भर चुकी थी, सबकी निगाहें स्टेज पर टिकी हुई थी और इसी बीच तालियों की गड़गड़ाहट के साथ हमारे विद्यालय के भूतपूर्व शिक्षक श्री एच.के.पी. सिन्हा के द्वारा दीप जलाकर हीरक जयंती समारोह का शुभारंभ किया गया। यह द्योतक है नेतरहाट विद्यालय में गुरू की महिमा का, गुरु के प्रति सम्मान का। तत्पश्चात् संगीत मंडली ने समस्त आगत अतिथियों का स्वागत अपने सुरमयी तरीके से किया। समारोह में डूबे तब, जब समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भगत एवं अन्य आगत भूतपूर्व शिक्षकों एवं नोबा

बन्धुओं ने हमें अपने भाषण एवं अनुभवों से सराबोर किया। इस प्रकार उद्घाटन समारोह की समाप्ति हुई। अब बारी थी शाम की। अंधेरे की चादर से नीलाम्बर ढकने ही वाला था, चीड़ तरूओं पर क्रीड़ा करने वाली शरदकी संध्या में ''Bishop's Candle Sinh'' नामक अंग्रेजी नाटक का मंचन सॅम्मेलन भवन में हुआ। पात्र एवं मंच सज्जा, नाटक मंचन आदि सभी उच्च कोटि के थे। कहानी ने भावविभोर होने पर मजबूर कर दी थी। कहानी में विशॉप मुख्य पात्र था। उसने एक समाज से नकारे इंसान को आश्रय दिया था, इस आशा में कि शायद विशॉप उसे सही मार्ग दिखा सके। परन्तु इंसान विशॉप को धोखा देकर चला जाता है। सबों ने नाटक को सराहा और प्रस्थान किया पंडाल की ओर जहाँ एक जीवित, ऐतिहासिक एवं अनोखी परम्परा कविता अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन होना था। करीब रात्री 8:00 बजे प्रतियोगिता शुरू हुई, जिसमें उर्वशी, सीता, मधुशला कवित्र सवैया और हास्य रस की कविताओं ने लोगों का खूब मनोरंजन किया। सीता के पाठ ने लोगों को आत्मचिंतन करने पर मजबूर कर दिया वहीं दूसरी ओर 'मुश्किल है अपना मेल प्रिये' ने लोगों को हँसते–हँसते कुर्सी छोड़ने पर मजबूर कर दिया। जी तो चाहता था कि साहित्य की यह लहर यूँ ही चलती रहे पर समय को कौन पकड़ सकता है। प्रतियोगिता इतनी उत्कृष्ट और कड़ी थी कि हम दर्शक छात्र तो हक्का–बक्का थे कि आखिर कौन सा दल विजयी होगा.....? 'दिनकर' अथवा बच्चन' धराना। निर्णायक मंडली के सदस्यों ने बड़ी मशक्कत कर 'दिनकर' धराने को विजयी घोषित किया। अब तक निशा संध्या पर भारी हो चुकी थी। हम छात्रों ने हैरान होकर देखा असमान जैसे उल्टा पड़ा और सारे तारे बिखर कर मुख्य भवन के नीचे टिमटिमा रहे थे और सितारों के गुच्छे रोशनियों की एक झालर सी बना रहे थे, और इनके बीच चाँद की चाँदनी फीकी पड़ रही थी। धीरे–धीरे 13 नवम्बर भी दिनांक पत्री से गायब हो गया।

बारी आई उस दिन की जिसकी शाम में सन 1954 ई० को उस विद्यालय की स्थापना सरस्वती, लक्ष्मी व पार्वती के त्रिक का समायोजन है। वह दिन था 14 नवम्बर अर्थात् बाल दिवस। बाल दिवस बच्चों का होता है, यह बात स्पष्टतः 'ओवल' पर झलक रही थी। पठार के सारे छोटे–छोटे बच्चे ऐतिहासिक मैदान ओवल पर उपस्थित थे। कई कार्यक्रमों का आयोजन हुआ दौड़ के साथ–साथ पठारवासियों को इस अवसर पर कपड़े भी दान में दिये गए, और साथ ही नोबा बंधु, शिक्षक और अभिवावक के बीच सम्मेलन में विचारगोष्ठी का आयोजन हुआ। यह तो मात्र 14 नवम्बर की एक झलक थी; करूण साँझ तो अभी बाकी ही थी...।

पक्षियों का शांत होता कलरव समूह अपने–अपने नीड़ की ओर प्रस्थान कर रहे थे वहीं दूसरी ओर पठारवासी अपने घरों को छोड़ पंडाल की ओर आ रहे थे। देखते ही देखते पंडाल में पैर रखने तक की जगह न रही। इसके बावजूद भी पंडाल में चू तक नहीं हो रहा था। मानो करूण संध्या की समां बंध चुकी हो। इसी बीच शंख की पवित्र ध्वनि के साथ 'कफ़न' का पर्दा खुला। 'कफ़न' की कहानी कालजयी लेखक, कलम के मज़दूर प्रेमचंद्र द्वारा रचित है। इसका नाट्य रूपांतरण भूतपूर्व शिक्षक स्व. सहदेव प्रसाद सिंह देव (हिन्दी विभाग) ने किया है।

नाटक का मंचन कुछ इस कदर हुआ कि लोग बीच में ताली बजाना ही भूल गए। हर कोई घीसू की दीनता पर सोचने के लिए मजबूर हो गया था। सबों की हँसी मानों 'कफ़न' अपने साथ ले गया हो। सारे दर्शक किं कर्तव्यविमूढ़ हो गये थे। अचानक पुनः पर्दा खुलने के साथ–साथ संगीत की लहर प्रस्फुटित हुई जिसने दर्शकों का मानसिक चैनल बदल दिया। सारी खामोशी एक पल में छूमंतर हो गई। संगीत मंडली के छात्रों और श्रीमानजी द्वारा प्रस्तुत एक उच्च स्तरीय कव्वाली 'अल्लाह जानता है मोहम्मद का मर्तबा...!' ने दर्शकों में खलबली मचा दी। कव्वाली के साथ–साथ तालियों की गड़गड़ाहट इस बात का सबूत थी कि आत्मा की अनंत परतों को छीलते हुए इस गीत ने श्रोताओं के हृदय में घर कर लिया था और बाद में भी अनेक

सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिये और इस तरह से 14 नवम्बर दिनांक पत्री से गायब हो गया।

इंतजार की घड़ियाँ आज जाकर रूक चुकी थी। जिस दिन हेतु 13 और 14 नवम्बर तो मात्र भूमिका बाँध रहे थे। वो दिन आ ही गया। दिन था 15 नवम्बर 2014। आज विद्यालय 60 का हो गया। अब तक सारे लोग छात्रों की मेहनत का परिणाम देखकर हैरान थे पर कुछ नमूने और भी बाकी थे। करीब 8:00 बजे प्रातः विद्यालय ध्वज उत्तोलन तथा विद्यालय गान हुआ। इसके बाद छात्रों एवं नोबा बन्धुओं ने बैंड पर परेड किया। अब बारी थी लयात्मक संगीतमय योग की जो 60 सालों में पहली बार होनी थी। अचानक ओवल में बड़े–बड़े ध्वनि बॉक्सों से 'श्री गणेशा देव! श्री गणेश ...' की बीट आयी और इसी बीट पर छात्रों ने लयात्मक संगीतमय योग शुरू किया। योगा के साथ–साथ कई पिरामिड भी दिखाए गए जिसकी भरपूर सराहना की गई। तत्पश्चात् प्रदर्शित किया गया उच्चस्तरीय व्यायाम जो कि उच्चस्तरीय बैंड की बीट पर था और यह बैंड लड़कों द्वारा संचालित था। छात्रों के इस प्रर्दशन को देखकर दर्शक दाँतो तले उगँली दबाने पर मजबूर हो गऐ। इसके बाद विशेष सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिसमें कई बड़ी–बड़ी विभूतियाँ जैसे श्री मंगलदेव पांडे, श्री एच. के. पी. सिन्हा, श्री डी. पी. साहु, माननीय सभापति महोदय श्री नरेन्द्र भगत, श्री कृष्ण स्वरूप प्रसाद, श्री एन. एन. सिन्हा, डॉ. मनीष रंजन, कर्नल बजरंग बिहारी एवं भिन्न–भिन्न बैच के नोबा बन्धु उपस्थित थे। इन विभूतियों एवं शिक्षकों की उपस्थिति; ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पंडाल में साक्षात् सरस्वती विराजमान हों। इस बीच श्री मंगल देव पांडे के द्वारा साल भर की उपजी साहित्य–मंजरी विद्यालय पत्रिका 'सर्जना' का विमोचन हुआ। इसका मुख्य पृष्ठ देखकर सभी चकित विस्मित थे। रंगीन परतों से लिपटी 'सर्जना' जिसमें एक ओर देश के सर्वोच्च व्यक्ति महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणवं मुखर्जी के संदेश ने सर्जना को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया, वहीं दूसरी ओर छात्रों की साहित्य कला ने इसे और भी आकर्षक बनाया। छात्रों में तो 'सर्जना' को देखने की होड़ लगी थी कि किन–किन की रचनाओं को 'सर्जना' ने आत्मासात किया है। सर्जना का प्रत्येक पृष्ठ स्वयं में अनूठा था। अब बारी थी कर्तव्य एवं दायित्वबोध का संवहन करते हमारे शिक्षकों एवं माताजी को सम्मानित करने की जिसे करतल ध्वनि के साथ संपादित किया गया।

अब बारी थी विद्यालय की गुरूकुल परम्पराओं को आधुनिकता से जोड़ने की। अतः छात्रों द्वारा विद्यालय में अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, इतिहास, कला कृषि, कम्प्यूटर, काष्ठकला, जीव विज्ञान, धातुकला, पुस्तकालय, भूगोल, भौतिक विज्ञान, राजनीतिक शास्त्र, रसायन विज्ञान एवं हिन्दी की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। जिसमें हिन्दी विभाग द्वारा प्रदर्शित कविता पोस्टर एवं प्रत्येक कवियों का फ्रेम सहित फोटो दर्शकों को बरबस अपनी ओर खीचता था। अंग्रेजी विभाग में शेक्सपीयर के ड्रामा स्टेज का 3D मॉडल ने भी दर्शकों का मनमोह लिया था। जीव विज्ञान में मानव की उत्पत्ति को मॉडल के माध्यम से बखूबी दर्शाया गया था। जिसकी शोभा देखते ही बनती थी। रसायन विज्ञान का 'मैजिक शॉ' एवं बी. टी. एम. मशीन लोगों को काफी आकर्षित कर रहा था। भौतिक विज्ञान में बच्चों की सोच के अनुरूप मॉडल देखकर दर्शक दाँतों तले उँगली दबाने पर मजबूत हो गए। सरसों तेल से चलयमान डोजरा एवं डिजिटल शहरों की कल्पना वाली मॉडल काफी लुभावने थे। कम्प्यूटर विभाग में छात्रों ने 'HTML' एवं ''Power Point''के सहारे अनेक ज्वलंत शीर्षकों पर प्रोजेक्ट बनाए। जिनमें से 'K.B.C.' अत्यधिक लुभावना था। एक ओर जहाँ राजनीतिक शास्त्र द्वारा प्रदर्शित प्रदर्शनी से हमने सासंद भवन के गुढ़ एवं अर्थशास्त्र के माध्यम से अनेक अर्थशास्त्रज्ञों के बारे में जाना। वहीं दूसरी ओर इतिहास में शिलालेख एवं भूगोल में झारखण्ड का 3D मानचित्र अनोखा था। कला, कृषि, धातुकला, काष्ठकला एवं पुस्तकालय ने भी कोई कसर न छोड़ते हुए जबरदस्त प्रदर्शन किया। अब तक दोपहर पर शाम भारी हो चुकी थी।

समस्त अतिथिगण एवं पठारवासियों को स्वाभाविक रूप से 15 नवम्बर की शाम का भी इंतजार था। शाम के कार्यक्रमों की भूमिका में या 'आनंद मेला'। यह मेला मानों मेला न था बल्कि प्रचारक था नेतरहाट पठार की संस्कृति का। मेले में एक ओर जहाँ व्यंजन एवं किताब आदि क्रय किये जा रहे थे। वहीं दूसरी ओर मांदर की थाप पर थिरकते स्थानीय लोग, उनके परिधान एवं परम्परा को दर्शा रहा था। अतः वास्तव में यह मेला अनोखा जो सिखाने, बाँटने के साथ–साथ मनोरंजन भी करा रहा था। अब तक शाम हो चुकी थी। अब बारी थी 'जावालसत्यकाम्' संस्कृत नाटक की। यह नाटक गुरूकुल परम्पराओं को अपनाने एवं एक सन्यासी बनने की प्रक्रिया पर आधारित था। सचमुच नाटक का मंचन एवं संवाद मनोहर थे। धीरे–धीरे निशा और ठण्डी हवाओं का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। परंतु दर्शक टस से मस न हुए और समापन समारोह के साथ जुड़े 'भव्य'–शब्द के सार्थक होने का इंतजार करते रहे। ज्यादा इंतजार न करते हुए ही दर्शकों के समक्ष यह सार्थक होने लगा और मंच पर स्वागत किया गया प्रसिद्ध बॉलिवुड गज़ल गायिका पद्मश्री 'पिनाज मशानी' का। उनकी आबाज तो अद्वितीय थी ही साथ ही उनकी गायकी भी बेजोड़ थी। इनकी गायकी और संगतकारों ने ऐसा समां बाँधा कि लोग रात्रि एवं ठण्डी हवाओं के असर को भूल थिरकने पर मजबूर हो गए। अब तक पंडाल के सभी दर्शक रोमांचित हो चुके थे। पिनाज मशानी के बाद आयी 'कुमकुम मुखर्जी', और समस्त दर्शकगण उठ खड़े हुए और उनकी गायकी को सलाम करने लगे। तिमिर गहरा होता जा रहा था और भव्य समापन समारोह अपने चरम पर था। गायक तब तक गाते रहे जब तक ऊर्जा खत्म न हुई और दर्शकगण भी तब तक मुग्ध थे जब तक गाने बन्द न हुए और एक बार तो ऐसा लगा जैसे गगनचुबी पहाड़ों के शीर्ष पर साँस लेती एक नन्ही सी शांत बस्ती अपने मौजों की रवानी में मचल उठी। धीरे–धीरे कार्यक्रम खत्म हुए और उद्घाटन के वक्त जलाये गये दीप बुझा दिये गये। इसके साथ ही घोषणा की गयी एक औपचारिक समप्ति की। पर यह अंत न था यह तो प्रारंभ था एक और यात्रा का। अभी हीरक जयंती समारोह को बीते ठीक से एक माह भी नहीं हुआ था और संस्कृत नाटक, हिन्दी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता एवं कला प्रदर्शनी के प्रतिभागियों को निमंत्रण आने लगे। यह तो पूर्ववर्ती छात्रों के स्नेह और पुरस्कार स्वरूप, नेतरहाट विद्यालय समिति एवं विद्यालय–प्रशासन के नेतृत्व में छात्रों के शैक्षिक सांस्कृतिक भ्रमण की योजना बनी। कुछ छात्रों को दिल्ली से तो कुछ को पटना से आमंत्रण मिला। छात्रों के लिए यह खबर अपने सपनों में रंग भरने जैसा लगा। एक ओर जहाँ राजधानी दिल्ली घर तथा नवयुग विद्यालय में जलवे बिखेर कर लोगों का ध्यान छात्रों ने नेतरहाट की ओर इस कदर खीचा मानो जीवन का सारा रहस्य यहीं हो। छात्रों की प्रस्तुति को देखकर दिल्ली नोबा ने पुरस्कार स्वरूप 5 लाख रूपये देने की घोषणा की इससे पहले छात्रों ने दिल्ली के सारे ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। वहीं दूसरी ओर छात्रों ने पटना के 'Creative Learning School' मे कविता अंत्याक्षरी से लोगों को आकर्षित किया। इससे पहले पटना जाने के क्रम में ही बोधगया के तत्कालीन एस.एस.पी. एवं विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र श्री निशांत कुमार सिंह के आतिथ्य ने विद्यालय छात्र–मंडल को अभिभूत कर दिया।

आखिरकार मेहनत ने एक बार पुनः विद्यालय का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया। विद्यालय के इस 'अमरत्व' के सफर में 60वाँ वर्ष एक महत्वपूर्ण पड़ाव था जिसे इतिहास बनते देर न लगेगी और हमारे विद्यालय का यह सफर जारी रहेगा। यहाँ की प्रकृति की छाँव में फूलता पहाड़ी जीवन और इन पहाड़ों पर आराम फरमाते जंगली जानवर और उनसे अठखेलियाँ करती झरनों की जलधारा, पहाड़ी शिखर को स्पर्श करते बादलों के टुकड़े, उदयाचल सूर्य की किरण रेखायें, अस्ताचल सूर्य की सुर्ख आभा नाशपातियों के बगीचे और चीड़ की लम्बी कतारें उस 60वें पड़ाव का सबूत रहेंगी और इसकी यादें आजीवन हमें गुदगुदाती रहेगी।

'वन्दे हे! सुन्दर मम सखा नेतरहाट सदा!!'

रामप्रकाश (11)
राजकुमार राज (26)
चन्द्रशेखर (12)

हीरक जयंती के कार्यक्रम

हीरक जयंती के कार्यक्रम

आधुनिक शिक्षा की मांग एवं चुनौतियाँ

हमारे समक्ष, सर्वप्रथम जो सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है, वह है 'शिक्षा क्या है? स्वामी विवेकानन्द जी ने इसके उत्तर में कहा था–'जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रवाह और विकास वशीभूत करके उसे फलदायी बनाया जाता है उसी को शिक्षा कहते हैं।' केवल शब्दों का रटना मात्र नहीं, बल्कि मानसिक शक्तियों का विकास तथा दक्षतापूर्वक इच्छा करने का प्रशिक्षण देने को हम शिक्षा कह सकते हैं।'

समस्त शिक्षण या प्रशिक्षण का एकमात्र उद्देश्य मनुष्य–निर्माण होना चाहिए। इस आधार पर यदि हम आधुनिक और प्राचीन शिक्षण प्रणाली में तुलना करें तो वे हमें एक–दूसरे से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होगी, या शायद हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली वास्तव में अब अर्थोपार्जन कर जीविका निर्वहन करने की माध्यम मात्र रह गई हो। इस तथ्य पर तनिक और चिंतन–मनन किया जाए तो हमारे सामने बहुत सी बातें प्रकट होती हैं। उनमें से सबसे पहली बात तो यह हैं कि यह शिक्षा मनुष्य बनाने वाली नहीं कही जा सकती। यह शिक्षा केवल और पूर्णतः निषेधात्मक है। आज के तकनीकी युग में बचपन से हमारी शिक्षा ही ऐसी होती है कि उसमें निषेध तथा नकारात्मकता का प्राबल्य है। हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली की पुस्तकों से तो नैतिकता का पृष्ठ जैसे पूरी तरह से फाड़ कर कहीं गटर में फेंक दिया गया हो। शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था 'बाबू' पैदा करने की मशीन के सिवाय कुछ नहीं है, अगर इतना ही होता, तब भी ठीक था पर नहीं–इस शिक्षा से लोग किस प्रकार श्रद्धा और विश्वास से रहित होते जा रहे हैं। वे भारत के बाहर के देशों तथा विषयों के सम्बन्ध में तो हर बात जनना चाहते हैं। लेकिन उनसे यदि कोई अपने राज्य के भूगोल के बारे में भी पूछे तो वे असमर्थ होंगे। वर्तमान शिक्षा के कारण हामरी इच्छाशक्ति भी कम हो चुकी है। नए विचार भी लुप्त होते जा रहे हैं। ग्रेजुएट बनने के लिए कितना उन्माद है। रोजगार के प्रति लोग तत्परता से उन्मादित हा रहे है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात आती है– गुरू–शिष्य परंपरा और शिक्षा की महत्ता की। इस आधुनिक शिक्षा–पद्धति में हमें गुरू और शिष्य या यूँ कहे 'सर' और 'स्टूडेंट्स' के बीच गहरी खाई दिखाई पड़ती है और शायद यही कारण है कि आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली सच्ची शिक्षा के महत्व का वर्णन करने में असमर्थ है। मैं मानता हूँ, कि इस वैज्ञानिक युग में प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी जीविका निर्वहन करना अति आवश्यक है परंतु उतना ही महत्वपूर्ण है शिक्षा को उसका सही रूप प्रदान करना। 'आज की शिक्षा की उसका सही रूप प्रदान करना। आज की शिक्षा को हम एक बोझ समझते हैं और उसके महत्व को न समझकर केवल एक व्यवसायिक शिक्षा के रूप में ग्रहण करते हैं। कहा भी गया है– ''यथा खरश्चन्दन भारवाही भारस्य वेत्ता न तु चन्दस्य'' अर्थात्–'वह गधा जिसके ऊपर चन्दन की लकड़ियों का बोझ लाद दिया हो, बोझ की ही बात जान सकता है, चन्दनके महत्व को नहीं समझ सकता। भौतिकशास्त्रों का अध्ययन और दैनिक उपयोग की वस्तुओं का मशीनों द्वारा उत्पादन–क्या यही उच्च शिक्षा है? उच्च शिक्षा का उद्देश्य है–जीवन की समस्याओं को सुलझाना और यही तथ्य इस तकनीकी, आधुनिक और व्यवसायिक शिक्षा के लिए बहुत बड़ी चुनौती खड़ा करता है। तीसरा तथ्यः–

प्राचीन शिक्षा पद्धति का एक प्रमुख उद्देश्य ज्ञान का विस्तार भी था। जबकि आज की आधुनिक शिक्षा का उपयोग केवल स्वार्थहित में होता है। लोग उच्च पद पर आसीन हो स्वयं को शिक्षित समझते हैं। किन्तु अकेले शिक्षित होकर क्या लाभ? जब तक कि आप के ज्ञान से आपका समाज आलोकित न हो। ये बात आज के 'बाबू' को कौन समझाए। ज्ञानार्जन में एक और मुख्य बात उद्धृत होती है–आधुनिक शिक्षा पर अमीरों का आधिपत्य हो चुका है। हमें यह बात समझनी चाहिए और दूसरों को भी इससे

रूबरू कराना चाहिए कि शिक्षा का मौलिक अधिकार सभी को प्रदत्त है। सिर्फ अपनी आर्थिक तंगी के कारण ग्रामीण लोग अपने बच्चों को नहीं पढ़ा–लिखा सकते और अंततः लाचार होकर उन्हे अपने बच्चों को खानदानी काम में लगाना पड़ता है। कारण चाहे जो भी हो परंतु वास्तविकता यही है कि वर्तमान शिक्षा दिखावा है। इधर दस सालों में शिक्षा के नाम पर तो जैसे पैसों की लूट मची है। हाँलाकि सरकार ने ग्रामीण और मजदूर वर्गों के लिए कई योजनाएँ लागू की जैसे–सन् (2001–02) में शिक्षा सहयोग योजना सन् 2007 में सर्व शिक्षा अभियान आदि। लेकिन ये योजनाएँ कहाँ तक सफल हो पाई ये भी गंभीर मुद्दा है जिस पर हमें गहराई से सोचने एवं विचारने की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश के किसी उच्च न्यायालय ने इस पर जोर देते हुए हाल ही में एक प्रस्ताव जारी किया था–''सभी सरकारी अफसरों एवं कर्मचारियों के बच्चे सरकारी विद्यालयों में ही पढ़ेगे। मुझे ऐसा लगता है कि इस प्रस्ताव को सभी राज्यों में लागू करना आवश्यक है ताकि देश के सभी सरकारी विद्यालयों की कमी पूरी हो सके और उनमें अपेक्षित सुधार हो सके।

चूँकि आज की शिक्षा सिमट सी गई है और इस कारण ज्ञान का विस्तार नहीं हो पा रहा है। इससे सम्बन्धित एक उदाहरण सामने आता है–हम सभी जानते हैं

कि आर्यावर्त्त में ही आयुर्वेद की खोज हुई। परंतु इस चिकित्सा पद्धति सम्बन्धित ज्ञान ऋषि–मुनियों तक सिमट कर रह गई और कहीं न कहीं इसी कारण से आयुर्वेद का पतन होता चला गया। हालाँकि वर्तमान में आयुर्वेद एक सफल चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित है। हम इससे ये निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ज्ञान का विस्तार कितना महत्वपूर्ण है औरों को शिक्षित बनाने के लिए और शायद, आधुनिक शिक्षा की चुनौतियों को स्वीकारने में यह काफी मददगार साबित होगा।

निखिल शुक्ला

135

एक साम्राज्य के उत्थान एवं पतन की कहानी

प्रातः आश्रम के जागरण की धंटी की आवज से नींद खुली, पर एक बैचेनी के साथ। यह बैचेनी रात के स्वप्न के कारण उत्पन्न हुई थी। स्वपन में एक महत्वपूर्ण साम्राज्य के राजा (हम्पी विजयनगर साम्राज्य का राजा) ने मुझसे कहा–''आप तो इतिहास की शिक्षिका है; तो आप ही बताइए कि क्यों पाँच राज्यों के राजाओं ने मिलकर मुझे पराजित कर दिया? क्या मेरी गलती सिर्फ इतनी–सी थी कि मैंने कला–संस्कृति के क्षेत्र में अच्छी तरक्की की और अपनी प्रजा के साथ समरसता का भाव रखा।'' उसकी दुःख भरी दास्तान सुनकर कुछ देर के लिए मैं भी असमंजस में पड़ गई, सचमुच ऐसा क्यों हुआ?

मैंने उसे बताया कि मैं नेतरहाट विद्यालय की शिक्षिका हूँ और मेरा काम बच्चों को पढ़ा कर उन्हें देश के भावी कर्णधार के रूप में एक सुयोग्य नागरिक बनाना है। पर हाँ, प्राचीन काल एवं मध्यकाल इतिहास के विश्व इतिहास की कुछ ऐसी घटनाएँ मुझे विदित है जिनसे आपको प्रेरणा मिलेगी। फ्रांसीसी क्रांति

(1789 ई०) ने पूरे विश्व में स्वतंत्रता, समानता एवं मातृत्व से जुड़ी एक लहर ला दी थी। नेपोलियन बोनापार्ट ने पूरे विश्व को अपने अधिकार में कर लेने की ठान ली, फिर भी मित्र राष्ट्रों ने 1813 के लिपजिग एवं 1815 के वाटरलू के युद्ध में उसे पराजित कर दिया। मैंने राजा से यह भी पूछा कि उसने राजनीति में चाणक्यनीति क्यों नहीं अपनाई?

सचमुच जीवन शाश्वत काल के प्रवाह की गति की एक विशिष्ट स्थिति का चित्रण है और काल जो अपने होने और गुजरने की रश्मि–रेखा जगत पर खींचे बिना कभी जाता ही नहीं। इतिहास को जब किसी युगान्तकारी धटना के संवाहक होने का गौरव मिलता है तो इसका श्रेय कथित युगांतर के प्रणेता को जाता है। भारत वर्ष के इतिहास में परीक्षित जनमेजय से सिन्धु सरस्वती, सिंधु सरस्वती से बुद्ध महावीर और बुद्ध महावीर से चन्द्रगुप्त अशोक तक का काल पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। भारत भूमि भौगोलिक सौंदर्य एवं अतीत की कला संस्कृति के समृद्ध भूमि, भैगोलिक सौंदर्य एवं अतीत की कला संस्कृति के समृद्ध विरासत से परिपूर्ण है। भारत भूमि जगत के ज्ञान, सभ्यता और धर्म तत्व की आदि जननी रही भी है।

भारत के कई महत्वपूर्ण साम्राज्यों के उत्थान–पतन की श्रृंखला में महत्वपूर्ण विजयनगर साम्राज्य हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों द्वारा 1336 ई० में स्थापित हुआ एवं जब यह अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर था, 1565 ई० के तालीकोटा के युद्ध में दक्षिण के गोलकुंडा, बीजापुर, अहमदनगर, बरार और वीदर्भ ने मिलाकर पराजित कर दिया। तत्पश्चात विजयनगर साम्राज्य कभी शक्तिशाली नहीं बन सका।

संगम, सालुन, तुलुव तथा अरविष वंशों ने विजनगर पर सौ वर्षो तक शासन किया। दवराय I, देवराय II एवं कृष्णदेव राय इस साम्राज्य के प्रसिद्ध शासक थे। विजयनगर को तत्कालीन विशालमय नगरों में से एक की संज्ञा दी गई थी। यहाँ के शासकों ने दक्षिण भारत के मुख्यतः विजयनगर में बहुत से मंदिर, महल तथा अन्य भवन बनवाए, जिसमें सर्वोत्कृष्ट मंदिर, हम्पी में है। इन ऐतिहासिक भवनों को Unesco World Heritage Sites में मान्यता मिली है। वस्तुतः विजयनगर साम्राज्य ने शासन व्यवस्था, समाज, संस्कृति, कला व सिंचाई योजना प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति की। राजा एक परिषद की सहायता से साम्राज्य का प्रशासन चलाता था जिसमें प्रांतीय सूबेदार अधिकारी, विद्वान कवि, कलाकार, व्यापारी आदि शामिल थे।

समाज और संस्कृति के क्षेत्र में विजयनगर ने संस्कृत, तमिल, तेलुगु व कन्नङ भाषा को प्रश्रय दिया। देवराय प्रथम के दरबार के प्रसिद्ध तेलुगु कवि श्रीनाथ ने हरविलासम की रचना की। देवराय द्वितीय ने महानाटक सुधानिधि तथा वदरायण के ब्रह्मसूत्र पद एक टीका लिखी। कृष्णदेव राय ने स्वयं अभुक्तभाल्यद की रचना की। यहाँ के समाज की स्त्रियाँ शिक्षित थी एवं उन्हें आदर और सम्मान प्राप्त था।

विजयनगर के शासकों ने अनेक जनहितकारी योजनाएँ प्रारंभ की देवराय प्रथम ने तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनावाया जिसका उपयोग राजधानी की जलापूर्ति के लिए किया जाता था। जब भी कोई शत्रु नगर की घेराबन्दी करता तो अच्छी खेती के कारण नगरवासियों के पारा आवश्यकतानुसार खाद्य पदार्थ मौजूद होते।

विजयनगर के मंदिरो और भवनों के खडहरों से हमें इस नगर की सुरक्षा एवं सैनिक प्रबधं के बारे में पता चलता है। एक पुर्तगाली यात्री डोमिंग पेरा ने 16वीं शताब्दी में हम्पी का वर्णन कुछ यूँ किया–''गोवा से आनेवाले लोग जिस प्रवेशद्वार से गुजरते हैं, उस द्वार के भीतर राजा ने एक अत्यंत सुदृढ़ प्राचोख्द्ध नगर बसा रखा है, जो दीवारों और बुर्जो से सुरक्षित है।' वहीं अब्दुररज्जाक लिखता है– ''पहली, दुसरी और तीसरी दीवारों के बीच जोते हुए खेत, बगीचे तथा आवास है।'' विजयनगर में पूर्वकालिक जैन

मंदिर भी मिले हैं। हम्पी शहर मंदिरों, वाणिज्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण गुजायमान था। उन दिनों हम्पी के बाजारी में देशी–विदेशी व्यापारियों का जमघट लगा रहता था। गर्म मसालों, बहुमूल्य पत्थरों एवं हीरे–जवाहरांतों के व्यापार के लिए यह राज्य प्रसिद्ध था। वर्ष 2013।

दिसंबर में सौभाग्यवश मुझे भी वहाँ जाने का मौका मिला। मुझे उस महत्त्वपूर्ण साम्राज्य के महत्वपूर्ण भग्नावशेषों को देख काफी अफसोस हुआ। क्षोभ होता है भारतीय राज्यों के परस्पर आपसी ईष्या–द्वेष का, जिसका एक साक्षात उदाहरण है विजयनगर साम्राज्य का पतन। विजयनगर साम्राज्य जो एक समृद्ध साम्राज्य था, वहाँ प्रजा खुश थीं। कपास एवं नील की खेती भी भारतीय वस्त्रोद्योग के गाय के अनुरूप उपजाया जाता था। राजा कृष्णदेव राय एक मानवतावादी प्रेमी राजा थे। सभी धर्मो एव समुदायों के प्रति उनमें एक समान भाव था उनके समकालीन बरबोसा के अनुसारः–

The king allows such freedom that every man may come and go and live according to his own greed, without suffering any annoyance and without inquiry whether is he a Christian, Jew, Moor or Heathen. Great equity and justice is observed to all not only by the rulers, but by the people as well."

ऐसे विकसित राज्य का इस प्रकार पतन होना सचमुच विडम्बना ही तो है, अगर सभी भारतीय राज्य आपसी फूट–कलह को भुलाकर, पारस्परिक विवादों को स्थगित कर एक जूट हो जाते तो हमारा भारत ब्रिटिश शासन जैसी विदेशी शक्ति के शिंकजे में कभी न जाता। भारत का आर्थिक दोहन न होता और तब हमारा भारत विश्व के राजनीतिक रंगमंच पर एक विकसित एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरता। देश सर्वोपरि है। हमें विजयनगर साम्राज्य के उत्थान–पतन के इतिहास से प्रेरणा लेनी होगी। पूरे विश्व को बताना होगाः ''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा!''

डॉ० शोभा पाण्डेय
अध्यक्षा, इतिहास विभाग

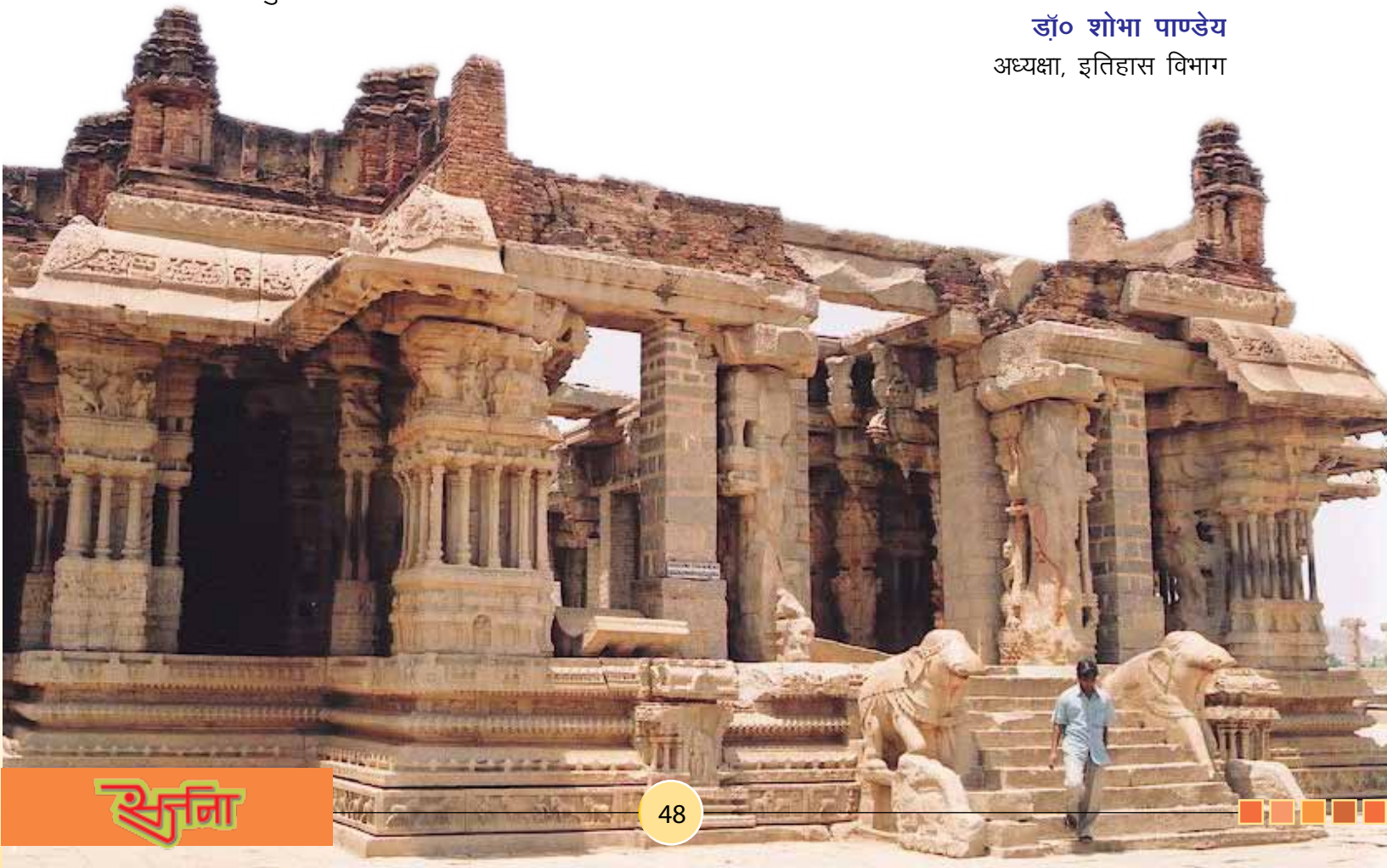

पुराना स्कूल

नेतरहाट जैसे विद्यालय में चयन की खबर ने तो मानो मेरे ऊपर जादूई छड़ी का काम कर दिया था।

इस खबर ने मुझसे जुड़े हर शख्स को खुश होने को मजबूर कर ही दिया था। मिठाई के डब्बे तो ठहर ही नहीं रहे थे। ऐसा लग रहा था मानों तस्वीर में कैद दादाजी भी मुस्कुरा कर गर्व कर रहे हो। सच कहूँ तो अंदर–ही–अंदर मैं भी फूले न समा रहा था क्योंकि मैंने मम्मी–पापा के सपनों और अपनी सफलता की पहली कड़ी पार कर ही ली थी। पर इस खबर से सबसे ज्यादा प्रभावित मेरा तत्कालीन स्कूल हुआ था लेकिन किसी और तरीके से। वह तरीका अजीब भी था और मुनासिब भी। वह तरीका था नारायणी का।

मुझे अब भी याद है मेरे स्कूल का और स्कूल में मेरा पहला दिनजी हाँ! हम दोनों का पहला दिन क्योंकि उस स्कूल ने 20 अप्रैल को ही भविष्य में इतिहास बनने की नींव रखी थी। मैंने थर्राते कदमों और तेज धड़कते दिल के साथ प्रवेश किया पर अंदर जाते ही मुझे काफी अपनापन महसूस हुआ। इसलिए नहीं कि शायद मैं इस स्कूल के शिक्षकों से पहले मिल चुका था और वो मुझसे भली–भाँति परीचित हो, बल्कि इसलिए क्योंकि इस स्कूल से मेरा एक अटूट रिश्ता जुड़ने जा रहा था। स्कूल की शुरूआत एक छोटी इमारत से हुई थी, जिसमें छोटे–छोटे छह कमरे थे। आज ये छोटे–छोटे कमरे मेरे लिए काफी बड़े हैं। ये छोटे कमरे ही काफी है मुझे उन दिनों को याद करने के लिए मजबूर कर देने के लिए जब मुझे पढ़ना–लिखना तो आता था पर 'रीडिंगराईटिंग' नहीं। कैसे भूल सकता हूँ इंग्लिश की वो क्लासेस जिनमें मैं 'किंग' हुआ करता था और तो और राजा भी ऐसा–वैसा नहीं, 'अंधों' में काना' वाला। विश्वास नहीं होता कि चौथी क्लास में आके मैंने 'माईरोल्क' जैसी चिड़िया का नाम सुना। उस कक्षा की कॉपी अभी भी मेरे पास है जिनमें 'वाट, वेयर, वेन आदि सामान्य शब्दों के अर्थ लिखे हैं। ये सामान्य से शब्द आज उन पन्नों पर अपनी एक अलग विशिष्ट और महत्ता को संजोये कैद है।

घड़ी की सुईयाँ कैलेंडर के दिन, महीने और साल में तबदील हईं और अब मैं पाँचवीं क्लास में था पर एक अलग 'मैं' के साथ। इस 'मैं' की अब पहचान थी। लोग इस 'मैं' को जानते थे और जानते भी क्यों ना। मैं नन्हा स्टार जो था अपने नन्हें से शहर का। ये स्टार मुझे मेरे स्कूल ने ही बनाया था। पहली बार सभी स्कूलों के बीच नृत्य प्रतियोगिता होने को थी। हमारे स्कूल में निमंत्रण पत्र को पहुँचते और पीयूष सर को मेरा नाम लिख भेजने में तनिक भी देर ना लगी। मैं उस वक्त एक बच्चा था, कहाँ समझता था इस प्यार और सम्मान को। अच्छा ही था जो बच्चा था इसलिए हर टीचर से सीखने का काफी समय मिला और मैंने इस समय का सदुपयोग भी किया। स्कूल का बच्चा–बच्चा मुझे तब से जानने लगा जब मैंने नृत्य प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान हासिल किया। ऐसा कर मैंने अपना और अपने स्कूल का सर गर्व से ऊँचा कर दिया था। पूरा स्कूल मुझे जैसे छात्र को पाकर अपने को खुशकिस्मत मान रहा था, पर खुशकिस्मत तो मैं था जो मुझे इतना अच्छा स्कूल मिला था। अब तो जो भी प्रतियोगिताएँ होती, नृत्य, गाना, भाषण, वाद–विवाद, क्विज, सब में मेरा नाम तो जैसे चिपक कर बैठ गया था। मैंने और स्कूल ने मिलकर एक दूसरे को ऊपर उठाने का काम कब का शुरू कर दिया था और यह कार्य अब भी बरकरार यानि प्रगति पर था।

एक दिन गर्मी को मौसम में यूँ ही मैंने स्कूल में लटके पीले–पीले आमों के बारे में अपने दोस्त के सामने उनकी तरीक कर दी और पीयूष सर ने सुन लिया। बस फिर क्या था सर ने अगले दिन एक थैले आम से मेरे भारी बस्ते को और भी भारी कर दिया। उस दिन मेरे घर में गुठलियों का अंबार लग गया था। उन आमों की मिठास को मैं शब्दों में नहीं बाँध सकता। वो शायद इसलिए भी मीठे थे क्योंकि एक शिक्षक ने बड़े प्यार से अपने प्यारे छात्र को उन आमों को दिया था। खैर जो भी हो पर मैं उसी दिन समझ गया था कि हर शिक्षक मुझसे बेहद प्यार करते है। सचमुच कभी–कभी जीवन की छोटी–छोटी घटनाएँ भी हमें जीवन की बड़ी–बड़ी सच्चाईयों से वाकिब करा देती हैं।

अब क्या था, स्कूल पूरे शहर में छाया हुआ था। हर कोई इस स्कूल को काफी सम्मान की नजरो से देखता और जानता था। छात्रों की संख्या 100 से 1000 पार कर गई

थी। सचमुच स्कूल के अच्छे दिन आ रहे थे। मैं अपने स्कूल का पी.टी/परेड कमांडर से लेकर असेंबली इंचार्ज तक नियुक्त किया जा चुका था।

स्कूल का चप्पा–चप्पा मुझसे परीचित था। हॉस्टल के कुक तक मुझे जानते थे। ये सब इतना इशारा करने को काफी थे कि मैं स्कूल की आँखों का तारा बन चुका था, लेकिन अब ये तारा ना चाहते हुए भी अपने आशियाने से कहीं दूर जाने वाला था–बहुत दूर।

आज स्कूल में मेरा आखिरी दिन था। पूरा स्कूल मायूस दिख रहा था। कह रहा था मानो 'मत जाओ ना, प्लीज।' स्कूल की हर दीवार, हर बस, हर क्लास बस यही शब्द दुहरा रहे थे। मन तो मेरा भी नहीं था अपने स्कूल को अलविदा कहने का। आज हर पीरियड में मैं ''सेंटर ऑफ एटरेकशन' था। आज ना कोई टीचर पढ़ाने के मूड में थे और ना ही मैं पढ़ने के। पूरा स्कूल मुझसे नाराज था। आँखें नम हो गई और होनी ही थी जब मेरे दोस्तों ने मुझे कार्ड दिया। रोक नहीं पाया इन आँसुओं को उस वक्त। कारण मुझे भी नहीं पता। ना चाहते हुए भी बस में बैठकर मैने स्कूल को अलविदा किया। अंदर–ही–अंदर मैं खूब रो रहा था। वो पुराना 'मैं'। मन कर रहा था दौड़ के बीते पलों को फिर से जी लूँ। जी तो करता था स्कूल की गोद में ही सो जाऊँ और उठूँ ही ना। पर मुझे अगले दिन जाना था और चला गया मैं नए 'मैं' के साथ। वो पुराना 'मैं' तो अब भी उस पुराने स्कूल में रहता है। छुट्टी के दिनों में उस स्कूल से मिलना अवश्यभावी है। नहीं जाने की सोच भी नहीं सकता। नहीं भूल सकता उस पुराने स्कूल को जिसने मुझे नया बनाया।

''मिस यू सॉ मच–सेंट मेरीज पब्लिक स्कूल!''

अमित कुमार
314

एक नयी सुबह

दिन बदलते है, तरीखें बदलती है, वर्ष बदलते हैं और इसी के साथ बदल जाता है बहुत कुछ हर बीता हुआ कल अतीत के आइने में समा जाता है, इनमें से कुछ इतिहास के समंदर में अपना स्थान बना लेते हैं और कुछ अतीत के अँधेरे में डूब जाते हैं।

3 वर्ष विद्यालय में आए हो चुके है। याद है विद्यालय में वह पहला दिन जो कि अब विद्यालय के रजिस्टर में दर्ज इतिहास बन चुका है कि फलां समय में निम्न छात्रों ने विद्यालय में नामांकन लिया और अब इस बात के लिए भी देर नहीं हैं कि जब यह बात भी अब इतिहास के पन्नों में दर्ज होगी कि अमुक बैच इस वर्ष पासआउट हो गया। हमने भले ही इस विद्यालय में पढ़ने का गौरव हासिल कर लिया है, लेकिन हमारी कोई खास पहचान नहीं, हम हीरे के रूप तराशने के लिए लाए गए लेकिन धूल बनकर तूफान की गहराइयों में भटक गए। हम तराशने के विचार से ही डर गए और उसी डर ने हमें काफी पीछे छोड़ दिया। एक सुंदर तथा सुदृढ़ अतीत हमारे अतीत कभी हमारा वर्तमान का महत्व नहीं समझ पाए। अगर सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता एस वाक्य ने काफी हद तक मुझे प्रभावित किया और अब हर नयी सुबह मेरे लिए खास और शानदार सिद्ध हो रही है। जो खो गया उसे हम पा नहीं सकते हैं, अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। अतः में उन सभी हताश लोगों से यही कहना चाहता हूँ कि जो यह सोचते हैं कि उन्होंने अब तक कुछ खास नहीं किया। ''दोस्तों हर रोज सूरज डूबने के बाद एक नयी सुबह का जन्म होता है।'' आप यह मान कर चलिए कि नासमझी में आप अन्धकार में डूब गए, यदि हम डूबेंगे नही तो एक नयी सुबह का मुँह कैसे देख पाएँगे।''

आनन्द मोहन पुरती
70

कुर्सी की आत्मकथा

एक बार मैं घर के बाहर बगीचे में कुर्सी पर बैठ कर अपने मन में गुनगुना रहा था। तभी एक आवाज सुनाई दी। तुम जिस लकड़ी की कुर्सी पर आराम से बैठे हो जानते हो तुम्हे आराम पहुँचाने के लिए मुझे कितनी तकलीफ और यातनाएँ झेलनी पड़ी है। अपने पास से आती आवाज को सुनकर मैं चौंका। ये आवाज कहाँ से आई? तभी कुर्सी बोली यह मैं ही बोल रही हूँ। क्या तुम मेरी कहानी सुनोगे? मेरे हाँ कहने पर कुर्सी अपनी कहानी सुनाने लगी।

किसी समय में एक छोटे–सिकुड़े हुए बीज के रूप में मैं जमीन के अंदर थी। मैं कई दिनों तक धरती के अंदर सोयी रही। वहाँ चारो ओर अंधेरा था। मैं सोचती थी कि दुनिया कितनी छोटी सिकुड़ी और सिमटी सी है। तभी एक दिन सूर्य का प्रकाश मुझ पर पड़ा जिससे मुझे एक नई ऊर्जा और शक्ति मिली और मै धरती से बाहर निकल आयी और इस विशाल संसार में अपने को धूल के कण के समान पाकर आश्चर्यचकित हो गई। अब मेरे भ्रम की दुनिया सिकुडी सिमटी और छोटी है दूर हो गया। अब में रोज सूर्य के प्रकाश, हाईड्रोजन और ऑक्सीजन से मिलकर बने जल कण तथा ऑक्सीजन द्वारा प्रकाश–संश्लेषण प्रक्रिया द्वारा मिली शक्ति से मै रोज वृद्धि करने लगी। बगीचे में मेरे अलावा मेरे बहुत सारे मित्र और बुजुर्ग पेड़ भी थे। वे सभी बहुत अच्छे थे और मुझे नित नई–नई बातें बताते रहते थे। एक बार मैने देखा कि मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों को निर्दयी और निर्ममता पूर्वक काट कर बाजारों में बेच देते है तथा अपने घर में जलावन के रूप में प्रयोग करते है। पेड़–पौधे अपना जीवन दूसरे के लिए समर्पित कर देते हैं। पेड़–पौधे मनुष्य तथा अन्य जीवों को कड़ी धूप में छाया और भूख लगने पर फल प्रदान करते हैं। मनुष्य इन बातो को जानते हुए भी अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करके बाजारों में बेच रहे है और घरों में जलावन के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। कुर्मी बोली मनुष्य ने मेरी हँसती–खेलती जिंदगी में भी मानो आग लगा दी हो। उसने मेरे ही आँखों के सामने मेरे कई मित्रों को मुझसे अलग कर दिया। वे निर्दयता पूर्वक होकर हमारे मित्रों पर कुल्हाड़ी से चोट कर उन्हें काट रहे थे। हमारे मित्रों को असह्य पीड़ा हो रही थी परंतु सभी में एक गजब तरह की मुस्कान थी। यह मुस्कान उनकी समर्पित भावना के प्रति थी कि वे अंतिम क्षण तक किसी के काम आ सके। पेड़ो की अंधाधुंध कटाई से मनुष्य आज खुद संकट में आ गए है। जिससे पृथ्वी के तापमान में वृद्धि, हरित गृह प्रभाव आदि कई बड़ी–बड़ी समस्याएँ काल के रूप में कई बड़ी–बड़ी बीमारियाँ फैला रही है जिससे मनुष्य का जीवन भी संकट में है। परंतु फिर भी मनुष्य नहीं संभले और मुझे भी एक दिन एक लालची मनुष्य ने लोभवश बड़ी निमर्मता पूर्वक काट दिया। मुझे असहाय पीड़ा हो रही थी। मेरी आँखो से आँसू आने लगे परंतु उस मनुष्य के ऊपर लोभ सवार था। उसने मुझ पर दया नहीं की और मुझे भी निर्दयता पूर्वक काट कर मुझे और मित्रों से अलग कर दिया और एक बढ़ई के पास बेच दिया। लुहार ने मुझे धूप में डाल दिया। क्या बताऊँ कितनी पीड़ा हुई थी मैं पूरी तरह सूख चुकी थी पर उससे ज्यादा पीड़ा तो तब हुई जब उसने मुझे मशीन में चीरकर कई भाग कर डाले। इन भागों में कुछ पटरे और कुछ लम्बे तने जैसे थे। इन पटरों को उसने रंदे की मदद से चिकना किया। कुछ लकड़ियाँ काटकर मेरे पाए तैयार किए। अब उसने पाए, पटरे, हत्थे और पीठ का भाग जोड़ने के लिए जब कोल ठोंकी तो मेरी जान निकलते–निकलते बची। मेरे तैयार होने पर उसने मेरे घावों में पीली मिट्टी भरी। फिर मुझे पूरी तरह पॉलिश करके बाजार में बेंचने के लिए रख दिया। जहाँ से तुमने मुझे खरीद लिया। तब से मैं तुम्हारे आराम का साधन बनी।

कुर्सी की दुखद भरी आत्मकथा को सुनकर मेरे आँसू आ गए। मैने कुर्सी से कहा कि मैं अब वादा करता हूँ कि वृक्ष काटने वालो को कानूनी दंड दिलवाऊँगा तथा लोंगों को वृक्ष लगाने तथा इसके संरक्षण के लिए प्रेरित करूँगा तथा वृक्षो के महत्व को दूर–दूर तक फैलाऊँगा। अब वृक्ष को जान मेरी जान है।

कुर्सी मुस्कुरा कर बोली कि मुझे बहुत खुशी होगी।

उस दिन से मैने बहुत सारे वृक्ष लगाये और इसकी अच्छी तरह से संरक्षण करता हूँ।

मनीष कुमार साव

273

मोबाइल बनाम चिट्ठी

सबके पिया परदेश बसत हैं लिख-लिख भेजे पाती।
हमरे पिया मोरे हृदय बसत है, कबहूँ न आती-जाती।।

उपर्युक्त पंक्तियाँ पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मरूभूमि की मर्दांगिनी प्रेम दीवानी के समय में अवश्य ही साधारण मोबाइल फोन नहीं था। हो सकता है चिट्ठी लिखने की जरूरत ही नहीं पड़ती हो। इस बात का दूसरा पहलू यह है कि अगर मीरा बाई आज के समय में होती तो यह लिखतीं।

सबके पिया परदेश बसत हैं, निस दिन करते फोन।
हमरे पिया स्मार्ट फोन लिए, रहते हरदम मौन।।

कहना यह है कि सूचना प्रौद्यौगिकी के विकास के नए दौर का लाभ उठाने की जुगत में हम कहीं निजी संबंधों के मध्य चीन की दीवारें तो नहीं बनाते जा रहे हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि मोबाइल फोन के अनेक लाभ हैं। स्मार्ट फोन कई दृष्टियों से स्वयं आपको आपके सबसे अच्छे मित्र सा प्रतीत होता है। परन्तु इसके अत्यधिक प्रयोग ने कहीं न कहीं मानव मन की संवेदना को क्षति पहुँचाने का काम किया है जो कि बिना संदेह मनुजता के लिए अनुचित है। कहा भी गया है–

यही पशु प्रवृति है कि आप-आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

मोबाइल फोन आज संसार में सभी मनुष्यों को एक दूसरे के करीब तो लाया है पर इस नजदीकी के मध्य एक ऐसी गहरी खाई बन गई है, जिसके कारण आपसी संबंधों की बुनियाद को सींचने की कोशिश को भी फोन पर ही ''हैप्पी बर्थ डे'', हैप्पी दीपावलीं, ''हैप्पी न्यू ईयर'', हैप्पी टीचर्स/फादर/मदर डे'' ''RIP'' जैसे मैसेज भेजकर तिलांजलि दे देते हैं। जो कि निश्चित तौर पर चिन्ता का विषय है। एक ही परिवार के लोग एक ही छत के नीचे रहकर आपस में भावनात्मक तौर पर इतने दूर होते जा रहे हैं कि सुदामा पाण्डेय धूमिल की निम्नांकित पंक्तियाँ पुनर्जीवित हो उठती है–

रिश्ते हैं, लेकिन खुलते नहीं हैं
और हम अपने खून में इतना भी लोहा नहीं पाते
कि उससे एक ताली बनवाते
और भाषा के भुन्नासी ताले को खोलते
रिश्तो को सींचते हुए आपस में प्यार से बोलते

अशय यह कभी नहीं है कि रिश्तों की प्रगाढ़ता घटी है अपितु यह तो बढ़ी है। बेटे व्हाट्सएप्प पर पिता जी को प्रणाम कर विद्यालय जाते हैं। जब मिट्टी की मूर्ति को गुरु मानकर विद्या सीखी जा सकती है तो स्मार्ट फोन पर साक्षात् गुरू के साथ चैटिंग कर ज्ञान नहीं अर्पित किया जा सकता? आज कल के प्रेमी युगल इस माध्यम के प्रयोग से चंदा–चकोर तथा चातक पक्षी जैसे प्रतिमानों को साक्षात् मूर्त रूप प्रदान करते हैं। बस प्रेमी के फोन करने पर आपका फोन इंगेज नहीं होना चाहिए अन्यथा यारी मे गद्दारी का आरोप, शक शुरु, दोस्ती खत्म, पुनः मूषको भव।

चितंनीय तो यह है कि हम इस अन्धी दौड़ में समाज के उन स्तंभो को हाशिये पर रख चुके हैं जो किसी कारणवश इन संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं कर पाते। हमारे बड़े बुजुर्ग जो समाज में उच्च आदर्शो की स्थापना करते थे इस नई क्रान्ति में सहज नहीं हैं। नतीजा सामने है। समाज को आइना देखना ही होगा।

पहले मातृ ऋण, पितृ ऋण और देव ऋण से उऋर्ण होने हेतु सत्कर्म किये जाते थे। आज कल तो गृह ऋण और कार ऋण में ही मनुष्य उलझा रहता है। बचा–खुचा रिचार्ज ऋण की भेंट चढ़ जाता है। इस स्थिति से निकलना ही होगा। आज आवश्यकता है खुल कर जीवन जीने की और ऐसे समाज की स्थापना करने की जहाँ मनुष्य आपसी संबंधों की मजबूत आधारशिला पर सुखी व आनंदमय जीवन व्यतीत कर सके। एक सुंदर व सुखमय समाज की स्थापना कर सके। इसके लिए लाभकारी संसाधनों का अतिशय व नकारात्मक प्रयोग न कर आवश्यक व सकारात्मक प्रयोग करना होगा। अगर समाज को बचाना है तो मोबाइल कनेक्शन तोड़ कर हृदयों को जोड़ना होगा।

अमित आनंद, 232

सर्जना!

सृजन के साये में पल्लवित,
वन वसुधा का इतिहास बता दो।
कौशल की काया में उल्लसित,
प्रेम प्रीति की आवाज बता दो।।

जानता तो हर कोई है कि तुम्हारे हृदय में जगह बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है।

''रणभेरी जब बजती तेरी,
चैन नींद उड़ जाती मेरी।''

विद्यालय के जन्मदिन पर नया रूप लेकर पधारती हो। हम बादल के पंछी मधुरगान गुनगुनाने लगते है। तुम्हारे आगमन से पूर्व हम प्रतीक्षा की बेबस घड़ी पहनकर स्वागत के लिए आतुर रहते है। पर तुमसे मिलते ही किसी के पर कट जाते है तो कोई हताश, निराश होकर वसुधा पर गिर पड़ता है तो कोई मधुर–गान से इस कानून को गुंजित करने लगता है। तुम्हारे आगमन पर किसी के मन में लड्डू फूटता है तो कोई अश्रु बहाने के लिए मजबूर होता है। तुम नहीं जानती हो तुम्हारे अंक से वंचित मन कितने आहत हो जाते है। शायद न उड़ने की पीड़ा बिना पर वाले पंक्षी ही अच्छी तरह जान पाते है। तुम्हें पता नहीं कि जो तुम्हारे दिल में जगह पाता है वह स्वयं को कितना धन्य मानता है और तुम जिसे नकार देती हो वह कितना व्यथित होता है। हम उन्मुक्त गीतकार अपनी गीत सुनाकर तुम्हारे दिल में जगह बनाने के लिए एड़ी–चोटी एक कर देते है। कभी–कभी सोचने लगता हूँ कि तुम्हारे हृदय में जगह सीमित है या तुम बहुत ज्यादा स्वाभिमानी हो। इसलिए प्रत्येक को अपने हृदय में स्थान नहीं देती हो। नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। शायद तुम्हारे हृदय के द्वार को छोटा बनाया गया है। तुम्हारे सागर रूपी हृदय को मोटी दीवार एवं छोटे द्वार से ही निर्मण बनाया गया है। क्योंकि हृदय में अपार जगह रखने वाला सागर दूसरे की अपवित्रता से स्वयं को अपवित्र कर लेता है एवं नाविक की प्यास को नहीं बुझा पाता है।

मैं तो भूल ही गया था कि तुम साठ वर्ष की दहलीज़ पार कर चुकी हो। न जाने कितनों ने तुम्हें अपनी व्यथा सुनायी होगी। न जाने कितने मनीषियों के स्पर्शपान से धन्य होकर हमारी तपःस्थली का गुणगान करती हो। मेरी अरूणिम शिखा भी तुम्हारे चरण से तुच्छ है।

''तुम निर्माण की हो प्रेरणा,
उँकेरती लघुबीज में विराट् की संभावना।
कहाँ तुम पूर्णिमा की चाँदनी हो,
वहाँ मैं चौथ का चाँद।

मेरा यह लधु जीवन छल, प्रपंच, कालकूट से भरा पड़ा है और तुम अमृतधारा की संवेदना से भरी हो। तुम अमर हो और कम–से–कम एक वर्ष के लिए किसी की मधुरगीत को अमर कर देती हो।

तुम ज्ञान के वटवृक्ष बनकर अपने आलोक से हर तम को पराजित करती हो। फिर भी तुम नित्य नवीन गीत गढ़ने के लिए मुझे ललकारती हो। पर मैं तुम्हारे हर ललकार में असफल रहा हूँ। क्योंकि तुम हमेशा नयी भावना को आत्मसात् करती हो और एक मैं हूँ जो नयी भावना की परिरेखा गढ़ना भी नहीं सीखा। अब पुस्तकालय के और पुस्तकों को पलटने का साहस नहीं होता। सघन कानन की डालियों पर चिंतन करते–करते थक चुका हूँ। आँखें बंद करता हूँ तो पिछले वर्ष तुम्हारे विमोचन वाली घड़ी याद आती है जब तुम माथे पर हीरे की बिंदिया लगाकर चमचमाती हुई पधारी थी। मैं आशा के दीप जलाए बैठा था। सोचा कि हृदय के किसी कोने में मुझे भी जगह मिली होगी। शुरू से अंत तक पलट कई बार डाला पर मैं कहीं नहीं था। सारे हँसमुख चेहरों के बीच मैं ही मायूस बैठा था। मैं अंतर्मन को कोश रहा था। काश! मेरी भी सुन लेती सर्जना। अभी भी यही सोचता हूँ कि अतीत पुनः अपनी गाथा दुहरा न दे। अगर तुम्हारी यही मर्जी है कि बिना हृदय में जगह दिए तुम मुझे विदा करना चाहती हो तो मैं एक सच्चा भक्त बनकर ही खुश हूँ।

क्योंकि सृजन के संसार में असृजित हो ... सर्जना।

क्या मैं बोलूँ क्या मैं पूछूँ हो
चुका हूँ किंकर्त्तव्यविमूढ़
आज उतरी है निशा की चाँदनी
सुन लो मेरे गीत मधुर ...।

अमृत राज
31

बदसलूकी में भी मेरा भारत महान

हमारा भारत हर क्षेत्र में महान है, वह किसी भी क्षेत्र में पीछे कैसे रह सकता है। चाहे वह वीरता का क्षेत्र हो, या परोपकार का या निर्धनता का, अश्लील हरकतों का।

कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, लेकिन वर्त्तमान परिवेश को देखते हुए लगता है कि हमसे ज्यादा सामाजिक प्राणी पशु हैं और मनुष्य असामाजिकता की ओर बढ़ता चला जा रहा है। हमारे देश भारत में ही अनेक निर्लज्ज निर्मम और निर्दयी लोग रहते हैं जो प्रतिदिन बेधड़क घिनौना अक्षम्य अपराध करते हैं और चाँदी का जूता मारकर पुलिस की हिरासत से कॉलर हिलाते हुए निकल आते हैं। नैतिकता का अभाव मनुष्यों में स्पष्ट देखा जा सकता है, यह आपको अब किताबों में ही मिलेगी।

आज किसी भी अखबार के किसी भी पन्ने को पलटे तो बदसलूकी, भ्रष्टाचार के समाचार ही दृष्टिगोचर होते हैं। चोरी हत्या अपहरण, मारपीट, लूट, दुष्कर्म आदि कुकर्मी वाली घटनाएँ ही अखबारों का मूल तत्व होती है। सौ में दस ही अच्छे एवं शिक्षा प्रद समाचार रहते हैं। हम इस वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ सकते कि 'अखबार सामाजिक गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करता हैं।

कितना बदल गया है जमाना, एक स्त्री अकेले घर से बाहर निकलने से डरती है। आखिर क्यों? वह हमारी बेटी, माँ या बहन नहीं है क्या इसलिए। सच कहूँ तो मुझे लज्जा होती है इस संसार में एक भी क्षण बिताने में। जिस देश में कमजोर, लाचार, बेईमान, गरीब रहते हो; जहाँ नारियों का सम्मान न होता हो वह देश कितना भी साक्षर और उन्नत हो जाए सभ्य और शिक्षित नहीं हो सकता। भारत साक्षर है शिक्षित नहीं। यहाँ विद्यालयों शिक्षण संस्थानों पुलिस सेवाओं, के होने का औचित्य ही क्या है? जब वे किसी नागरिक को संवेदनशील व ईमानदार नहीं बना सकते। अपराधियों को उचित दंड दिये बगैर ही बरी

कर देते हैं।

मैं इस तरह की अनुचित हरकतों का कुछ श्रेय फिल्म जगत के सितारों को देना चाहूँगा। उनको धिक्कार इसलिए कि उनकी, व्यावसायिक हरकतों ने मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है।

ठीक है सारी बुराईयों के लिये फिल्म जगत को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता पर उन्हें अपना कर्त्तव्य जरूर याद दिलाया जा सकता है। उन्हें भारत देश के प्रति भी कुछ करना चाहिये, यह बताया जा सकता है। सबों का अपना–अपना नजरिया होता है। हम सबों का नजरिया नहीं बदल सकते पर जब आप समाज में होते हो तो व्यक्तिगत नजरिये को नजर अंदाज और करणीय आचरण व्यवहार किया जाना चाहिए।

''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए''।

हरदीप महतो
320

हम विद्यार्थी और हमारा देश

हम विद्यार्थी जिस तरह की निष्ठा अपने विद्यार्जन के प्रति रखते हैं, वैसी ही निष्ठा हमें अपने देश के प्रति रखनी चाहिए। किसी भी देश की प्रगति में वहाँ के नागरिकों का बहुत बड़ा योगदान होता हैं। देश की प्रगति में एक मजदूर का वही योगदान होता है जो एक वैज्ञानिक का। देश की प्रगति में विद्यार्थी के योगदान को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अब प्रश्न उठता है कि विद्यार्थी देश की प्रगति में किस प्रकार का योगदान करता है?

विद्यार्थी का एकाग्रता पूर्वक अध्ययन करना हीं देश के प्रति योगदान है। हम विद्यार्थियों का सर्वप्रथम यहीं कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने अध्ययन के प्रति हमेशा जगरूक और सचेष्ट रहें। हमारी विद्या के प्रति सचेष्टता और जागरूकता ही देश की प्रगति की अधारशिलाएँ हैं। कहा भी गया है–'जिस देश की जनता निरक्षर और अशिक्षित हो, वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता।'

आज के हम विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार है। विद्यार्जन से हमारे विवेक और चारित्रिक गुणों में बड़ी ही तीव्रता से विकास होता है। जब तक विद्यार्थी एकाग्रचित और एकनिष्ठ होकर विद्याध्ययन नहीं करेंगे तब तक न तो हममें विषयों की सम्यक् अवगति होगी और न ही हम विषयों की जानकारी को प्रायोगिक तौर पर अपने जीवन में उतार पाएँगे।

वर्तमान समय में अपसी मतभिन्नता का रोग राजनीति अखाड़ों को छोड़कर सरस्वती के पवित्र मंदिर में प्रवेश कर विद्यार्थियों को अपने दुष्प्रभाव में लेने लगा है। यदि हम विद्यार्थी विद्याध्ययन के समय राजनीति के पचड़े में नहीं पड़ते हैं तो हमारी प्रतिभा का उत्कृष्टतम विकास हो सकता है। इससे हमारा देश भी लाभान्वित होता है।

हम विद्यार्थी प्रायः अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्याध्ययन करते हैं। जों हमें प्रधानाध्यापक वकील, ऑफिसर, डॉक्टर, शिक्षक या कलाकार बनाता है। इसके लिए हम प्राण–पण से जुटे हुए रहते हैं। यह हमलोगों की महती देश सेवा है। यह हमारा देश को महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यदि हम अपने उद्देश्य में सफल होते है तो देश को सफल वकील, डॉक्टर, शिक्षक, ऑफिसर और कलाकार की उपलब्धि होती है।

यदि हम विद्यार्थी राजनीति के पचड़े में न पड़कर अपनी प्राप्त विद्या से और देश को लाभान्वित करने की दिशा में आगे बढ़े तो इससे हमारे समाज और देश का बहुत बड़ा कल्याण होगा। अवकाश के

दिनों में विद्यार्थी चाहे तो साक्षरता अभियान चला सकते है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर अशिक्षित ग्रामवासियों में चेतना की लहर पैदा कर सकते हैं। कई ऐसे विद्यालय और महाविद्यालय है जहाँ लंबा अवकाश दिया जाता है। हम विद्यार्थी चाहे तो इन अवकाशों का उपयोग ग्रामीणों को साक्षर बनाने में कर सकते हैं। हम विद्यार्थियों में प्रतिभा ऊर्जा और क्षमता की त्रिवेणी प्रवाहित है। आवश्यकता है इनके सम्मिलन स्थल पर देश के प्रति शुभचिंतन के तीर्थराज प्रयाग की स्थापना की।

हमारे विद्यालय 'नेतराहाट' में भी लम्बें अवकाश का प्रावधान है। हम चाहें तो अपने गाँवों में अशिक्षितों को शिक्षित कर उनके ज्ञान में भी वृद्धि कर सकते हैं। यह कहने में मैं कतई संकोच नहीं करूँगा किं हमारे बीच के ही कुछ छात्र अपने गाँवों में इस कार्य को अंजाम भी दे रहे हैं। लेकिन, हमारा यह छोटा योगदान ऊँट के मुँह में जीरा के समान है क्योंकि हमारे देश के विकास के लिए हर गाँव को शिक्षित और जागरूक बनाना अतिआवश्यक है। इसके लिए हम सभी विद्यार्थी जाति को संकल्प लेने की आवश्यकता है, ताकि हमारे देश का चतुर्दिक् विकास हो सके। कई कवियों ने भी हम विद्यार्थियों से इस बात के लिए आह्वान भी किया है।

''हे बंधुओं, जब देशभर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सबसे जगमगी।
दोगे न तुम कौन देगा योग देशोद्धार में? देखों, कहाँ
क्या हो रहा है आजकल संसार में?''

प्रेम कुमार
171

शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार

शिक्षा ही राष्ट्र का मर्मस्थल है। यही राष्ट्र की रीढ़ है, जिसके ऊपर राष्ट्ररूपी इमारत खड़ी है। शिक्षा द्वारा बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का सर्वांगीण विकास होता है, जिससे वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। शिक्षा केवल ज्ञान का दान ही नहीं करती, बल्कि संस्कार का निर्माण भी करती है। डॉ० हरिशंकर शर्मा शिक्षा का महत्व ''मानवता का मार्गदर्शन, मन–वचन कर्म में शुचिता–समता लाना, तन–मन आत्मा को विमल बलिष्ठ बनाना ताथा–ज्ञान–विज्ञान का मर्म–महत्व बताने में'' मानते है।

झारखण्ड अलग राज्य निर्माण के बाद यहाँ कई तब्दीलियाँ आती है–उद्योग, शिक्षा, व्यापार इत्यादि में। रोजगार उन्मुखी कार्यक्रमों का विकास हुआ है। स्कूलों, कॉलेजों के पाठयक्रम में, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की संख्या में वृद्धि हुई है। साथ ही कई, निजी संस्थान भी इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। झारखण्ड में शिक्षा व्यवस्था कहीं भी केवल सरकारी प्रयत्नों के द्वारा बड़े स्तर पर सुधारी नहीं जा सकती। इसमें जन–सहयोग और जनता की सतत भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह भागीदारी केवल नाममात्र की न होकर सम्मानपूर्ण होनी चाहिए। राज्य ने इस दिशा में अनेक प्रयास प्रारम्भ किये है। ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत स्थानीय समुदाय के अधिकर एवं उत्तरदायित्व दिये गये है। सभी दृष्टिकोण यही होगा कि शिक्षा व्यवस्था का संचालन जाने–माने अनुभवी शिक्षाविदों के द्वारा ही होना चाहिए, क्योंकि शिक्षा व्यवस्था अपने आप में विशेषज्ञता की आवश्यकता को नकार नहीं सकते। मेरा दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा की प्राथमिकता राष्ट्रीय सुरक्षा के स्तर पर ही लानी होगी, तभी राष्ट्र की आन्तरिक शक्ति और बाह्य सुरक्षा अपने अपेक्षित पर पहुँच सकेगें।

शिक्षा का लक्ष्य मानव का बहुमुखी विकास उसका बौद्धिक, भौतिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास होना चाहिए। युवावर्ग एक ऐसा दर्पण होता है जिसमें राष्ट्र का भविष्य पूर्णतः प्रतिबिंबित होता है। विश्व में देश की स्थिति का संरक्षण, अनुरक्षण और प्रगति करने के लिए अत्यावश्यक है कि पूर्ण प्राथमिक स्तर से प्रारम्भ होनेवाला मूल्य आधारित शिक्षा का एक सर्वांगपूर्ण कार्यक्रम बनाया

जाय तथा उसमें शैक्षिक प्रक्रिया के समस्त कार्यो को शामिल किया जाय।

शिक्षा का व्यापारीकरण और निजीकरण हटायें। धर्म–निरपेक्ष, प्रजातांत्रिक तथा वैज्ञानिक शिक्षा को प्रोत्साहन दे। अपने सभी भाषाओं के विकास हेतु सुझाव दें, ताकि शिक्षा के सर्वोच्च स्तरों पर मातृभाषा में शिक्षा देना संभव हो, साथ ही साथ कथा से ही अंग्रेजी भाषा का प्रावधान हो। अगर हमें अपने राज्य का विकास करना है, तो हमारा मिशन होना चाहिए, कौशल विकास और कौशल विकास कार्यक्रमों को मिशन के अन्तर्गत–तालमेल के साथ चलाने के लिए प्रयास किया जाय।

राज्य कौशल विकास और उद्यमशीलता नीति लागू किया जाय। जिससे बड़े पैमाने पर तेजी से उच्चस्तरीय कौशल बढ़े पैमाने पर तेजी से उच्चस्तरीय कौशल बढ़े और सभी के लिए जीविका सुनिश्चिता हो, जिससे झरखण्ड के युवाओं को लाभ मिलेगा। युवाशक्ति और युवा माता–पिताओं के मानस को लक्ष्य मान कर बनाई गई शिक्षा की रणनीति ही राज्य के हित में होगी।

आज की शौक्षिक आवश्यकताओं को समझने वाले शिक्षाविदों, अध्यापकों शिक्षकों तथा प्रशिक्षकों ने मौलिक गुणों जैसे–नियमितता, समय पाबन्दी, स्वच्छता, आत्मसंयम, श्रम, सेवा भाव, सृजनात्मक, समानता, बंधुत्व, तथा अन्यमूल्यों के प्रति संवेदनशीलता को विकसित करने की आवश्यकता पर बल देने हेतु इन विशिष्ट लक्ष्य को सम्मिलित करने हेतु सुझाव हो शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास है। सोच यह है कि पढ़ाई के साथ–साथ हर क्षेत्र में उन्हें सफलता हासिल हो। व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा माध्यमिक स्तर पर पाठयक्रम में जोड़ने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। डिजिटल शिक्षा को दृष्टि क्षेत्र में रखते हुए माध्यमिक विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा के व्यापक रूप से लागू किया जाय जिससे राज्य के छात्र आधुनिक तकनीक आधारित शिक्षा में पीछे न रहे। राज्य शैक्षिक शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के द्वारा शिक्षक के लिए पाठ्यचर्या एवं पाठयक्रम निर्माण शिक्षा के क्षेत्र में किये जाएँ। पाठ्यक्रम में बाल–विवाह, बालश्रम शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, बाल अधिकार, मानवाधिकार, वन एवं खनिज, झारखण्ड राज्य के पर्व को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके बच्चों को जानकारी दी जाए, जिससे शिक्षा का प्रभाव बच्चों पर पड़ेगा। झारखण्ड की कुल आबादी 3.29 करोड़ है जबकि साक्षरता दर 67.63 प्रतिशत हैं। पुरूषों में जहाँ साक्षरता दर 78.45 प्रतिशत है। महिलाओं का साक्षरता दर 56.21 प्रतिशत है। उक्त आँकड़े से स्पष्ट होता है कि बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से अगले सत्र 2016–17 से वित्तीय साक्षरता कर निर्धारण जाँच की शुरूआत की जा रही है।

जैक भी 8वीं से 10वीं कक्षा के लिए वित्तीय शिक्षा पाठ्यक्रम शुरू कराने के लिए प्रयास किया जाय। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अब लेगा स्कूलों के बैंक खाता की जानकारी, इस तरह से जैक भी राज्य के सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों के बैंक खाता की जानकारी रखने हेतु सुझाव है। एक से अधिक खाता नहीं होगा। प्राचीन काल में गुरूकुलों में प्राथमिक रूप से विद्यार्थी के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता था। आज भी नेतरहाट आवासीय विद्यालय इसका उदाहरण है। स्काउट गाइड जीवन जीने की कला सिखाता है। बच्चों में अनुशासन सिखाने में स्काउट गाइड जिम्मेवारी निभा रहा है। झारखण्ड के सभी विद्यालयों में एन. सी. सी. (NCC) और स्काउट गाइड की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाय।

सम्प्रति आवश्यक है कि शिक्षा को रोजगारपरक व्यावसायिक, क्रियात्मक एवं व्यावहारिक बनाया जाय, जिससे शिक्षा प्राप्त कर युवा आत्मनिर्भर बनकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र को गौरवान्वित कर सकें।

डॉ. प्रसाद पासवान
अर्थशास्त्र विभाग

मेरे देश की धरती

मेरे देश की धरती सोना उगले - उगले हीरे मोती, मेरे देश की धरती।

आप सब इस गाने से तो वाकई परिचित होंगे। लोग बहुत ही श्रद्धा पूर्वक इस गाने को धरती माता की याद में गातें हैं। हम तो इसे बहुत ही आसानी से माता कहकर संबोधित करते हैं। परन्तु क्या हमें सचमुच इन्हें माता कहने का पूरा हक है? जो हम प्रतिदिन इन्हें भूखे एवं खतरनाक चूहों की भाँति कुतरते जा रहे हैं।

धरती माता के श्रृंगारों की हम अपने हाथों से इस प्रकार लूट रहे हैं, जैसे कोई प्रतियोगिता चल रही हो। इनके हरे–हरे लहराते, बलखाते जटारूपी केसों को हम प्रतिदिन उखाड़कर अपनी स्वार्थ की चीजें बनाने मे लगे हैं। इसके लगातार ह्रास से पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। सही समय पर वर्षा नहीं हो रही है। जिसके कारण कृषि कार्यों में इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अकाल जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है। लोग गाँव छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। आजकल तो ऐसे गाँव भी देखने को मिलते हैं जहाँ केवल स्त्रियाँ एवं छोटे बच्चों के अलावा कोई नहीं है। सारे पुरूष अपने परिवार की रोजी–रोटी हेतु शहरों में चले गए हैं। सोचता हूँ गरीबी की नजर से देखा जाए तो यह सब एक वरदान है, जिससे करोड़ों गरीबों के पेट भर रहे हैं। धरती माता के शरीर मे व्याप्त माँसपेशियों के समान खनिज पदार्थों को हम आकाश में विचरण करते खुँखार चीलों की भाँति नोच – नोचकर निकाल रहे हैं। लोंगों के इस कुकर्म से यह खोखली होती जा रही हैं मनुष्य इन पदार्थों से विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण कर रहा है, जो मानव निरंतर आलस्य की बेड़ियो में बँधता चला जा रहा है।

उनके शरीर में व्याप्त रक्तों के समान पेट्रोलियम को प्यासे मच्छरों की तरह चूस–चूस कर निकाला जा रहा है। उनके देह पर बड़ी–बड़ी सूईयाँ लगाई जा रही हैं। इससे वह घायल अवस्था में है। उनसे इतनी पीड़ा नहीं सही जा रही है। इसलिए कभी–कभी वह लड़खड़ा जाती है।

आधुनिक मानव तकनीकी क्षेत्र में वृहत् विकास कर चुका है। आधुनिक लेकिन प्रेम ज्ञान का बिलकुल गरीब। आज मानव तकनीकी क्षेत्र में इतना विकास कर चुका है कि वह विभिन्न प्रकार के विषैली हानिकारक पदार्थों का निर्माण कर रहा है। इन विषैले पदार्थों से अनेक कोमल देह पर दाग पड़ रहे हैं। असहाय जुल्म के कारण यह दिन प्रतिदिन कुपोषित होती जा रही है। यदि आज से ही हम इनके संरक्षण के लिए कोई कदम नहीं उठाते हैं तो अवश्य ही एक दिन यह अपना दम तोड़ देगी। आज के युग में पृथ्वी को अंतरिक्ष से देखने पर ऐसा लगता है मानों किसी मिठाई पर असंख्य मक्खियाँ एवं कीड़े लगे हों। अर्थात् उनकी स्थिति बहुत दयनीय हो गई। धरती माता का भी अपने पुत्रों से विश्वास का परदा हट गया है। इसलिए वह कभी–कभी स्वयं ही अपनी सुरक्षा का दायित्व संभालती है। और विभिन्न प्रकार की आपदायें (भूकंप, ज्वालामुखी, सुनामी, आँधी, इत्यादि) लाकर अपने दुश्मनों का नाश करती है। यदि आज से ही हम लूट को इस प्रतियोगिता को समाप्त नहीं करेगें तो अवश्य ही एक दिन पृथ्वी का विनाश निश्चित है। यदि हमारे इस निर्दयी आत्मा के भीतर थोड़ी सी भी दया नाम की कोई वस्तु है, तो आइए आज से ही हम पृथ्वी के संरक्षण हेतु संकल्प लें। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगायें खनिजों के खनन को रोके, वायु को प्रदूषित करने वाले मशीनी उपकरणों का उपयोग कम करें। ताकि वातावरण स्वच्छ एवं निर्मल रहे।

घनश्याम सोय
तृतीया वर्ष

निकुंज निलय नेतरहाट

सर्वप्रथम जिन मनीषियों ने नेतरहाट विद्यालय की स्थापना के लिए इस स्थान की परिकल्पना की उन्हें मेरा शत–शत नमन। परिवर्त्तन ही सृष्टि का नियम है और यह यथार्थ सत्य भी है। इस मनोरम पठार के कई भागों में सदैव बदलाव होते रहते है और परिवर्तन के साथ–साथ विकास भी। खासतौर पर जब से इस पठारी भू–भाग पर विद्यालय स्थापना के स्वर्णिम स्वप्न की परिकल्पना की गई इसकी उन्नति के सभी मार्ग एक–एक कर खुलते गए। आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े बिहार राज्य में एक अनूठे और अद्भुत विद्यालय की स्थापना की परिकल्पना की गई। उसी परिकल्पना के अनुसार गुरूकुल परंपरा के आदर्श एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के सामन्जस्य के साथ नेतरहाट विद्यालय की स्थापना की गई। यह कार्य तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री जगदीश चन्द्र माथुर, जो स्वयं एक साहित्यकार एवं दूरद्रष्टा थे, को दिया गया। सन् 1951 में श्री माथुर ने महान शिक्षाविद् एफ.जी. पियर्स के सामने इस प्रस्ताव को रखा। पियर्स साहब की खोज शुरू हुई, जैसे एफ.जी. पियर्स साहब के पाँव इस पठार की धरा पर पड़े, उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी खोज यहीं समाप्त हो गई।

विराट दृष्टि के साथ देखे गए स्वप्न अवश्य पूरे होते हैं। नेतरहाट विद्यालय समाज के विभिन्न वर्गो से आने वाले छात्रों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को पूरा करने में सफल रहा। स्वभाविक तौर पर नेतरहाट विद्यालय का प्रभाव इस पठार और आस–पास के समाज पर भी पड़ा। इस विद्यालय ने अपनी क्षमता और महानता से सभी आलोचनाओं का मुँह बंद कर दिया। यह विद्यालय एक ऐसी संस्कृति के साथ स्थापित हुआ, जिसने पूरे पठार को प्रभावित किया और एक नई संस्कृति का उदय आरम्भ हुआ।

विद्यालय की स्थापना शिक्षा जगत में निर्धन व मेधावी छात्रों को उनका स्थान और उनके चरित्र निर्माण से स्वच्छ समाज के निर्माण के उद्देश्य से की गई थी। जब विद्यालय की स्थापना इस विरल पठार पर की गई तो यहाँ के अविकसित क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा मिला और साथ ही यहाँ निवास करने वाली आदिवासी जनजाति को मुख्यधारा से तो अवश्य जुड़ते, लेकिन विद्यालय की स्थापना से इस कार्य में असीम गति प्राप्त हुई। यहाँ के लोगों को रोजगार के साधन भी प्राप्त हुए। लोग अब अपने पैतृक पेशे पर ही निर्भर न रहे वह रोजगार के अन्य साधन भी तलाशने लगे। विद्यालय के लिए उपलब्ध सुविधाओं का लाभ यहाँ के स्थानीय लोगों को भी प्राप्त हुआ। उदाहरण स्वरूप सड़क निर्माण, बिजली आपूर्ति के लिए डैम जैसी मूलभूत आश्वयकताएँ प्राप्त हुई। वास्तव में अगर हम देखें तो विद्यालय की स्थापना के समय आजादी के कुछ वर्ष ही हुए थे और उस समय ऐसे विरल जनसंख्या वाले जंगली पठारी भाग पर विकास न के बाराबर रहा होगा। लेकिन विद्यालय की स्थापना से इस क्षेत्र के विकास के सभी दरवाजे खुल गए। चूँकि उस समय पूरे देश में कुछ ही ऐसे विद्यालय थे। तत्पंश्चात् विद्यालय की संस्कृति ने यहाँ की संस्कृति के साथ मिलकर एक नई मिश्रित संस्कृति का निर्माण करना शुरू किया।

मेरा मानना है कि समय के साथ विद्यालय परिवार बढ़ता गया और साथ ही उनकी आवश्यकताएँ भी। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विद्यालय के निकट ही स्थानीय बाजारों का प्रादुर्भाव हुआ होगा और धीरे–धीरे यहाँ के कुछ स्थानीय निवासी व्यापार के क्षेत्र में आ गए।

कालान्तर में यहाँ के शिक्षकों को द्वारा ही इस क्षेत्र में दुर्गापूजा जैसे पावन पर्व के आयोजन की पहल की गयी। यहाँ एक बात जो बहुत दिलचस्प है वह यह है कि दुर्गापूजा जैसे पावन पर्व पर यहाँ के सभी विद्वान् शिक्षक एवं सभी स्थानीय लोग दुर्गामंदिर के प्रांगण में जमीन पर बैठकर एक साथ प्रसाद ग्रहण करते है। एक ओर जहाँ स्थानीय एवं जनजातीय पर्वो का आयोजन होता है तो दूसरी तरफ होली, दुर्गापूजा, दीपावली जैसे महापर्व का भी आयोजन होता है,

जिससे यहाँ की स्थानीय संस्कृति एक मिश्रित और व्यापक संस्कृति में बदलती गयी। साथ–ही–साथ विद्यालय की संस्कृति एवं स्थानीय संस्कृति का सामन्जस्य स्थापित होता गया और विद्यालय परिवार निरंतर वृहत् से वृहत्तर होता चला गया।

इस मनोरम छटा वाले प्राकृतिक संपदा सम्पन्न पठार पर पर्यटकों का सदैव ताँता लगा रहता है। साथ–ही–साथ विद्यालय से जुड़े पूर्ववर्ती छात्रों–शिक्षकों व अन्य सदस्य अपनी यादों को तरोताजा करने के लिए सदैव आते रहते है। अतः पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार ने भी इस क्षेत्र में काफी काम किया है और इस क्षेत्र में आगे भी कार्य होते रहेंगे।

छात्रों की सुविधा के लिए यहाँ सहकारिता का निर्माण किया गया है। जिसका फायदा यहाँ के स्थानीय निवासियों को भी होता है। यहाँ के छात्रों और शिक्षकों की आवश्यकतानुसार यहाँ पर दूरभाष से बातचीत करने के लिए बी.एस.एन.पल. का टॉवर और एक्सचेंज भी बनाया गया। जिससे इस पिछड़े क्षेत्र में भी आधुनिक दूरभाष की सुविधा पहुँच गई। यहाँ के शिक्षकों और कर्मचारियों को वेतन प्राप्ति एवं स्थानीय लोगों को मुद्रा संचित करने के लिए बैंक की सुविधा भी प्रदान की गई है। अब तो यहाँ पर आधुनिक तकनीकी से लैस A.T.M. की भी सुविधा उपलब्ध हो गई है। गौर करने की बात यह है कि ये बैंक, A.T.M. सहकारिता और एक्सचेंज की सुविधाएँ विद्यालय प्रांगण में या इसके समीप ही स्थित है।

इस विद्यालय में पढ़ा हर छात्र भले ही इस पठार का स्थानीय निवासी हो या ना हो लेकिन इन छात्रों की आत्मा इस पठार से एक भावनात्मक सूत्र से बँधा ही रहता है और ये छात्र सदैव पठार की प्रगति के लिए सोचते रहते हैं।

झारखण्ड राज्य के गठन के पश्चात् नेतरहाट विद्यालय इस राज्य का अंग बन गया। नए परिवेश में नेतरहाट की परंपरागत संस्कृति के संरक्षण एवं विकास के नए आयाम के उद्घाटन के लिए 'नेतरहाट विद्यालय समिति' की स्थापना की गयी। इस समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य पद के लिए यहीं के छात्रों एवं शिक्षकों को जोड़ा गया है, क्योंकि यहाँ के छात्रों और शिक्षकों के दिल में इस विद्यालय व पठार के प्रति सर्वाधिक स्नेह और लगाव होता है। समिति की स्थापना के साथ ही इस विद्यालय के विकास की गति थोड़ी और तेज हो गई और साथ ही इस पठार की भी। जिससे यहाँ के स्थानीय लोग भी लाभन्वित होते गए। हमारे विद्यालय के वर्त्तमान सभापति श्री नरेन्द्र भगत जी और हमारे प्रधानजी सदैव ही इस विद्यालय के विकास के साथ ही पठार के स्थानीय निवासियों के विकास के बारे में भी बात करते रहे हैं। इसी सोच के साथ उन्होंने यहाँ के स्थानीय लोगों और विद्यालय के लिए नर्सरी की भी व्यवस्था करवा दी है, जिसमें उन्नत किस्म के बीजों का उत्पादन किया जाएगा और इन उन्नत किस्म के बीजों से यहाँ के आदिवासियों की कृषि व्यवस्था भी उन्नत होगी। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी। इसी क्रम में विद्यालय के पूरे कैंपस में एवं मुख्य सड़कों पर सोलर पैनल चालित स्ट्रीट लाइट की भी व्यवस्था की गई है, जिसका फायदा सिर्फ विद्यालय को ही नहीं बल्कि पूरे पठार को होता है। हाल ही में विद्यालय में नियुक्त किए गए तृतीय और चतुर्थ वर्गीय कर्मचारियों में लातेहार और इसके आस–पास के क्षेत्रों के स्थानीय लोगों को प्राथमिकता दी गई। हाल ही में विद्यालय समिति द्वारा पूरे विद्यालय कैपस और इसके आस–पास के क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा के लिए वाई–फाई जोन बनाने का प्रस्ताव भी आया है। जिससे न केवल विद्यालय को वरन् यहाँ आनेवाले पर्यटकों व स्थानीय लोंगों को भी फायदा मिलेगा।

इस तरह से अगर देखा जाए तो मेरा मानना है कि विद्यालय और पठार के लोगों दोनों का विकास एक–दूसरे के पूरक हैं। जैसे–जैसे विद्यालय विकसित होता जाएगा, वैसे–वैसे ही यहाँ की स्थानीय स्थिति का भी विकास होता जाएगा।

सूरज कुमार
225

प्रतिभा पलायन

प्रतिभा पलायन भारत की ऐसी गंभीर समस्या है, जो क्षतिकारक और शर्मनाक दोनों ही है। हमारे देश की बेजोड़ प्रतिभाएँ दूसरे देश के लिए लाभकारी हो जाती है और हम अपने यहाँ उन प्रतिभाओं को तैयार करके भी असली वक्त में उनका लाभ नहीं ले पाते हैं। हम अपने प्रतिभाओं का प्रतिपालन और संरक्षण सही ढंग से नहीं कर पाते हैं और दोयम दर्जे की प्रतिभाओं से संतोष करते है। एक सर्वे के अनुसार प्रतिवर्ष भारत से लगभग 10,000 से अधिक प्रतिभाएँ विदेश चली जाती हैं। दुनिया के विकसित देश हमारी प्रतिभा का लाभ लेते है। हमारे यहाँ के होनहार नौजवान पहले से ही सोच लेते है कि पढ़ाई–लिखाई पूरी करने के बाद भारत में हमारे लिए कोई गुंजाइश नहीं है। उदाहरण के लिए I.I.T. से तैयार निकले छात्रों में से 25 प्रतिशत छात्र विकसित देशों में प्रवासी जीवन बिताते हैं, अपने यहाँ से चिकित्सा, इंजीनियरिंग, आदि क्षेत्रों में काफी मात्रा में प्रतिभा का प्रवाह पश्चिम की ओर है। एक आँकड़े के अनुसार 30–40 प्रतिशत इंजिनियर, 28 प्रतिशत चिकित्सक और 15–20 प्रतिशत वैज्ञानिक विदेशों की सेवा करते है। अभी सबसे अधिक संख्या में सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े लोग विदेश जा रहे हैं विदेश जाना बुरा नहीं है। विदेशों की शिक्षा ग्रहण अथवा विदेश भ्रमण या कुछ दिनों का प्रवास बुरा नहीं है। बुरा यह है कि हमारे यहाँ के प्रतिभा संपन्न लोग विदेशों की नागरिकता हासिल कर वही जीवन व्यतीत करते हैं, वहीं की संस्कृति में रम जाते हैं। वे भारतीय मूल प्रवासी कहलाने में गर्व करते हैं। इस प्रवृति को ज्यादा पनपने नहीं देना चाहिए।

हमारे देश में महापुरूषों में से अधिकांश ने विदेशों में ही शिक्षा ग्रहण की। परंतु विदेशों से लौटने के बाद क्या मातृभूमि के प्रति इनके विचारों में कोई उदास हीनता आयी थी? ऐसा नहीं होता है। देश भक्ति की भावना शाश्वत होती है।

फिर भी अपने देशों के प्रतिभा संपन्न नौजवान अपने जोश और उमंग और निष्ठा से कर्त्तव्य पालन की भावना से दूसरे देश का कल्याण करें सिर्फ इसलिए की उनकी जीविका तथा धनोपार्जन हो सके। अपने देश के लिए यह शुभ संकेत नहीं है। डॉलर और पौण्ड का आर्कषण उन्हे खींचे ले जाता है न कि वे विदेश का शुभ सोचकर जाते हैं। यह तो सच है कि भारत में प्रतिभाशालियों को नौकरी के अभाव में सड़कों पर धूल फाँकते देखा जा सकता है। भारत में करोड़ों पढ़े–लिखे नौजवानों की इसके लिए पूर्णतः जिम्मेदार है। इस बेरोजगारी को पैदा करने वाले शिक्षा प्रणाली और सरकार पूर्णतः जिम्मेदार है। इन प्रतिभाओं से लाभान्वित होनेवाले देश इन अप्रवासियों की भूल से भली भाँति अवगत होते है, इसीलिए उनकी आव्रजन नीति ऐसी होती है जिससे प्रतिभा पलायन को बढ़ावा मिलता है।

प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए भारत में अपेक्षित सुविधाएँ नहीं हैं। वित्तीय सहायता नहीं पाती है। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता उत्पन्न नहीं हो पाती है। जिससे भारतीय नौजवान दिग्भ्रमित हो जाते है। भारतीयों की हीन भावना और अपनी संस्कृति से विमुख भी महत्वपूर्ण कारण है। सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उनकी हीनभावना दूर हो और अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा हो।

हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारी प्रतिभाओं की कद्र विदेशों में हो रही है। लेकिन इन प्रतिभा का लाभ विदेशों को मिल रहा है। अतः हमें स्थिति से उबरना होगा। अपनी खनिज सम्पदा का उपयोग कर अपनी क्षमता बढ़ानी होगी तभी भारत एक संपन्न राष्ट्र बन पायेगा।

शिवाधीन

39

भारतीय शास्त्रीय संगीत पर अध्यात्म का प्रभाव

संगीत और अध्यात्म अलग–अलग विषय है। तथा दोनों ही अपरिमित हैं। इनके मूल में परमानंद की प्राप्ति तथा अंततः मोक्ष प्राप्ति निहित है। दोनों मानव सभ्यता के आरंभ काल से ही हमारे उत्थान में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। संगीत की उत्पत्ति में नाद अर्थात् ध्वनि मुख्य कारक है। इसे हमारे शास्त्रों में 'नादब्रह्म' कहकर विभूषित किया गया है अर्थात् नाद ईश्वर का ही रूप है। शास्त्रों में संगीत–विद्या देवताओं द्वारा ऋषियों को तथा ऋषियों से मानव जाति को प्राप्त होने का उल्लेख है। दूसरी ओर अध्यात्म की उत्पत्ति को भी किसी कालखण्ड में बाधना शायद सहज नहीं है, परन्तु ऐसा लगता है कि विभिन्न प्राकृतिक तथा सांसारिक घटनाओं ने किसी अदृश्य शक्ति के बारे में मानव की उत्सुकता बढ़ाई होगी जो कालांतर में ईश्वर की संकल्पना तथा उनकीं आराधना का आधार बना। ईश्वर को समझने का चिंतन एवं क्रिया रूपी मानवीय प्रयास ही संभवतः अध्यात्म का कारण बना।

व्युत्पत्ति के आधार पर 'अध्यात्म' शब्द 'आत्मनि' एवम् 'अधि' के मेल से उद्भूत है। इसका तात्पर्य आत्मा से संबंद्ध होना है तथा इसमें गहन चिंतन एवं क्रिया दोनों में तादात्म्य आत्मा के स्तर पर ही होता है। यह विचार–शून्यता चिन्तन का चरम यानि बिल्कुल स्वयंप्रभुता की स्थिति होती है। ''आत्मनि' शब्द विशुद्ध रूप से आत्मा से जुड़ा है; परन्तु इसे प्राण या जीवन से रखना चाहिए। मैत्रेयी ने एक बार याज्ञवल्क्य ऋषि से पूछा था कि–कस्मिन विज्ञाते सर्व विज्ञातं भवति?'' प्रश्नोत्तर में याज्ञवल्वय ऋषि ने कहा कि 'आत्मा वा अरे दृष्टव्यः–आदि। यह कहना उचित होगा कि आत्मा एक परम प्रमेय तत्व है, जिसके अंतर में उतरने के प्रयास को ही अध्यात्म की संज्ञा दी जाती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत पर अध्यात्म का प्रबल प्रभाव है। दोनों का क्षेत्र विशाल एवं भिन्न है परंतु लक्ष्य है–मोक्ष की प्राप्ति। सर्व विदित है कि संगीत का मूलाधार नाद या ध्वनि है तथा हमारे शास्त्रों में इसे नादब्रह्म कहकर विभूषित किया गया है। श्रुति–स्वर व्यवस्था से होते हुए राग के रूप में उपलब्ध होने पर इसकी साधना संगीतज्ञों द्वारा की जाती है। वैदिक काल में सामगान द्वारा देवी–देवताओं को शघ्रातिशीघ्र प्रसन्न किया जाता था। यथा–

सामगानाद्रुतं विष्णुः प्रसीदत्य मनिधिपः।
न तथा यमयज्ञ दानाद्यैः सत्यमेतन्महामुने।।

प्राचीन काल से ही सामगान अथवा ऋचाओं का सस्वर एवं लयबद्ध पाठ करना धार्मिक अनुष्ठानों का एक महत्वपूर्ण अग रहा है। यहाँ सामगान के सांगीतिक और आध्यात्मिक पक्ष का मुख्य ध्येय आत्मा का परमात्मा में विलीन होना ही है। प्राचीन काल से ही अध्यात्म और संगीत को मोक्ष प्राप्ति के लिए समाज में सर्वमान्य साधन माना गया।

संगीत साधना के लिए हम रागों की अवतारणा करते

हैं। राग–गायन भारतीय शास्त्रीय संगीत की अति विशिष्ट पद्धति है। सच्चे शब्दों में हमें ये परमानन्द की अनुभूति प्रदान करते हैं। रागों की उत्पत्ति के संदर्भ में पं. दामोदर विरचित प्रसिद्ध ग्रंथ संगीत दर्पण के अनुसार शिव–शक्ति के संयोग से रागों की उत्पत्ति हुई है। यथा–''शिवशक्ति=समायोगाद्रागाणां संभवों भवेत्।।''

''शास्त्रों मे रागों के स्वरूप की चर्चा है, जिनका आधार पूर्णतः आध्यात्मिक है। तानसेन रचित प्रमुख ग्रंथ 'संगीतराज' में 33 रागों का वर्णन हमारे देवी–देवताओं के स्वरूप के समान किया गया है। उदाहरण स्वरूप–

राग भैरव-अष्टभुज भगवान शंकर रूप,
राग नाट्टनारायण-शंख-चक्र-गदा-पद्माधारी नारायण रूप।
राग श्रीराग-वीणाधारी पितामह ब्रह्म रूप

राग वसंत–वीण–शंख–फल–चक्रधारी देवी रूप आदि। इस ग्रंथ में सप्त स्वरों का मूर्तरूपों का भी उल्लेख मिलता है। रागों का स्वरूप देवी–देवताओं के स्परूप समान होना निःसंदेह संगीत पर अध्यात्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। विद्वानो के अनुसार इससे राग ध्यान करना सरल होता था। इसके अतिरिक्त राग गायन की विभिन्न शैलियों जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल ठुमरी, भजनादि में इष्ट को समर्पित असंख्य रचनाओं में भारतीय शास्त्रीय संगीत पर, अध्यात्म का गहरा प्रभाव झलकता है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक के लम्बे काल–खण्ड पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि वैदिक ऋचाओं से लेकर वर्तमान रचनाओं तक को विभिन्न राग–रागिनियों में निबद्ध कर गाने की समृद्ध परम्परा है। वैदिक रचनाओं के अतिरिक्त कवि जयदेव, विद्यापति, त्यागराज, मीराबाई, तुलसीदास जैसे महान् कवियों ने अपने आराध्य को समर्पित असंख्य रचनाओं को गीत–संगीत के माध्यम से संगीत के साथ अध्यात्म को सहजतापूर्वक जोड़ दिया। भारत में सनातन धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों की रचनाएँ भी ईश्वर के गुणगान में संगीत पर अध्यात्म के प्रभाव को व्यक्त करती हैं। इस्लाम धर्म मतावलम्बी गायन की विभिन्न शैलियों सूफी, कव्वाली, नाद आदि द्वारा अपने ईश की इबादत करते हैं, तो ईसाई प्रार्थना, कैरोल आदि द्वारा अपने ईश की आराधना करते हैं। यहाँ भी संगीत के विभिन्न गायन शैलियों पर विभिन्न धर्म एवं सम्प्रदायों के अनुसार अध्यात्मिक प्रभाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्षतः भारतीय शास्त्रीय शास्त्रीय संगीत पर अध्यात्म का गहरा प्रभाव है। ऐसा सर्वविदित है कि स्वर, ताल, राग आदि देवी–देवताओं को प्रिय हैं। विभिन्न भारतीय वाद्ययंत्रों को देवों द्वारा वादन का उल्लेख हमारे शास्त्रों में वर्णित है। उदाहरण स्वरूप भगवान विष्णु को शंख महादेव को डमरू तथा नृत्य श्रीकृष्ण को वंशी, सरस्वती को वीणा गणेश को पखावज वादन प्रिय है। इन तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत पर अध्यात्म का गहरा प्रभाव है।

शिशिर सौरभ
संगीत शिक्षक

अंत या शुरुआत

कहते हैं साथ रहकर साथ रहने की कीमत नहीं पहचानी जा सकती है, पर दुःख में रहकर ही दुःख को जाना जा सकता है, यह भी सत्य है।

जीवन में अच्छी बुरी घटनाएँ घटती रहती है, बुरी घटनाओं को भूलकर हम आगे बढ़ें, यह करणीय है। ऐसी ही एक कहानी है जिसे मैं भूलना चाहता हूँ बिना जाने कि ये अच्छी है या बुरी, हाँ इतना जरूर जानता हूँ कि इसका स्मरण मुझमें एक असह्य वेदना भरता है। – फिर कैसे सह लेता हूँ मैं? शायद उस वेदना में इतनी शक्ति नहीं है। पर रोता मैं अवश्य हूँ कभी–कभी बाहर से ही और कभी–कभी अंदर उस वेदना पिण्ड का ऊर्ध्वपातन हो जाता है। बचती हैं सिर्फ शुष्क सिसकियाँ।

उसके साथ रहने से मुझे पीड़ा मिली और साथ न रहने से दुगुनी पीड़ा। साथ मिलता रहा पर मिलन कभी नहीं हुआ। मिलन–जो हार्दिक था और इसी मिलन के अभाव ने मुझमें वेदना के बीज बोए अब वह बीज, बीज नहीं रहा। उसने मेरे अंतःस्थल में एक विशाल वृक्ष का स्थान ले लिया है। अब मैं उसी वृक्ष की छाँव में शांति पाता हूँ–एक अपूर्व शांति जो पहले मुझे कभी नहीं मिली।

कहते हैं लक्ष्य बड़ा रखो, तुम जरूर कुछ बेहतर पाओगे। पर अति सर्वत्र वर्जयते यह भी सत्य है।

जैसे रात का मिलन हो दिन से, भ्रम का यथार्थ से और सुख–दुःख से, हमारा मिलन भी ऐसा ही था, जहाँ एक की अनुपस्थिति ही दूसरे की उपस्थिति का प्रमाण थी।

संसार में कुछ चीजें है–जो बदले में नहीं माँगी जाती उनका स्वतः मिलना सुख देता है, न मिलना दुःख और माँगने पर भी न मिलने से बड़ा दुःख– ग्लानि और हाँ आत्मासम्मान भी नष्ट होता है। यह सोचकर कि मैंने माँगा क्यों? हम अपनी ही नजरों में गिर जाते हैं। यह भी मेरे साथ प्रकृति का अप्राकृतिक न्याय था।

मैं मुस्कराना भूल गया, मेरा चंचल मन शिथिल हो गया और इसे जन्म दिया एक समझौते ने जो वर्ष भर पहले किया जा चुका था, पर मैं इससे पूरी तरह अनभिज्ञ था इसी अनभिज्ञता के कारण मैं कभी–कभी खुश हो जाया करता था।

किसी को अपना बनाने से ज्यादा खुशी किसी के हो जाने में मिलती है ऐसा मैं समझता हूँ। पर खुद को अस्वीकार्य जानकर अपार दुःख होता है, यह भी सत्य है। खुद से प्रेम करना खुशी का श्रोत है पर अब जब ''मैं लायक नहीं'' यह जान गया तो इस 'अपने–आप' से भी घृणा होती है।

खुद से प्रेम करता कोई आसान काम नहीं है पर मैं कोशिश करूँगा, यह तभी होगा जब मैं जान पाऊँ कि मैंने किसी से प्रेम किया ही नहीं।

और तब मैं निजात पा जाऊँ उस विशाल वेदना वृक्ष से और खो दूँगा उस छाँव को जो मुझे अपूर्व शांति प्रदान करती है।

सुमन शेखर
02

बहुत याद आते हैं कलाम!

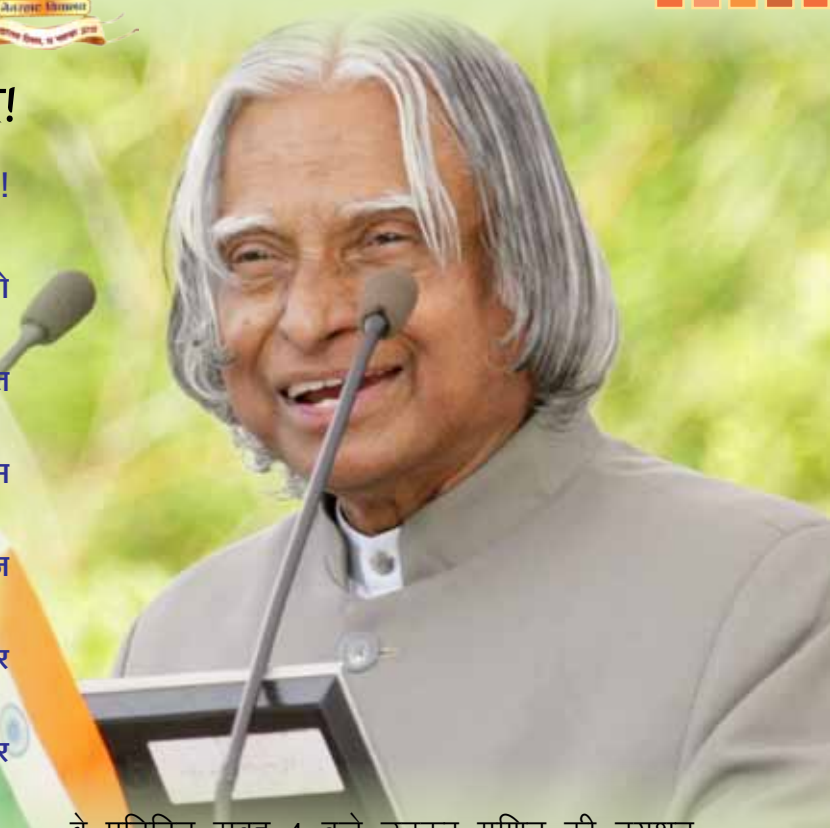

जन-जन के कलाम इस दुनिया को छोड़कर चले गये!
भारत के एक दुलारे संतान चले गये!!
विश्व मानवता के प्रतिग्रीवा के हार हम सब को छोड़कर चले गये।
जाति-पाँति, रंग-भेद से ऊपर उठकर जीने वाले भारत माँ की एकलौती संतान गोद सूनी कर गयी।।
सभी मजहब से प्रेम करने वाले जन-जन के कलाम चले गये।
देश के मिसाइल मैन कहे जाने वाली संतान आज नहीं रही।।
देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति आज हम सब को छोड़कर चले गये।
बच्चों के कलाम, छात्रों से ही बात-चीत करते रहे और छात्रों से ही बात-चीत करते चल बसे।।
भारत को उन्नत राष्ट्र बनाने वाले जन-जन के कलाम आज नहीं रहे।।

चमत्कारिक प्रतिभा के धनी डॉ० अबुल पाकिर जैनुल आब्दीन अब्दुल कलाम भारत के ऐसे पहले वैज्ञानिक हुए जो देश के राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। वे देश के तीसरे राष्ट्रपति हुए, जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व देश के सर्वोच्च सम्मान ''भारत रत्न'' से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही देश के इकलौते राष्ट्रपति हुए, जिन्होंने आजन्म अविवाहित रहकर देश–सेवा की।

विज्ञान को जन–जन से जोड़ने वाले और विद्यार्थियों के बीच सबसे अधिक लोकप्रिय रहे 'अब्दुल कलाम' का जन्म 15 अक्टुबर 1931 को तमिलनाडू के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता जैनुल आब्दीन नाविक थे। वे पाँच वक्त के नमाज़ी थे और दूसरों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते थे। कलाम की माता का नाम आशियम्मा था। वे एक धर्मपरायण और दयालु महिला थीं। सात भाई–बहनों वाले परिवार में कलाम सबसे छोटे थे।

कलाम का बचपन संघर्षपूर्ण एवं अभाव ग्रस्त रहा। वे प्रतिदिन सुबह 4 बजे उठकर गणित की ट्यूशन पढ़ने जाया करते थे। वहाँ से 5 बजे लौटने के बाद वे अपने पिता के साथ नमाज पढ़ने जाते, फिर घर से 3 किलोमीटर दूर स्थित धनुषकोटी रेलवे स्टेशन से अखबार लाते और पैदल घूम–घूमकर अखबार बेचते। 8 बजे तक वे अखबार बेचकर घर लौट आते। उसके बाद तैयार होकर वे स्कूल जाते थे। स्कूल से लौटने के बाद शाम को वे अखबार के पैसों की वसूली के लिए निकल जाते।

इतनी अभावग्रस्त और संघर्षभरी जिंदगी के बावजूद भी इन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी और अध्यापकों की सलाह पर स्नातकोतर शिक्षा के लिए मद्रास इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (M.I.T.) और एयरोनाटिकस इंजीनीयर का चयन किया।

कलाम की हार्दिक इच्छा थी कि वे वायुसेना में भर्ती हों तथा देश की सेवा करे। किंतु इच्छा की पूर्ति नहीं होने पर 'रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पाद (DTP & Plair) का चुनाव किया। वहाँ पर उन्होंने 1958 में तकनीकी केन्द्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक का कार्यभार संभाला। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर वहाँ पहले ही साल में एक पराध्वनिक लक्ष्यभेदी

विमान का डिजाइन तैयार करके अपने स्वर्णिम सफर की शुरूआत की।

डॉ० कलाम के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब वे 1962 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) से जुड़े। यहाँ पर उन्होंने विभिन्न पदों पर काम करते हुए कई टेक्नोलॉजी सेंटर की स्थापना की।

डॉ० कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से (IGMDP) Integrated guided missile development programme की शुरूआत की। इस योजना के अंतर्गत 'त्रिशूल' 'पृथ्वी' 'आकाश', अग्नि', ब्रह्मोस' मिसाइलें विकसित की।

डॉ० कलाम ने 1992 से 1999 तक रक्षामंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा DRDO के सचिव के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की उन्होंने भारत को 'सुपर पावर' बनाने के लिए 11 मई और 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की। डॉ० कलाम नवम्बर 1999 में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे।

डॉ० कलाम 25 जुलाई 2002 को भारत के ग्यारहवें (11वें) राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। वे 25 जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे।

डॉ० कलाम न सिर्फ वैज्ञानिक अपितु एक प्रख्यात लेखक भी रहे हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें 'इंडिया 2020' में देश विकास का समग्र दृष्टिकोण देखा जा सकता है और अन्य उपयोगी पुस्तकें– Wings of five, Guidings souls, Dialogues on the purpose of life, Ignited minds. में उन्होने अपने आत्मिक विचारों को प्रकट किया है। जो हम सबों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

डॉ० कलाम की विद्वत्ता, जीवनदर्शन, जीवन जीने की कला एवं योग्यता को दृष्टिगत रखते हुए सम्मान स्वरूप उन्हें विभिन्न संस्थानों ने अनेकानेक पुरस्कारों, सम्मानों से नबाजा है। उन्हें राष्ट्रीय एकता के लिए 'इंदिरा गाँधी पुरस्कार (1997)' थी प्रदान किया गया। इसके अलावा भारत सरकार ने उन्हें क्रमशः पद्म भूषण (1990), भारत रत्न सम्मान (1997) से विभूषित किया।

सादा जीवन जीने वाले तथा उच्च विचार धारण करने वाले डॉ० कलाम ने 27 जुलाई को 2015 की शाम ''भारतीय प्रबंधन संस्थान'' शिलांग में व्याख्यान देते हुए जीवन की आखिरी साँस ली। वे अपनी उन्नत प्रतिभा के कारण सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदायों की नजर में महान आदर्श के रूप में स्वीकार्य रहे हैं। भारत की वर्त्तमान पीढ़ी ही नहीं अपितु आनेवाली पीढ़ी इस महान व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

अभावग्रस्त बचपन को स्वालंबन की ताकत से पार करते हुए डॉ० कलाम के प्रेरक कृतित्व और व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

अभावग्रस्त बचपन को स्वावलंबन की ताकत से पार करते हुए डॉ० कलाम के प्रेरक कृतित्व और व्यक्तिध ने पूरे देश के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। इनसे इस देश के हजारों विद्यार्थी प्रेरित हुए। उनके व्यक्तित्व की विशेष बात यह थी कि उनके चेहरे पर सदैव मुस्कुराहट बनी रहती थी। चाहे वह राष्ट्रपति पद पर रहे हों या किसी शैक्षिक संस्थान में व्याख्यान दे रहे हों। सदैव उनकी मनःस्थिति एक सी रहती थी। सौम्यता, सरलता, सादगी उनके जीवन का अभिन्न अंग थी।

उन्होंने अनेक बार वैज्ञानिक संस्थानों में व्याख्यान देते हुए विज्ञान को मानवता की सेवा का माध्यम बताया। डॉ० कलाम सदैव वैज्ञानिक सोच की बातें करते थे। उनके अनुसार वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा अनेक समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। विज्ञान को जनमानस विशेषकर बच्चों के मध्यलोक प्रिय करने में डॉ० कलाम का योगदान विशेषकर उल्लेखनीय है। ऐसे महान देशभक्त व्यक्तित्व के निधन पर पूरा देश शोक मना रहा है। हॉलाकि उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि हम उनके विचारों को जीवन में अपनाएँ, जिससे हमारा जीवन भी सफल हो और इस महान विभूति का सपना भी पूरा हो सके। इस सपूत की कमी हमें हमेशा खलती रहेगी।

विनीत कुमार

210

अंधेरे बंद कमरे में वह....

भूखण्ड पर इमारत। इमारत के अंधेरे बंद कमरे में वह बेचैनियों का चिराग जलाकर अपने वजूद को खोते हुए 'वे' जिनसे वह कमरा अलंकृत हुआ है।

जैसे ही मैं उस कमरे में प्रवेश किया तो मुझे लगा कि जिस प्रकार रेगिस्तान में रेत का कोई आकार नहीं होता... लगता है इसका भी अब कोई संसार नहीं है। मैंने एक पुस्तक लीया और उसे देखने लगा। उसने अँधेरे में आँखें खोली, बिना हिले–डुले बिना जताए कि वह खुद भी जाग गई है। तब मुझे लगा कि इसे कैद किया गया है वर्षो पहले।

ऐसा लगा जैसे वह बीमारी से पीड़ित है जिसे वह अपने साथ ढो रही है। उसे साथ जी रही है। वह किसी अंधेरे बंद कमरे में बेचैनियों, चुनौतियों, तन्हाइयों की रोशनी में कुछ रच रही है। इस दुनिया में जो भी है सबकी अपनी–अपनी कोई–न–कोई भूमिका होती है। निर्माण में .... विनाश में ....। मैं यहाँ विनाश की बातें नहीं कर रहा हूँ। जरा सोचे यदि हम उसकी भूमिका को दबा दे तो क्या होगा और उसकी भूमिका को दबाया जाता है।

ऊपर वाले ने इसा बनाया, उसे विवेक दिया, चेतना दी–सोचने के लिए। आँखे दी–देखने के लिए। कान दिये–सुनने के लिए। सच्चाई तो यही है कि न तो उसकी वर्त्तमान स्थिति पर कोई सोचता है न उसके अश्क को देखता है। न ही उसकी दारूण आबाज को कोई सुनता है।

ये जरूरी नहीं है कि आदमी आँख से निकले आँसू को ही देखे। कण्ठ से निकल आबाज़ को ही सुने। अगर ऐसा है तो फिर आदमी और जानवर में क्या अंतर है। मालिक को उदास देखकर तो पालतू पशु भी उदास हो जाते हैं। खैर हम तो मनुष्य है। हम क्यों नहीं समझते कि उसकी अपनी भूमिका है, अपना वजूद है। अपने आप को अंगुलियों के बीच पीसते हुए भी हमें ज्ञान देता है। फिर भी हमने उसे छोड़ दिया है अकेले में।

रोज लगती है अदालत। रोज होती है सुनवायी। गलती करने वालों को सजा मिलती है लेकिन ये कैसी सजा है जिसे उठाकर फिर वहीं रख दिया जाता है, जिसकी कोई गलती ही नहीं है फिर भी कैद है। वर्षो से....। उस कमरे के भीतर।

फिर भी उस स्थिति में वह अपने होने को साबित कर रहा है और उसी से अपने आपको नष्ट कर रहा है। हम उसे सिर्फ देख रहे है।

हर पल घाव के सूखने का इंतजार किए बगैर उसको देखे और मरहम लगाएँ, असल में घाव हो जाना है।

चन्द्रकान्त कुमार
587

नेतरहाट; शिक्षक और हम

''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वराः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।''

इसका साक्षात् परिचय मिलता है हमारे नेतरहाट के गुरूओं से। नेतरहाट, नगर के कोलाहल और कलह से दूर कहीं सघन वनों के बीच मुस्कुराता सा चेहरा है। आधुनिक आश्रम व्यवस्था से ओतप्रोत यह विद्यालय गुरूकुल परंपरा की मशाल लेकर आज भी पूरे विश्व में अपने कदम बढ़ा रहा है। यहाँ का हर विद्यार्थी इस औद्योगीकरण के युग में सदियों से चली आ रही भारतीय संस्कृति की पताका लहरा रहा है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि हम अपने आप को सबसे बढ़कर, औरों से ऊँचा और सबसे अलग समझते हैं। यह विद्यालय आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अनुकरण करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट तो है ही परंतु शिक्षेतर क्रियाकलापों एवं उन्नत सोच के आधार पर हमें कोई पीछे नहीं छोड़ सकता और

यह नेतरहाट महाविद्यालय की उपलब्धि है कि यह विद्यालय जीवन में केवल पैसा कमाना नहीं चैन से जीना और हमें पूरे देश में प्रतिष्ठित बनना सिखाता है। ऐसा केवल और केवल नेतरहाट विद्यालय के श्रीमानों (शिक्षक) की वजह से संभव हो सका है और होता ही रहेगा।

सचमुच एक साथ इतने अच्छे शिक्षकों का समूह भारत के किसी कोने में जाकर खोजने से भी नहीं मिलेगा। हमारे शिक्षक हमें केवल ज्ञान–विज्ञान की बातें ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाते हैं। केवल फूलों में सोना ही नहीं काँटों में चलना भी सिखाते हैं। ये हमारे श्रीमानों की कृपा है कि हम आज सफलता के उस मुकाम पर खड़े हैं जहाँ से दुनियाँ बहुत छोटी दिखती है। हमारे विद्यालय–गीत में भी वर्णित ये पंक्ति' हिंद प्रेम सबल है, विश्व प्रेम साध्य बना'' हमारी सोच हमारे दृष्टिकोण को समग्रता प्रदान करती हैं ऐसा लिखने वाले और कोई नहीं बल्कि हमारे पूर्व शिक्षक ही है। हमारी दिनचर्या सुबह शिक्षकों के साथ शुरू होती है और आश्रमाध्यक्षों के निर्देशन में हम रात को सोते हैं। खेल से लेकर कक्षा तथा अन्य सभी गतिविधियों में हमें हमारे शिक्षकों का सान्निध्य प्राप्त होता है। निरंतर सीखने का नाम ही नेतरहाट है, हर पल हर क्षण हम अपने शिक्षकों से कुछ न कुछ सीखते रहते हैं।

कक्षाओं में तो हमें स्नातक स्तर के दर्शन का परिचय मिलता है। हमारे शिक्षक हमें अपनी सोच की पराकाष्ठा से परिचित करवाते है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने जो छात्र और शिक्षक के संबंध को उजागर किया है इससे तो हमारे देश का कदापि विकास संभव नहीं है। हमारा देश प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता के कारण पूरे विश्व में शुमार होता है और आज की शिक्षा पद्धति ने इस पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। हमारा देश एकलव्य जैसे शिष्य और द्रोणाचार्य जैसे गुरूओं को देख चुका है लेकिन आज तो पश्चिमी देशों का अनुकरण और स्वार्थ में लोग लिप्त हो गये हैं।

नेतरहाट के शिक्षक हमारे हौसले को उड़ान देते हैं, उन्हें गिराते नहीं। हर क्रियाकलाप हम शिक्षकों की देख–रेख में ही करते हैं। नेतरहाट में हम कविता लिखने का भी बहुत आनंद उठाते हैं। ऐसा हमारे शिक्षकों के मार्ग दर्शन के कारण ही संभव हो पाया है कि नेतरहाट प्रतिवर्ष कई कवियों को जन्म देता है। हमारे यहाँ नाटक का मंचन एक साल में दो बार होता है– (क) हिंदी नाटक (ख) अंग्रेजी नाटक, इन दोनों नाटकों में शिक्षक ही हमारी मदद करते है; अभिनय करने में, संवाद बोलने में एवं उच्चारण की स्पष्टता में।

यहाँ की परंपरा सचमुच नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों की तरह ही है। यहाँ तक कि हम अपने चतुर्थ वर्गीय कर्मचारियों जैसेः– नाई, धोबी, मोची को भी सम्मान के साथ नाईजी, मोचीजी, धोबीजी के रूप में संबोधित हैं। नेतरहाट जैसी संस्थाओं का निर्माण अधिकाधिक हो वरना हमारी सभ्यता, संस्कृति कहीं खो जायेगी। यहाँ के विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों एक दूसरे से संवेदनशील एवं आध्यात्मिक स्तर पर जुड़े रहते है। गुरु शिष्य का ऐसा संबंध विरले ही कहीं देखने को मिलेगा वरना आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरू का काम केवल कक्षा तक ही सीमित रह गया है। कक्षा होने के बाद तो वे दोनों जैसे मानों अनजान ही हो जाते हैं। गुरूओं की घटती मान्यता हमारे देश को खाई में ढकेल रही है। इस युग में भी नेतरहाट आवसीय विद्यालय अपने गुरुओं के प्रति कृतार्थ है अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार है तो वाकई वर्तमान पीढियों को इससे शिक्षा लेनी चाहिए। ताकि समाज में गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों रहे। वरना हमें हमारे पतन से कोई नहीं बचा सकता।

पीयूष कुमार

015

संविधान में शिक्षा से संबंधित प्रावधान

व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र के लिए शिक्षा का बड़ा महत्त्व है। इसके अभाव में न कोई व्यक्ति विकास कर सकता है और न ही किसी समाज तथा राष्ट्र का विकास हो सकता है। अतः इसकी आवश्यकता को हमारे संविधान निर्माताओं ने महसूस किया तथा भारतीय संविधान में उन तत्त्वों को सम्मिलित किया जिसके आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई। भारतीय संविधान में अनेक उपबंध एवं अनुच्छेद ऐसे है जिनका भारतीय शिक्षा से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंध है। भारतीय संविधान में शिक्षा को नागरिकों का मूल अधिकार माना गया है।

1. शिक्षा समवर्ती सूची में –1976 में 42वें संविधान संशोधन द्वारा शिक्षा को समवर्ती सूची में सम्मिलित किया गया। तब से शिक्षा की व्यवस्था करना केन्द्र और राज्य सरकार दोनों का उत्तरदायित्व है। वर्त्तमान में केंद्र सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने की ओर अग्रसर है वही राज्य सरकार शिक्षा के स्तर को बनाये रखने तथा शिक्षा नीति का अनुपालन करने की ओर प्रयासरत है। राज्य सरकार अपनी निजभाषा में भी शिक्षा को सरल बनाती है।
2. निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा–(धारा 21क तथा धारा 45)–यह राज्य के नीति निर्देशक तत्त्व का वह भाग है जिसके द्वारा कल्याणकारी भारत के निर्माण करने के लिए केंद्र तथा राज्य सरकार को सुझाव दिये है। संसद द्वारा 2009 में परित तथा 1 अप्रैल 2010 से लागू शिक्षा का अधिकार शैक्षिक संबंधी एक मूल अधिकार है जो 6–14 वर्ष के बच्चों को दिया जाना है।
3. अल्पसंख्यक वर्ग की शिक्षा (धारा 30)–संविधान की उल्लेखित धारा में कहा गया है कि अल्पसंख्यक वर्ग को अपनी इच्छानुसार शैक्षिक संस्थायें स्थापित करने व उनका प्रशासन करने का अधिकार है। इनके अनुसार शिक्षा संस्थाओं को सहायता देने में राज्य किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करेगा। अनु० 34 (2) के अनुसार भाषा तथा धर्म का विशेष ध्यान रखते हुए अनुदान देते समय सरकार भेदभाव नहीं कर सकती।
4. कमजोर वर्ग के लिए शिक्षा–संविधान में कई अनुच्छेद हैं जो वंचित तथा कमजोर वर्ग की शिक्षा को प्रोत्साहित करते है। मुख्य रूप से मौलिक अधिकार के समानता का अधिकार तथा नीति निर्देशक तत्व में इनका विस्तृत अवलोकन किया जा सकता है।
5. भाषा संबंधी प्रावधान–धारा 29(1) के अनुसार प्रत्येक ऐसे समूह को अपनी विशेष भाषा, लिपियों व संस्कृति के संरक्षण का अधिकार होगा जो भारत के नागरिक है।
6. शैक्षिक संस्थाओं में अवसरों की समानता – धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के अनुसार धर्म, जाति, भाषा के आधार पर किसी भी नागरिक को राज्य द्वारा संचालित या आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षण सेंस्थानों में प्रवेश के लिए नहीं रोका जा सकता। धारा 30 (1) के अनुसार अल्पसंख्यक वर्ग को चाहे किसी धर्म जाति या भाषा पर आधारित हो अपनी इच्छानुसार शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करने व संचालन करने का अधिकार है।
7. हिंदी का संवर्धन– धारा 315 के अनुसार यह संघ का कर्तव्य होगा कि राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी भाषा का प्रसार व विकास को प्रोत्साहित करें।

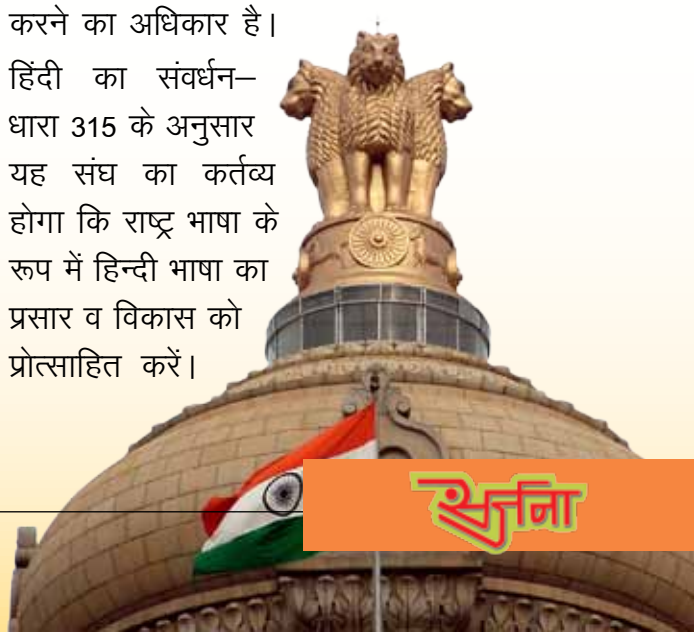

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिससे पूरे देश को सूत्र में पिरोया जा सकता है। धारा 350(1) में मातृभाषा को प्राथमिक शिक्षा सुविधायें राज्य व स्थानीय प्रशासन का है।

8. कृषि शिक्षा– धारा 45 में कहा गया है कि यदि राज्य चाहे तो सजग होकर आधुनिक व वैज्ञानिक दृष्टि से कृषि की पढ़ाई तथा पशुपालन का संगठन करके नस्लों का संरक्षण व सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय संविधान हमारा आदर्श है। संविधान में वर्णित शिक्षा से संबंधित उपबंध संविधान निर्माताओं की देन है। तथा समय–समय पर शिक्षा से संबंधित कई संशोधन भी किये गये है जो वर्तमान दौर में प्रासंगिक है। अभी सभी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति का इंतजार है जो व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र को एक नयी दिशा की ओर लेकर आयेगा।

मुकेश कुमार
राजनीति विज्ञान शिक्षक

विद्यार्थी जीवन

प्रत्येक छात्र का यह अनुभव होना चाहिए कि वह एक ऐसी अवधि से होकर गुजर रहा है, जो उसके भाग्य और भविष्य निर्माण करने में निर्णायक भूमिका अदा करेगी। व्यक्ति की सारी गरिमा उसके गुण–कर्म–स्वभाव पर निर्भर है। धन, विद्या, सम्मान, पद, स्वास्थ्य, मित्रता सिर्फ उन्हीं को मिलती है, जिन्होंने अपना व्यक्तित्व, गुण, कर्म, स्वभाव सही ढ़ग से ढाला और विनिर्मित किया है।

इन्हीं दिनों श्रेष्ठ विचार सद्भावनाओं एवं सद्प्रवृतियों का अभ्यास किया जाता रहे तो उसका प्रभाव जीवन भर बना रहता है और सुख–शांति की संभावनाएँ साकार होती है। इन्हीं दिनों में जोश अधिक होश कम रहने के कारण अवांछनीय प्रवृत्तियों में अधिक आकर्षण–मनोरंजन महसूस होता है और मनोवृत्तियाँ पानी की तरह नीचे की ओर शीघ्र ही गिर जाती है और जीवन भर पीछा नहीं छोड़तीं। कहना न होगा कि ऐसा व्यक्ति शोक–संताप भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता हुआ अभिशाप जैसा नारकीय जीवन जीता हैं।

इन्हीं दिनों मित्रों का आकर्षण अपनी चरम सीमा पर रहता है। अच्छे साथी मिले तो विकास एवं प्रसन्नता की वृद्धि में सहायता ही मिलती है। हर समझदार

छात्र का कर्त्तव्य है कि मित्रता से पूर्व हजार बार सोचे। कहीं मित्रता के बहाने उसे आवारागर्दी की ओर तो घसीटा नहीं जा रहा है, जिससे वे शिक्षा से वंचित रह जाएँ, स्वास्थ्य खो दें स्वभाव बिगाड़ लें और सम्मान तथा विश्वास गवाँ बैठे। कुसंग से बहुत सावधान रहें। सच्चरित्र मित्रों श्रेष्ठ पुस्तकों और सर्वशक्तिमान परमात्मा का ही संग करें। सद्विचारों की नोटबुक बनाएँ। जब भी कोई अच्छी बात पढ़े, सुने तो नोट करें। समय–समय पर दोहराएँ। आदर्श व्यक्तियों का, महानपुरूषों का ध्यान व उनके चरित्र का चिंतन–मनन करें।

सौरभ कुमार गुप्ता
168

उपन्यासकार चार्ली चैप्लिन

चार्ली चैप्लिन को 'वन हाईड्रोजन ईयर्स ऑफ लॉफटर भी कहा गया है। सिनेमा जगत की महानतम विभूति चार्ली चैप्लिन (16 अप्रैल, 1889,25 दिसम्बर,1977) कुदरत का एक करिश्मा था। वह व्यक्ति नहीं था–एक पूरा संसार था। जॉर्ज बर्नाड शॉ ने उसे 'जीनियस' कहकर सम्मानित किया, तो ऑस्कर अकादमी ने उसे 'लीजंड' का दर्जा प्रदान किया। दुनिया उसे हास्य अभिनेता निर्देशक, निर्माता, पटकथा– लेखक तथा संगीतकार के रूप में जानती है। परंतु उसके बहु आयामी व्यक्तित्व का एक और विशिष्ट पक्ष अभी–अभी प्रकाश में आया है। 5 फरवरी 2014 को चार्ली के प्रकाशित उपन्यास 6 'फुटलाईट्स' के विषय में रहस्योदघाटन हुआ था। उसने इस उपन्यास की रचना 1948 में की थीं, परंतु उसने न इसे प्रकाशित करवाया और नहीं इसकी पांडुलिपि किसी को पढ़ने के लिए ही दी। हाँ! अपने इस उपन्यास को आधार बनाकर एक फिल्म 'लाईमलाइट' की पटकथा अवश्य लिखी। यह फिल्म 1952 में रिलिज हुई थी। अमेरिका में निर्मित यह उसकी अंतिम फिल्म थी। चूँकि फिल्म की पृष्ठभूमि 1914 के आसपास के लंदन शहर पर आधारित थी, इसलिए चार्ली इस फिल्म के 'प्रमोशन' के लिए लंदन गये। वापस अमेरिका जाने लगा तो उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लग चुका था। अमेरिका उन्हें अपना शत्रु समझने लगा था। क्योंकि वह वाम–विचारधारा को पक्षधर थे। अमेरिका से निष्कासित होने के बाद उसने स्विट्जरलैंड में रहना शुरू कर दिया। इटली की फिल्म संस्था 'सिनेटेका' के संग्राहलय से चार्ली चैप्लिन के अधिकृत जीवनीकार डेविड रॉ बिंसन के प्रयत्नों के चलते इस पांडुलिपि का संपादन संभव हो सका है। इस उपन्यास में कुल 34000 शब्द हैं। पांडुलिपि के कुछ पन्ने चार्ली के अपने हाथों से लिखे हुए है। और कुछ पन्ने टाइप हैं। डेविड रॉबिंसन के अनुसार, 'उपन्यास बोल–चाल की भाषा में लिखा गया है और उसकी शैली पर चार्ल्स डिकेंस का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। 'फुटलाईट्स' उपन्यास की कहानी है एक बूढ़े विदूषक केलवरो की, जिसके लिए सबसे बड़ा दुश्मन समय है। रंगमंच ही उसके जीवन का पर्याय है, जिसके लिए अब उसे अनुपयोगी समझा जाने लगा है। घोर निराशा और हताशा में वह शराब पीने का आदी हो जाता है। एक दिन वह खूबसूरत और जवान बैले डांसर टैरी को आत्महत्या करने से रोकता है और उसे नया जीवन प्रदान करता है। वह उसके जीवन में नई उम्मीद, नई रोशनी, नई उमंग और तरंग पैदा करता हैं केलवरो के प्रोत्साहन के फलस्वरूप टैरी रंगमंच विख्यात नर्त्तकी बन जाती है। रंगमंच का एक नौजवान संगीतकार नेविल उसे प्यार करने लगता है, परंतु टैरी केलवरो से प्यार करती है। इसी प्रेम–त्रिकोण पर आधारित है यह उपन्यास। केलवरो रंग मंच से दूर चला जाता है। इत्तफाकन संटैरी उसे फिर मिल जाती है। वह उसे रंगमंच पर वापस लौटने के लिए प्रेरित करती है। केलवरो की वापसी बहुत ध ामाकेदार सिद्ध होती है, पर नेपथ्य में उसकी सांस फूल जाती है, तभी केलवरों के अंतिम शब्द गुंजते हैं– 'डॉक्टर मुझे लगता है, मैं मर रहा हूँ। मैं यह इसलिए जानता हूँ, क्योंकि मैं कई बार टुकड़ो–टुकड़ों में मर चुका हूँ। परदे के पीछे बूढ़े विदूषक दम तोड़ रहा है। और परदे के आगे रंगमंच पर टैरी बैले नृत्य कर रही है। जिंदगी इसी का नाम है, जो सदैव प्रवहमान है और खेल निरंतर जारी रहना अनिवार्य है।

चन्दन कुमार
280

परिक्रमा

एक बार फिर वक्त आ गया है पूरे विद्यालय की परिक्रमा करने का। 'परिक्रमा' प्रत्येक विभाग के क्रियाकलापों की, आयोजनों की तथा छात्रों की गतिविधियों की परिक्रमा करती है और वर्ष भर में किये गये कार्यो की, जिससे हमारा विद्यालय गौरवान्वित होता है। यह उन छात्रों की परिक्रमा है जिनका योगदान विद्यालय के उत्थान में हुआ है। प्रस्तुत परिक्रमा आपको विचरण करवायेगी उन सभी प्रतियोगिताओं में जहाँ हम छात्रों ने बढ़–चढ़ कर पूरे वर्ष भर भाग लिया है।

मैं 'परिक्रमा' आज अपने जीवन के 61वें पड़ाव पर पहुँच चुकी हूँ। प्रत्येक वर्ष मैं आती हूँ–एक बार अपने इतिहास व वर्तमान की दोहरी अभिव्यक्ति तथा तुलनात्मक समीक्षा खुद में लपेटे हुए, समेटे हुए। वक्त बीतने के साथ–साथ (61वें वर्ष) मुझमें उपलब्धियों का अलंकरण सापेक्ष गतिमान् होता गया। विविध क्षेत्रों में उपार्जित कीर्तिरश्मियों की आभा से आज गर्वोन्मत्त हो मैं फिर से आयी हूँ। मैं अपने इस बहुआयामी और बहुरंगी सफर की शुरुआत सांस्कृतिक छटा से करूँगी।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ : विद्यालय में गतिविधियों के रूप में सांस्कृतिक वातावरण को अक्षुण्ण बनाने के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रश्रय दिया जाता है।

नाटक : सांस्कृतिक विभाग ने परंपरानुसार अंतरआश्रामवर्गीय नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया। सभी आश्रमवर्गो ने स्तरीय नाटक प्रदर्शित किया जिसमें प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले आश्रमवर्गो की सूची निम्नवत् है–

आश्रमवर्ग	नाटक	स्थान
तृतीय	सद्गति	प्रथम
सप्तम	सीता अपहरण केस	द्वितीय
चतुर्थ	अंधेर नगरी चौपट राजा	तृतीय

चि. राजकुमार (26) तृतीय आश्रमवर्ग को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता एवं चि. मनोहर (07) षष्ठ आश्रमवर्ग को सर्वश्रेष्ठ उद्घोषक चुना गया।

विद्यालय नाटक -

हिंदी नाटक : विद्यालय दिवस (हीरक जयंती) के शुभ अवसर पर श्रीमान् विधुशेखर देव जी के सफल निर्देशन में ''कफन'' नाटक की सफल प्रस्तुति दी गई जिसमें चि. आनंद भगत (707) को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता घोषित किया गया।

संस्कृत नाटकः हीरक जयंती के शुभ अवसर पर संस्कृत विभाग के नेतृत्व में गुरू – शिष्य पर आधारित ''जाबाल– सत्यकाम'' नाटक का सफल मंचन हुआ जिसमें सभी छात्रों की भागीदारी सराहनीय रही।

English Drama: Under the aegis of English department the play "The Bishop's candle sticks" was staged on occasion of diamond Jubilee. The play which was written by NORMAN MCKINNEL was appreciated for spell bound performance of the budding participants.

सरस्वती पूजन समारोह : शारदा पूजन समिति के सौजन्य से इस वर्ष भी सरस्वती पूजा धूमधाम से मनाई गई। इस शुभ अवसर पर विभिन्न वर्ष के छात्रों के लिए ''संस्मरण लेखन'', ''कविता लेखन'' एवं ''कहानी लेखन'' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

लोकगीत प्रतियोगिता

आश्रमवर्ग	स्थान
1. चतुर्थ	प्रथम
2. तृतीय	द्वितीय
3. सप्तम	तृतीय

संस्मरण लेखन

1. हरदीप महतो (320)
1. कृष्ण कुमार कन्हैया (230)
3. अमित कुमार (314)

कविता लेखन प्रतियोगिताः-

1. चन्द्रशेखर (12)

2. आनंद मोहन पूर्ति (10)
3. अमृत राज (31)

निबंध लेखन प्रतियोगिताः-

1. शुभम राज (138)
2. मनोज कुमार महतो (208)
3. ऋषि कुमार (157)

संगीत विभागः विद्यालय में आयोजित होनेवाले अधिकतर साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम संगीत विभाग की सहायता से रंगारंग स्वरूप प्राप्त करते हैं। हीरक जयंती में भी वृन्द वादन, समूह गान, नृत्य, कव्वाली आदि की प्रस्तुति श्रीमान् श्री शिशिर सौरभ एवं दिवाकर मिश्र के कुशल निर्देशन में संपन्न हुई। हमारे विद्यालय में पाठ्यक्रम के अन्य विषयों की तरह संगीत की भी शिक्षा दी जाती हैं।

कला विभागः कला विभाग के सौजन्य से ऊर्जा संरक्षण चित्रकला प्रतियोगिता 2015 का आयोजन किया गया जिसमें प्रीत कुमार महतो (448) ने प्रथम एवं दिव्यांशु लकड़ा (380) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

पुनः कला विभाग की ओर से फ्यिूल कन्जरवेशन चित्रकला प्रतियोगिता 2015 का आयोजन हुआ जिसमें चि. अमित उराँव (285) ने प्रथम एवं प्रीत कुमार महतो (448) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

हिन्दी विभागः हिन्दी विभाग के सौजन्य से इस वर्ष एक वाद – विवाद प्रतियोगिता का आयेाजन किया गया जिसमें ''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ''विषय पर छात्रों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इसमें छात्रों की प्रस्तुति की सराहना की गई।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता 2015 हिन्दी विभाग के द्वारा आयोजित की गई। हिन्दी विभाग के निरीक्षण में बच्चों ने कविताओं की सुर, लय, ताल और संपूर्ण थिरकन के साथ नवीन प्रस्तुति दी। इस वर्ष चतुर्थ वर्ष का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा तथा उन्हें ''साकेत स्मृति पदक'' से सम्मानित किया गया। करीब एक महीने तक चलनेवाली इस प्रतियोगिता में अन्य वर्ष के छात्रों ने भी बेहतर प्रदर्शन किया।

क्रमाक	दलनायक का नाम	वर्ष
1	चि. ऋषभ ठाकुर (038)	चतुर्थ
2	चि. अंकित कुमार (214)	तृतीय
3	चि. अमित कुमार (314)	द्वितीय
4	चि. गोपाल सिंह (370)	प्रथम

विज्ञान परिषद् की गतिविधियाँः हमारे विद्यालय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अत्यंत बढ़ावा दिया जाता है जिससे वैज्ञानिक चेतना का विकास हो पा रहा है। हर संभव सुविधाएँ उपलब्ध है तथा उनका उपयोग भी होता है। हमारा विद्यालय वह सारी चीजें बच्चों में पिरोता है जो उसे बाल वैज्ञानिक बना देता है।

विज्ञान सप्ताहः विज्ञान दिवस के अवसर पर विज्ञान परिषद् के सौजन्य से विज्ञान सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें प्रत्येक दिन छात्रों ने किसी ज्वलंत मुद्दे पर अपने विचार रखे। इस दौरान क्विज प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता सेमिनार आदि प्रस्तुत किये गए।

जीव विज्ञान विभागः जीव विज्ञान के द्वारा फरवरी माह में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु ICWESSAR द्वारा आयोजित परीक्षा पर्यावरण रत्न अवार्ड का सफल संचालन किया गया। इस परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा और हमारे विद्यालय के शुभम सागर ने पूरे देश में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

इसी वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे स्वाइन फ्लू, ब्रेन गेट, ब्लू ब्रेन, ब्रेन फिंगरप्रिंटिग पर पेपर प्रस्तुत किए गए। छात्रों में जीव–विज्ञान विषय के प्रति रुचि बढ़ाने तथा जीव विज्ञान विषय की अन्य शाखाओं की जानकारी हेतु जीव विज्ञान विभाग में सेमिनार भी आयोजित किया गया जिसका शीर्षक था –

"New Avenues in the field of Biological Science" वर्ष 2015 में ECO-CLUB के द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण सप्ताह की तरह मनाया गया जिसमें प्रत्येक वर्ष के छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे–चित्रकारी प्रतियोगिता, अपशिष्ट पदार्थो से उपयोगी वस्तु बनाने की प्रतियोगिता, स्वरचित कविता लेखन तथा निबंध लेखन प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। पर्यावरण के विषय पर एक Interest Quiz Competition का भी आयोजन किया गया था, जिसमें छात्रों का प्रदर्शन सराहनीय रहा। पर्यावरण सप्ताह के अंत में छात्रों के द्वारा एक नाटक Save the Earth की प्रस्तुति की गई।

भौतिकी विभाग: इस वर्ष भौतिकी विभाग के सौजन्य से "Dark Matter". "Bullet Train" आदि पर सेमिनार आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

विज्ञान सप्ताह के दौरान छात्रों को टेलिस्कोप की सहायता से अनेक खगोलीय जानकारियाँ दी गई। भौतिकी विभाग के द्वारा इस वर्ष Should Artificial Be Replaced By Human विषय पर एक वाद – विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें छात्रों का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

रसायन विभाग: रसायन विभाग के सौजन्य से विज्ञान सप्ताह के दौरान मैजिक शो, दिखलाया गया। इसी क्रम में इंटर प्रथम वर्ष के कुछ छात्रों ने Drugs पर पेपर प्रस्तुत किया।

भूगोल विभाग : दिनांक 2.2.2015 'विश्व आर्द्र भूमि दिवस' के अवसर पर जीव–विज्ञान दीर्धा में सेमिनार का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.2.2015 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

दिनांक 3.3.2015 'विश्व वन्य प्राणी दिवस' के अवसर पर चि० अमित (314) ने सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया।

विभागीय स्तर

पर 21 मार्च 'विश्व वानिकी दिवस' 22 मार्च 'विश्व जल दिवस' 23 मार्च 'विश्व मौसम दिवस' 22 अप्रैल 'पृथ्वी दिवस' एवं 22 मई 'अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस' के रूप में मनाया गया।

दिनांक 17-9-2015 को विश्व ओजोन दिवस के अवसर पर Earth Anthem एवं Our Cosmic--- गाने पर नृत्य, सेमिनार एवं कविता पाठ किया गया।

कृषि विभाग : कृषि विभाग के निर्देशन में First और Second Year को Exposer visit दो–दो बार कराया गया।

K.P.K.K. Agri. Scientist के द्वारा "The Role of Agriculture in Daily Life" विषय पर सेमिनार का आयोजन हुआ।

High Tech नर्सरी का निर्माण लगभग 4 एकड़ में कराया गया जिसमें 400 पेड़ – पौधे लगाये गये।

कृषि विभाग के द्वारा नाशपाती बगान का पुन निर्माण भी किया गया। मुख्य भवन के पीछे लगभग 6 एकड में दूसरे कृषि नर्सरी का निर्माण भी किया जा रहा है।

विद्यालय परिसर के अंदर (रेनगेज) तथा थर्मामीटर लगाया गया जिसमें छात्रों को कृषि विषय में तापमान एवं वार्षिक वर्षा से संबंधित समस्याओं को समझाने में आसानी होती है।

विद्यालय परिसर (आश्रम सहित) के अन्दर लगभग 2000 वृक्ष लगाये गये जिसमें फलदार, छायादार आदि वृक्ष है।

कंप्यूटर विभाग: कंप्यूटर विभाग द्वारा पावर प्वांइट प्रेजेंटेशन एवं वेबपेज आधारित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों के सर्वतोमुखी विकास, नवोन्मेष एवं सृजनात्मक तकनीकी कौशल का विकास हुआ इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों की गतिविधियों में कंप्यूटर विभाग द्वारा इंटरनेट एवं अन्य सहायता उपलब्ध करायी गयी।

English Department: Under the banner of English Department an extempore speech competition was held. In it, more than 30 students participated. The best speakers was awarded with Running Trophy.

क्विजः क्विज प्रभाग के निर्देशन में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा आयोजित RBI क्विज 2015 में विद्यालय के चार छात्रों ने भाग लिया और अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

निबंध लेखन प्रतियोगिता : राँची नोवा द्वारा अयोजित अंतर विद्यालय निबंध लेखन प्रतियोगिता जिसका शीर्षक ''राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में शिक्षा का स्वरूपः नेतरहाट विद्यालय में हमारे विद्यालय के छात्रों ने भाग लिया। पुरस्कृत छात्र निम्नांकित हैः–

1. निखिल कुमार (10) चतुर्थ वर्ष
2. भाष्कर (164) तृतीय वर्ष
3. अतुल कुमार (129) तृतीय वर्ष

The title of English essay was: "The Role of Netarhat in Public Governance" The awarded students are the following

1. उज्ज्वल गोयल (137) तृतीय वर्ष
2. अमित कुमार (314) द्वितीय वर्ष
3. अमन कुमार (216) तृतीय वर्ष

दिवस एवं जयंतीः-

सम्मेलन प्रभारी एवं संबंधित विभागों के सौजन्य से हमारे विद्यालय में निम्न जयंतियाँ मनाई गई।

24 जनवरी	–	निराला जयंती
14 सितंबर	–	हिन्दी दिवस
05 सितंबर	–	शिक्षक दिवस
26 जनवरी	–	गणतंत्र दिवस
15 अगस्त	–	स्वतंत्रता दिवस
14 अप्रैल	–	अम्बेडकर जयंती
02 अक्टूबर	–	गाँधी जयन्ती
16 सितंबर	–	ओज़ोन दिवस

शैक्षिक गतिविधियाँ : झारखंड अधिविध परिषद् घोषित माध्यमिक परीक्षाफल के आधार पर हमारे विद्यालय को झारखण्ड का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित किया गया। चि. आशीष कुमार ने राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया वहीं दस स्थानों में निम्नलिखित छात्रों ने अपना स्थान सुनिश्चित किया।

नाम	प्राप्तांक (%)	स्थान
आशीष कुमार	478 (%) 95.6%	दुसरा
अंकित कुमार भगत	477 (%) 95.4%	तीसरा
गौरव कुमार	477 (95.4%)	तीसरा
अमित कुमार	476 (95%)	चौथा
समीत कुमार महतो	474 (95.2%)	चौथा
आदित्य बराइक	475 (95%)	पाँचवा
नीतीश कुमार	474 (94.8%)	छठा
रानु रौबिन्स	474 (94.8%)	छठा
दीपक कुमार गुप्ता	473 (94.6%)	सातवाँ
संजीव मुर्मू	473 (94.6%)	सातवाँ
आनंद कुमार	471 (94.2%)	आठवाँ
करमचन्द महतो	469 (93.8%)	नौवाँ
राकेश रंजन महतो	469 (93.8%)	नौवाँ
सचिन कुमार महतो	469 (93.8%)	नौवा
राजीव रंजन सिंह	468 (93.6%)	दसवाँ

Olympiad: प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे विद्यालय में विज्ञान परिषद् के द्वारा NSO (National Science Olympiad) का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित छात्रों ने दूसरे चरण के लिए क्वालिफाई किया।

नाम	क्रमांक	वर्ष
चि. भाष्कर	164	तृतीय
चि. अंकित	214	तृतीय
चि. अमन	216	तृतीय

आंतरिक परीक्षाएँ (जून 2015)–निम्नलिखित छात्रों ने वर्गवार आंतरिक वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया:–

नाम	वर्ष	
एकलव्य पुरस्कार	प्रथम वर्ष	चि. मोनू (226)
डॉ. राजेंद्र प्र. पुरस्कार	द्वितीय वर्ष	चि. उज्ज्वल गोयल (137)
अमर्त्य सेन पुरस्कार	तृतीय वर्ष	चि. पीयूष (015)
रवीन्द्र नाथ टैगोर पु.	चतुर्थ वर्ष	चि. आशीष (721)
आईन्सटीन पुरस्कार	इंटर (प्रथम)	चि. गौतम (546)

छात्रों के चतुर्दिक् विकास के लिए भी विभिन्न पदक दिए जाते हैं ताकि उनकी मेहनत एवं लगन को सराहा एवं संवारा जा सके। ये पदक छात्रों में आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं तो इसी क्रम में प्रस्तुत है संपूर्ण परिणामः–

पदक	क्षेत्र	छात्र का नाम
स्व. सत्यदेव प्रसाद प्रोफेसियंसी पदक	माध्यमिक (2014) वार्षिक परीक्षा	चि. चंदन कुमार (585)
केशव पदक	सर्वश्रेष्ठ छात्र (साहित्य) पंचम वर्ष	चि. दीपक कुमार (751)
अभिनय स्मृति पदक	सर्वश्रेष्ठ छात्र (पंचम वर्ष)	चि. अंकित भगत (699)
राजीव स्मृति पदक	सर्वश्रेष्ठ छात्र (चतुर्थ वर्ष)	चि. शिवाधीन (39)
दीपक स्मृति पदक	सर्वश्रेष्ठ छात्र (तृतीय वर्ष)	चि. उज्ज्वल गोयल(137)
स्व. बेचु मिस्त्री पदक	प्रदर्शनी	चि. हिमांशु रंजन (710)
एच. के. अस्थाना पदक	सर्वश्रेष्ठ छात्र विज्ञान (चतुर्थ वर्ष)	चि. आदित्य कुमार (79)

खेलकूद प्रतियोगिताः छात्रों के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में शैक्षणिक गतिविधियों का जितना योगदान होता है उतना ही प्रभाव खेलकूद की गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का भी।

इस वर्ष निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ संपन्न हुई।

अंतरआश्रमवर्गीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताः इस वर्ष अंतरआश्रमवर्गीय एथलेटिक्स की तीन दिवसीय प्रतियोगिता का आयोजन मैदान पर किया गया। इसमें द्वितीय आश्रमवर्ग प्रथम स्थान पर रहा। अपने ग्रुप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सर्वश्रेष्ठ एथलीट के रूप में पुरस्कृत किया गया।

ग्रुप	नाम	आश्रमवर्ग
A	सुमन शेखर (02)	प्रथम
B	अनामिष आनंद (203)	द्वितीय
C	विवेक कुमार (266)	द्वितीय

अंतरआश्रमवर्गीय हॉकी प्रतियोगिता 2015: हर वर्ष अंतर आश्रमवर्गीय हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन लीग मैंचों के द्वारा किया गया जिसमें द्वितीय आश्रमवर्ग के वरीय एवं कनीय टीम को विजेता घोषित किया गया।

अंतर आश्रमवर्गीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता 2015: इस प्रतियोगिता का आयोजन भी लीग मैंचों के द्वारा ही किया गया जिसमें द्वितीय आश्रमवर्ग ने बाजी मारी।

अंतरआश्रमवर्गीय क्रास कंट्री प्रतियोगिता 2015: इस वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सप्तम आश्रमवर्ग को विजेता घोषित किया गया। इसमें अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले आश्रमवर्ग इस प्रकार हैः–

ग्रुप	आश्रमवर्ग	ग्रुप	आश्रमवर्ग
A	द्वितीय	C	सप्तम
B	षष्ठ	D	षष्ठ

लातेहार पुलिस के सौजन्य से आयोजित स्थानीय फुटबॉल टूर्नामेंट में विद्यालय टीम श्री वसंत तिर्की के निर्देशन में खेली और उपविजेता रही।

योगः इस वर्ष विद्यालय योग टीम ने 19th all India Inter School and Yoga Club championship 2015 में भाग लिया जिसमें निम्नलिखित छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पुरस्कार हासिल किया।

क्रमांक	ग्रुप	नाम	पोजिशन
1.	C	चि. अभिषेक (392)	7वाँ
2.	C	चि. ऋषभ (381)	9 वाँ
3.	D	चि. सूरज (255)	6 ठा
4.	D	चि. अविनाश (260)	7 वाँ
5.	D	चि. अमित (319)	8 वाँ
6.	D	चि. अमित (248)	10 वाँ
7.	E	चि. अमृत (31)	4 था
8.	E	चि. राजकुमार (26)	6 ठा

NCC की गतिविधियाँ:-

1. आर्मी विंग: इस वर्ष श्री अंजनी कुमार पाठक के निर्देशन में 11.5.2015 से 20.5.2015 तक राँची के मोराहाबादी मैदान में आयोजन CATC कैम्प में हमारे विद्यालय के 10 कैडेटों ने हिस्सा लिया। पुनः 15.6.2015 से 24.6.2015 तक आयोजित CATC कैम्प (जिसका आयोजन मुख्यतः विश्व योग दिवस के लिए था) में हमारे विद्यालय के 47 कैडेटों ने हिस्सा लिया। अंत में RDC कैम्प के लिए तीन कैडेटों का चयन किया गया जिसका आयोजन धनबाद में 11.09.2015 से 20.09.2015 तक हुआ।

नेवल विंग: श्री अंशुमान चटर्जी के निर्देशन में इस वर्ष 5.10.2015 / 14.10.2015 तक पटना में आयोजित CACT कैम्प में हमारे विद्यालय के 30 कैडेटों ने हिस्सा लिया जिसमें हमारे कैडेटों ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

एयर विंग: इस वर्ष विद्यालय के तीस कैडेटों ने श्री अभिषेक मिश्र तथा श्री रविप्रकाश सिंह के कुशल निर्देशन में राँची में आयोजित CATC कैम्प में हिस्सा लिया इस कैम्प का मुख्य उद्देश्य विश्व योग दिवस 21जून को अधिक से अधिक कैडेटों की भागीदारी थी कैम्प में आयोजित वॉलीवॉल प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय को प्रथम स्थान मिला।

स्काउट एण्ड गाइड:- 22 फरवरी को स्काउटिंग के संस्थापक बेडेन पावेल के जन्मदिन पर विचार दिवस मनाया गया। उसके अलावे प्रथम और द्वितीय सोपान के स्काउट छात्रों के लिए एक शिविर कैम्प का आयोजन किया गया तथा दिनांक 28.09.2015 से 01.10.2015 तक लातेहार जिला, भारत स्काउट और गाइड की ओर से प्रथम सोपान एवं द्वितीय सोपान का प्रशिक्षण शिविर नेतरहाट में संपन्न कराया गया।

बधाई:-

- इस वर्ष विद्यालय के उप–प्राचार्य श्री राम नरेश सिंह ने पुनः प्राचार्य पद ग्रहण किया। इस गुरुतर–दायित्व को स्वीकार करने के लिए उन्हें सम्पूर्ण विद्यालय–परिवार और सर्जना की ओर से बधाई।
- इस वर्ष तृतीय वर्गीय कर्मचारियों की भी नियुक्ति हुई। श्री नवल किशोर पन्ना, श्री वैद्यनाथ हेमब्रम, श्री शशिभूषण तिवारी ने लिपिक पद पर, श्रीमती अंजना मिंज, श्री रितेश कुमार पाठक ने स्टोर कीपर पद पर और श्री कैलाश भगत एवं श्री दिनेश कुमार कुशवाहा ने चालक पद पर योगदान दिया। इन सबों को बधाई।
- इसके अतिरिक्त निम्नलिखित चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों ने भी अपने योगदान से विद्यालय परिवार को समृद्ध किया:–

नाम	पद	नाम	पद
श्री अशोक कुमार	पियून	श्री गणेश शर्मा	चौकीदार
श्री बसंत कुमार महली	पियून	श्री शिलदेव उराँव	माली
श्री आनंद करकेट्टा	कुक	श्री सोमरा महली	स्वीपर
श्री मधेश्वर नायक	स्वीपर	श्री महावीर नायक	स्वीपर
श्री अनिल कुमार	चौकीदार	श्री इन्दू किसान	कुक

नाम	पद	नाम	पद
श्री राजकिशोर नायक	पियन	श्री विश्वनाथ किसान	पियून
श्री जुगसा किसान	कुक	श्री गोपाल किसान	लैब पियन
श्री विजय करकेट्टा	पियन	श्री सतेन्द्र किसान	कुक
श्री सम्भरू किसान	माली	श्री पल्लू किसान	पियन
श्री मनोज किसान	आश्रम सेवक	श्री दीनू किसान	पियन
श्री प्रकाश उराँव	पियून	श्री श्यामलाल उराँव	कुक
श्री मनीष कुजूर	आश्रम सेवक	श्री साधु उराँव	माली
श्री कमल लकड़ा	पियून	श्री राजू लकड़ा	चौकीदार
श्री रामावतार उराँव	माली	श्री रमेस पासवान	चौकीदार
श्री रमेश सीड़ी पासवान	माली	श्री अशोक उराँव	लैब पियून
श्री जकेरियस मिंज	कुक	श्री रामधनी मिंज	माली
जमीला खातुन	पियून	श्री छोटना उराँव	माली
श्री मखलू किसान	माली	श्री नेमा उराँव	चौकीदार

इन सबको ढेर सारी बधाई और शुभकामनाएँ!

अतिथि आगमन - इस वर्ष डॉ. नीरा यादव, माननीया मंत्री, मानव संसाधन विकास विभाग एवं सचिव श्रीमती आराधना पटनायक का विद्यालय भ्रमण एक महत्वपूर्ण घटना है। इनके आगमन से विद्यालय में नव उत्साह का संचार हुआ है।

इस वर्ष भी विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्रों एवं अन्य अतिथियों का आगमन विद्यालय परिवार के लिए आह्लादक एवं प्रेरणादायक रहा। झारखण्ड के सिमडेगा के सुदूर देहात घाघमुंडा से निकलकर प्रतिभा के अनंत आकाश को छूने वाले एवं भारतीय पुलिस सेवा के शीर्ष तक पहुँचने वाले डॉ० त्रिनाथ मिश्र के आगमन से विद्यालय में नव उत्साह का संचार हुआ। नेतरहाट के प्रथम बैच के छात्र एवं लेखकीय व्यक्तित्व के स्वामी डॉ० मिश्र ने छात्रों को अपने संभाषण एवं आकर्षक व्यक्तित्व से विमुग्ध कर लिया।

इसी बैच के दूसरे महापुरूष प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ० के० के० नाग को देखना विद्वत्ता और विनम्रता के मणिकांचन संयोग से परिचित होना था। विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति रहे डॉ० नाग ने नेतरहाट परिवार को प्रगति–पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा दी।

हमारे विद्यालय के आलोक स्तंभ श्री अनंत सिंह, अतिरिक्त गृह–सचिव, भारत सरकार का विद्यालय में आगमन एक महत्वपूर्ण आत्मीय एवं गौरवशाली अनुभव रहा। इनसे छात्र और शिक्षक प्रेरित प्रफुल्लित हुए।

1977 बैच के पूर्ववर्ती छात्रों का आगमन भी उल्लेखनीय है। इनके द्वारा विद्यालय–परिवार को रात्रि–भोज भी दिया गया।

प्रख्यात शिक्षाविद् श्री अरूण रॉय ने छात्रों को विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन हेतु नवोन्मेषी तरीके अपनाने की प्रेरणा दी।

1958–64 बैच के छात्र रहे कैप्टन शंभु प्रसाद सिन्हा ने लगभग एक सप्ताह के नेतरहाट–प्रवास द्वारा यहाँ के छात्र–समुदाय को प्रेरित किया। उन्होंने विशेषकर प्रथम वर्ष के छात्रों को स्मरण–शक्ति बढ़ाने के रोचक उपाय बताए।

झलकियाँ

झलकियाँ

छात्रजीवनम्

इदम् एकं चिरन्तनं सत्यमस्ति यत् सर्वेभ्यः मनुष्येभ्यः तस्य छात्रजीवनं अति बहुमूल्यं भवति। बहवः जनाः छात्रजीवनं स्वर्णकालं मन्यन्ते। बहवः जनाः छात्रजीवनं दुखमयं कालमपि मन्यन्ते। अस्मिन् संसारे अनेके पुरुषाः सन्ति ये छात्रजीवनं वाञ्छन्ति तथा अनेके पुरुषाः नेच्छन्ति। परं यदा वयम् अस्माकं जीवनं एकाग्र–चित्तो भूत्वा द्रक्ष्यामः ततः वयं निष्कर्षयामः यत् छात्रजीवनः उपयुक्तः कालः भवति यदा वयं स्वकीयं भविष्यं रचयामः। सर्वदा हि अनुशासने वसामः, सर्वदा हि श्रेष्ठं शृणुयामः, कदापि अपरेषु दोषारोपणं न कुर्याम। उपर्युक्तान् सर्वान् तथ्यान् वयं छात्रजीवने एव गृहणीमः। एतत् कदापि संभवो नास्ति यत् वयं स्वकीयां त्रुटिं एकदैव अवगच्छेम। अस्मिन् संसारे प्रत्येकेण मनुष्येण त्रुटिः भवति। एतत् सर्वेषां कृते आवश्यकं, यतः ऋते स्खलनात् वयं ज्ञानं न प्राप्नुमः। एकस्य छात्रस्य जीवनं एकस्य महात्मनः साधोः च जीवनं भवति, एतत् कदापि न मन्यामहे। नैतत् अस्माकं कृते उचितम्। यतः छात्रजीवनं न केवलं अध्येतुं अपितु जीवनस्य सर्वान् आयामान् स्पर्शार्थम् अस्मान् अवसरं प्रददाति। जीवने वयं छात्राः नवैः विचारैः परिचिताः भवामः। छात्रजीवने उच्छृंखलतायाः चञ्चलतायाः अपि महत्त्वं हातुं न शक्यते। वस्तुतः छात्र–जीवनं अस्मान् छात्रगण ाान् प्रशिक्षयति यत् वयं कथं कठिनकार्येण संघर्षं कुर्याम। इदं भणति यत् परिश्रमस्य न कोऽपि अन्यः विकल्पः अस्ति। अतः अस्माभिः स्वकरणीयं कार्यं सोत्साहपूर्वकं आत्मविश्वासपूर्वकं च कर्तव्यम्। एकस्य छात्रस्य कर्तव्यं भवति यत् सः तं परितः उपलभ्यमानानां संसाधनानाम् उपयोगं करोति वा न। छात्रस्य कृते अध्ययनं महत्वपूर्णं भवति, अस्मिन् सन्देहो नास्ति, परं प्रायः दृश्यते यः छात्रः अध्ययने कुशलो भवति सः छात्रः अन्येषु बहुषु क्षेत्रेषु अपि कुशलो भवति। अतएव अस्मान् सर्वान् छात्रान् स्वकीयानि सर्वाणि कार्याणि शोभनेन सुकरेण च कर्तव्यानि भवन्ति । छात्रजीवने यः आलस्यं करोति सः कदापि सफलतां न प्राप्नोति। यथोक्तम् –

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

अतः सफलतायाः कृते परिश्रमम् अवश्यमेव करणीयम्। यदि वयं छात्राः उपर्युक्तानि सर्वाणि कथनानि अनुपालयामः तर्हि अवश्यमेव विजयी भविष्यामः लक्ष्यं च प्राप्स्यामः। छात्रजीवनम् अस्मान् भविष्यमाणानां संकटानां कृते संघर्षार्थमपि प्रेरयति। वयं सर्वे जानीमः यत् भूतकालो कदापि न आगमिष्यति। अतः सर्वैः अस्माभिः छात्रजीवनं सम्यक् रूपेण मनोयोगेन च व्यतितव्यम्।

प्रिंस राज, १३४
चतुर्थ वर्ष

आश्रम संस्कृतिः

नेतरहाटविद्यालयस्य आश्रमसंस्कृतिः अपूर्वा अद्भुता च अस्ति। इयं बालकेभ्यः कुटुम्बवत् अस्ति। छात्राः आश्रमे आश्रमाध्यक्षस्य सान्निध्ये वसन्ति। तेषां निर्देशने आश्रमस्य सर्वाणि क्रियाकलापानि कुर्वन्ति। विद्यालये एकविंशतिः आश्रमाः सन्ति। एकस्मिन् आश्रमे विंशतिः पञ्चविंशतिः वा छात्राः निवसन्ति। आश्रमे छात्राः स्वकीयानि सर्वाणि कार्याणि स्वयमेव कुर्वन्ति। आश्रमे छात्रान् स्वावलम्बनस्य चरित्रनिर्माणस्य सदाचारस्य कर्तव्याकर्तव्यस्य च शिक्षा दीयते। आश्रमे छात्राः प्रतिदिनं यथायोग्यं परस्परं प्रणमन्ति स्वाध्यायं च कुर्वन्ति। ज्ञानं विद्यां वा विना मनुष्यः अपूर्णः भवति, पशुः कथ्यते यथोक्तं भर्तृहरिणा –

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

नेतरहाटपठारे प्रतिवर्षं दुर्गापूजा, दीपावली, सरस्वतीपूजा, छठपूजा इत्यादि उत्सवानाम् आयोजनं क्रियते। अतः वयं सर्वे छात्राः अत्र गृहस्य वातावरणम् अनुभवामः। अत्रत्याः सर्वे कार्यक्रमाः छात्रेभ्यः रोचते।

शुभम कुमार, १३३
चतुर्थ वर्ष

तावत् पुरुष उच्यते

अस्यां पृथिव्यां मर्त्यलोके वा यः जन्मग्रहणं करोति तस्य तु मरणं ध्रुवं भवति। बहवः मानवाः अजायन् परं सर्वे दिवङ्गताः। ये यशश्विनः अभवन् ते मृत्वा अपि अमराः सन्ति। महाभारतग्रन्थे उल्लेखितमस्ति यत् यदा यक्षः प्रश्नं करोति –

व्याख्याता मे त्वया प्रश्नाः याथातथ्यं परन्तपः।

पुरुषं त्विदानीं व्याख्याहि य वै सर्वधनी नरः।।

प्रश्नं श्रुत्वा युधिष्ठिरः अवदत् –

दिवं स्पृशति भूमिः शब्दः पुण्येन कर्मणा।

यावत् स : शब्दो भवति तावत् पुरुष उच्यते ।।

अस्मिन् भूभवने क ईदृग् जनो यो यशो न कामयते। परं यशो तु नास्ति सुलभम्। तत् यशः नितान्तमेव दुस्साध्यमस्ति। महान्तं त्यागं यशः अपेक्षते। इदं यशः तु तमेव मानवं वरणं करोति यः तदर्थं सर्वस्वमपि तृणमिव मन्यते। तस्य कृते मानवेन सर्वाण्यपि संसारिकाणि सुखानि हातव्यानि भवन्ति। संसारस्य सकलान्यपि वस्तूनि गिरिनदीवेगोपमानि सन्ति। सन्ति तानि सलिलबुद्बुदनीकाशानि। तेषां दशा सान्ध्य–गगनरक्तिमेव भवति। एष संसारः स्वप्न एव। यथा स्वप्ने दृश्यमानानि सर्वाणि वस्तूनि समवाप्तायां विनिद्रतायां लीयन्ते तथैव संसारस्य सर्वेऽपि पदार्थाः क्षणान्तरम् एव नश्यन्ति। इति विचिन्त्य यशोऽनुरागी मानवः सर्वत्रापि विरज्यति। यश उपासको मानवो महान् भवति –

पृथ्वी दह्यते यत्र मेरूश्चापि विशीर्यते।

सुशोषं सागरजलं शरीरे तत्र का कथा।।

मानवः यासां सुखसम्पदां कृते दुष्कर्माण्यपि कर्तुम् उपसरति स यस्याः पृथिव्याः, यस्याः राजलक्ष्म्याः, यस्याः

सुन्दर्याः च निमित्तेन बन्धु–पितृ–भ्रातृ–मित्रादिव्यापादनादपि न विरमति ताः सुखसम्पदः सा पृथ्वी, सा राज–लक्ष्मी, सा सुन्दरी च क्षणान्तरेण एव विद्युत्प्रभा इव अन्तर्दधति सर्वाः। को न वेत्ति पुरा हिरण्यकशिपु–रावण–वाणासुरप्रभृतयोऽनेके ते भूपतयः अभवन् येषां पार्श्वे सकलानि सुखानि आसन्, येषां चरणेषु सकलापि पृथ्वी प्रणतमस्तका भूत्वा "किं करोमि, आज्ञापयन्तु म् "इति निवेदयन्तां सप्रश्रयं समतिष्ठत य संसारस्य सर्वेऽपि शूरर्षभाः येभ्यः सदाविभ्युः, देवाः अपि येभ्यः स्वस्वसेवां समर्पयन्तः स्वान् धन्यान् अमन्यत ते समुत्पादितकालहृदयसाध्वसा अपि श्रीमन्तः अद्य कुत्र सन्ति? न ताः संपत्तयः एव सम्प्रति तेषां पार्श्वे सन्ति, न ते स्वयमेव सन्ति। कालेन सर्वाणि वस्तून कवली क्रियन्ते। मानवः यानि सदसत्कर्माणि अनु–तिष्ठति तज्जनितं यशोऽपयशश्चावशिष्येते। सर्वेषां विनाशं विलोक्यैव ज्ञानवन्तः विवेकशालिनः सत्यद्रष्टारः जनाः सर्वामपि स्वकीयां शक्तिं यशः समुपार्जने एव प्रयोगं कुर्वन्ति। सर्वेषामपि पदार्थानां नाशः तेषां सख्यः भवति परं यशसः विनाशः कदापि न। राजलक्ष्मी यदि याति, यातु प्राणेभ्योऽपि प्रियपुत्रकलत्रादीनां विच्छे–

दः यदि भवति, भवतु जीवनस्य नाशः अपि यदि जायते जायताम्, परं न केनापि प्रकारेण यशः मालिनी भवेत् तत् तान् हित्वा कुत्रापि न गच्छेत्। स्वल्पेन अपि ध्यानेन विचार्यते तदा यशसः उपकारित्वम् उपादेयत्वं, सद्बन्धुत्वं, सन्मित्रत्वम् अनायासपूर्वकमेव विदितम् आयान्ति। यशः अस्मान् निन्द्यात् कर्मणः वर्जयति, अस्मान्

दूरितेभ्यः निवारयति, अन्यायात् अस्मान् दूरीकरोति, व्यभिचारात् अस्मान् पराङ्मुखी करोति। तत् यशः सर्वविधेभ्यः अपि अत्याचारेभ्यः अस्मान् पितेव, गुरुरिव, मित्रमिव, कान्तेव पृथगेव स्थातुम् उपदिशति मधुरम् –

मित्रम् कलत्रमितर : परिवारलोके, योगैकसाधनमिमाः किल सम्पदो न।

एकः क्षणः स तु भविष्यति यत्र भूयो, नायं न यूयमितरे न वयं न चैते ।।

यशस्वीपुरुषः विनश्वरपदार्थहेतोः कदापि अजरममरञ्च यशः न परित्यजति। भौतिकबलानां प्रयोजनं भावि–जीवनस्य हिताचरणम् अस्ति न तद्विनाशनं किञ्च तत्पातनम्। सुधियः अपि न कदापि भौतिकीसम्पदः निन्दन्ति, यः हि तासाम् उपयोगः नैजभाविजीवनं विध्वंसयितुं, मानवजीवनचरमलक्ष्यभूतस्य अपवर्गस्य उपरि प्रहारं कर्तुं परमात्मप्रदत्तान् बुद्धिमतः अहंकारेन्द्रियसत्वादिगुणरुपानुपमोपहारान् भङ्क्तुं चूर्णयितुं च प्रयतते। संसारस्य विषयोपभोगेभ्यः शास्त्राणि मानवं न वर्जयन्ति। तानि तु विषयोपभोगैः स्वस्य मानव–जीवनस्य आत्मनः स्वकीयागामिजीवनस्य परमार्थिकस्य कल्याणस्य च विनाशनान् मानवं प्रत्यादिशन्ति। विषयानाम् उपयोगः तेन प्रकारेण विधातव्यः येन तदुपभोगः अपि यथायथं भवितुम् अर्हेत्। नैजं मङ्गलम्,भविष्यत् जीवनम्, अपवर्गः च न निहितः भवेत्, केवलम् एतत् शास्त्राणां सतां महात्मनां च उपदेशस्य उद्देश्यम् अस्ति। एतादृशं कार्यं तदैव भवितुमर्हति यदा–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

अस्माकं पूर्वजाः यशसि स्निह्यन्ति स्म। तेषां चरित्रं लाञ्छितं स्यात्, तेषां कीर्तिः दूषिता भवेत् इत्येतत् न ते असहन्त। गौरवं संरक्षितुं वंशस्य महिमानं पालयितुम्, नैजं नाम धवलयितुं, स्वकीयं व्यक्तित्वं चरित्रं च जगति प्रथयितुं ते निरन्तरं प्रयत्नं कुर्वन्ति स्म। एषा दृढ़ीयसी कीर्तिरक्षणभावना तान् सदा दुष्कर्मेभ्यः अत्रायत्। अद्यतनः बहवः जनाः धर्मं निन्दन्ति, सत्यमुपहसन्ति, सच्चरित्रपुरुषान् तिरस्कुर्वन्ति, कृतज्ञतां

अवजानन्ति, वचननिष्ठां च अपवदन्ति। शास्त्राणां वचनं प्रमत्तानां प्रलापं मत्वा किञ्चिदपि तत्र कर्णेन्द्रियं न प्रयुञ्जन्ति यत्र सन्तः महात्मानः तिष्ठन्ति तस्यां दिशि एकवारं दृष्टिक्षेपं पापाचरणं मन्यन्ते। तेषां जन्मना कोऽपि कस्यापि लाभः न भवति, तेषां निधनेन कस्यापि हानिः अपि न भवति। तेषां स्थित्या वस्तुतः भूः भारवती एव भवति। एवं विधानां भारभूतानां जीवनं कवयः विद्वांसः च शोचन्तः तेषामेव जनानां जीवनं धन्यं मन्यन्ते यैः मानवता कृतार्थतां याति।

यो नात्मना न च परेण च बन्धुवर्गे,

दीने दयां न कुरुते न च मर्त्यवर्गे।

किं तस्य जीवितफलं हि मनुष्यलोके,

काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।

आचार्य सुरेश कुमार झा
विभागाध्यक्ष संस्कृत

सा विद्या या . . . ?

'विद् ज्ञाने' इत्यस्मात् धातोः विद्याशब्दः सिद्ध्यति। वेत्ति यथार्थतत्त्वं यया सा विद्या। विद्या शिक्षा वा जीवनस्य सौन्दर्यम्। शिक्षयैव जगदस्त्याधृतमिदम्। अनेनैव जीवनस्य प्राप्यं प्राप्यते। एतद्विहीनस्य जगत कल्पनाप्यस्त्यतिदुखकरा। यथा जगति नान्धः सुरक्षितः गन्तुं पारयति तथैव वयं ज्ञानं

विनाऽसुरक्षिताः। भर्तृहरिणा उक्तम् – विद्याविहीनः पशुः। विद्यया विना यथा पशुः धर्माधर्मयो– र्विचारं कर्तुं न शक्नोति तथैव मानवोऽपि विद्यया विहीनः पापपुण्ययोः कर्तव्याकर्तव्ययोर्विचारं कर्तुं न

पारयति। विद्याविहीनो मानवोऽन्ध एव निगद्यते। यथोक्तं आचार्यप्रवरदण्डिना –

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

अत्र शब्दाह्वयं ज्योतिर्विद्यैव। यदि विद्याज्योतिरस्मिन् जगति न भवेत् तर्हि जगदिदमखिलमपि

अन्धकारावृतं संपत्स्येत। यदा मानवः जीवनस्य जटिलसमस्यापाशेन ग्रसितो भवति तदा विद्या प्रदीपवत् कमपि सरलमार्गं प्रदीपयति। तथा च – "घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्"। विद्या विनयं ददाति, विनयेन मानवः पात्रतां याति, पात्रत्वात् धनमाप्नोति। अनेन मानवो दानं ददाति, तेन च पुण्यार्जनं करोति। यथा –

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम्।।

आदर्शवादिनोऽनुशासनमात्मनश्च साक्षात्कारमेव शिक्षायाः लक्ष्यम्मन्यन्ते। अन्ये प्रकृतिवादिनश्च मनुष्यस्य स्वतन्त्रस्वत्वविकासमेव तल्लक्ष्यत्वेन स्वीकुर्वन्ति तथापि सर्वैरेतदेकमतेन स्वीक्रियते यत् शिक्षा मनुष्यस्य विकासायोन्नत्यै चास्ति। परमद्य यदा वयं शिक्षितजनाञ्जगति पश्यामो न क्वचिद् दृश्यते शिक्षायाः प्रभा तेषु। सर्वेऽप्यद्य सन्ति चिन्तिताः मानवमूल्यानां ह्रासेण, स्वार्थपरतया, विद्वेष –भावनया, पारिवारिकविघटनेन च। समेऽपि शिक्षाशास्त्रिणः अस्य समाधानाय च समुत्सुकाः दृश्यन्ते।

प्राचीनशिक्षाप्रणाल्यां योऽपि जनः गुरुमुपगच्छति स्म, सः ज्ञानसाधनपरो भूत्वा "द्विज" इति कथ्यते स्म। कोऽस्त्यस्य शब्दस्य सन्देशः? मनुष्यः ज्ञानं प्राप्य गुरुं प्राप्य सः न स्यात् यः सः पूर्वमासीत्। तस्य शिक्षितस्य गुरुमुपागतस्य जनस्य जीवनस्य परिवर्तनं स्यात्। तस्य जीवनस्य सर्वविधक्रियाकलापेषु शिक्षायाः प्रभा दृश्येत। अत एव गुरुकुलशिक्षायां प्रथममेवादर्श –

जीवनचर्यया शिक्षणेनैव शिक्षणस्य शुभारम्भो भवति। अद्य जनः स्नातकोत्तरशिक्षां प्राप्यापि जीवन– चर्यायाः आदर्शस्वरूपेणानभिज्ञो भवति। कैषा शिक्षा मनुष्यस्य निर्माणे सक्षमा? किमनया वयं क्षाया उद्देश्यमवाप्तुं शक्नुमः?

साक्षरतैव शिक्षा नास्ति। अक्षरपरिचयेन न कस्यचिद् आदर्शसमाजस्य निर्माणं भवितुं शक्नोति। " धूम्रपान निषेध "इति लिखिते वाक्ये तमधः जनाः धूम्रपानप. राः, किं वयं शिक्षिताः? प्रश्नः साक्षरतायाः नास्ति प्रश्नोऽस्ति अक्षराणां सन्देशस्य सम्मानस्य। अत एव अस्माकं आचार्याः मन्यन्ते –

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः, यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।

क्रियान्विता हि विद्या फलवती भवति। विद्यावान् कर्मविहीनो नरः मूर्ख एव निगद्यते। यः क्रियावान् सदाचारसम्पन्नःस एव विद्वान् कथ्यते। अतः वयमक्षरसन्देशं स्वीकृत्यैव शिक्षिताः भवामो न चाऽक्षरपरिचयेन। एते येऽपि प्रश्नाः अद्यतनीये विश्वे समस्यारूपेण समुपस्थिताः सन्ति तेषां समेषामपि समाधानं शिक्षयैव भवितुं शक्नोति परं शिक्षायाः जीवनेन सह सम्बन्धः तदर्थमावश्यकम्। विद्यया मानवः विपुलां कीर्तिं धनञ्च लभते। महर्षिदयानन्दः, स्वामिविवेकानन्दः, स्वामिश्रद्धानन्दः, रवीन्द्रनाथठाकुरः, राधाकृष्णः, ए०पी०जे० अब्दुलकलामो वा विद्ययैव विपुलं यशः प्राप्नुवन्तः। कल्पलतेव विद्या मानवानां सर्वाणि कार्याणि साधयति –

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ।। इति।।

डॉ. ओम प्रकाश आर्य
संस्कृत शिक्षक

नेतरहाटे वृक्षारोपणम्

झारखण्डप्रान्ते स्थितः नेतरहाटः प्राकृतिकसुरम्यतायाः रमणीयतायाः च कृते अधुनापि विश्वविश्रुतः अस्ति। अत्र प्रतिदिनं पर्यटकाः भ्रमणार्थमागच्छन्ति। अत्रत्याः प्राकृतिकसौन्दर्यं, सूर्योदयं, सूर्यास्तं च दृष्ट्वा जनाः आनन्दस्यानुभूतिं लभन्ते। नेतरहाटस्य सघनकुञ्जराशिः चीड़वृक्षस्य च सुखदछाया सहसा पर्यटकानां दर्शकानां च हृदयं स्वकीयं यौवनं प्रति आकर्षयति।

अस्माकं संस्कृतौ वृक्षाः देववत् पूज्यन्ते।

गृहस्य चत्वरे स्थितः 'तुलसी' पौधे संसारस्य सर्वे जनाः देवी देवतानां च आश्रयं मन्यन्ते। एतादृशी मान्यता विद्यते यत् सुखदुखे तेऽपि अस्माकं रक्षणं कुर्वन्ति। एवं वृक्षाः मातृपितृवत् अस्मान् स्नेहसुधां सिञ्चन्ति। सर्वरोगेषु लाभप्रदः निम्बवृक्षः अस्मान् स्वास्थ्यं नैरोग्यं च प्रदास्यति। अस्माकं प्राचीनभारतीयसभ्यतायां संस्कृतौ च वनसंपदायाः महत्त्वस्य वर्णनं विस्तरेण प्राप्यते।

औपनिवेशिकशासनकाले औद्योगिकरणेन नसंख्यायाः विस्फोटैरपि वृक्षाणां कर्तनं प्रवर्धते। छायावतां वृक्षाणां स्थाने उद्योगान् अस्थापयत्। येन वातावरणं प्रदूषितं जातम्। सर्वकारेण 1950 तमे ईस्वीये वर्षे वनमहोत्सवस्य आयोजनं कृत्वा वृक्षारोपणस्य योजना कृता। ततः प्रभृति अधुनापर्यन्तं समये–समये वृक्षारोपणं क्रियते। अस्मिन् क्रमे नेतरहाटविद्यालयेऽपि विगत–एक–द्विवर्षात् सर्वकारस्य वनविभागैः वृक्षारोपणं क्रियते। वनविभागस्य अधिकारिभिः, नेतरहाटविद्यालयसमितेः सभापतिमहोदयैः, प्राचार्यैः, शिक्षकैः, छात्रैश्च सहस्रशः वृक्षाणाम् आरोपणं कृतम्। मानवेभ्यः वृक्षाः बहूपयोगिनः। सूर्यस्य प्रकाशे बहुमात्रायां प्राणवायुं निर्माय वृक्षाः वातावरणं शुध्यन्ति। वृक्षारोपणेन तापमानो नियन्त्रितो भवति। उष्णशीतलवायुना वृक्षाः मानवान् जीवजन्तून् च रक्षन्ति। वृष्ट्यर्थमपि वृक्षाः लाभप्रदाः। नेतरहाटसदृशपठारक्षेत्रेषु वृक्षसम्भवात् बहुवृष्टिकारणादपि मृदा ह्रासो न भवति। अतः देशे राज्ये च सर्वत्र सर्वैः वृक्षारोपणं कर्तव्यम्।

हरदीप महतो
तृतीय वर्ष

विवेकस्य महत्त्वम्

प्रजापालकः एकः नृपः आसीत्। तस्य कार्येण प्रजाजनीयाः संतुष्टाः आसन्। परं तस्य अनुजः राजपदं प्राप्तुमिच्छति स्म। अस्याः महत्त्वकांक्षायाः पूर्त्यर्थं सः कुटिलमाचरणमाचरत्। तेन नापितमाहूय उक्तं यत् श्वः राज्ञः क्षौरकार्यसमये उस्तरेण तस्य ग्रीवां छिन्नं कुर्यात् येन सः म्रियेत। अस्य कार्यस्य कृते त्वां बहुशो धनं दास्यामि। लोभाभिभूतः नृपः तं कार्यं कर्तुं नृपं वचनमददात्। अपरेद्युः नापितः यथैव राज्ञः क्षौरकार्ये संलग्नोऽभवत् तदैव अकस्मात् तस्य दृष्टिः समक्षं लिखितं श्लोकस्योपरि गता –

सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धा स्वयमेव सम्पदः ।।

सहसा किमपि कार्यं न कुर्यात्। अविवेकेन कृतं कार्यं भयावहं विपत्तिं जनयति। इति विचार्य सः नृपस्य भ्रातुः कार्यं न अकरोत्। सोऽचिन्तयत् यदि नृपस्य भ्रातुः वार्तां स्वीकरोमि तर्हि किं प्राप्स्यामि? प्रभूतं धनम्, पदम्, प्रतिष्ठाम्। परं सर्वं राज्यं दुराचारिणं भ्रातरं प्रति कर्तुं किमुचितं
भविष्यति? प्रजापालकस्य नृपस्य हत्यायाः परिणामं तु मिलिष्यत्यैव। सहैव जनाः अपि मामुपरि विश्वासं नैव करिष्यन्ति। इति विचारं कुर्वाणं नापितं नृपः अवदत् – तं श्लोकं कथं पश्यसि? क्षौर–कार्यं कुरु। नापितः प्रणम्य अकथयत् – हे राजन्! रक्ष माम्। नृपोऽवदत् – का वार्ता? निर्भयं भूत्वा वद। नापितेन उक्तम् – राजन्! भवतः अनुजेन मामुक्तं यदहं भवन्तं ग्रीवामनेन उस्तरेण छिन्नं कुर्याम्, परं श्लोकमिमं पठित्वा मयैतत् कार्यं न कृतम्। नापितस्य वार्तामेतां श्रुत्वा प्रसन्नः नृपः तं पुरस्कृतवान्। नापितोऽकथयत् – राजन्! अनेन श्लोकेन अद्य भवतां सहैव ममापि च प्राणस्य रक्षा सञ्जाता। इत्युक्त्वा तेन नापितेन तस्याज्ञातकवेः नृपस्य च द्वयोः धन्यवादं कृतम्। नृपः तं श्लोकं लेखयित्वा प्रासादस्य सर्वेषु भागेषु अस्थापयत्। अधुना राजा स्वस्य भ्रातुरुपरि ध्यानं दत्तवान्। राज्ञः भ्राता शान्तः नासीत्। सोऽधुनापि समयमवलम्ब्य नृपं हन्तुमिच्छति स्म। संयोगवशात् नृपः रुग्णः सञ्जातः। तस्य अनुजेन चिन्तितं यत् कीदृशं शोभनं समयं यत् नृपः अस्यां रुग्णावस्थायामेव मृतः स्यात्। सर्वे चिन्तयिष्यन्ति रुग्णः आसीत् मृत्युमुपागतः। स्वकीयमेतत् कार्यं कारयितुं तेन राजवैद्यः धनस्य लोभं दत्तम् उक्तं च श्वः नृपं विषमिश्रितं औषधिं दत्त्वा मारयेत्। विषयुक्तं औषधिं दत्तमानः तस्यापि दृष्टिः समक्षं लिखितं श्लोकस्योपरि गता। श्लोकस्य पठनेन तस्य हृदि परिवर्तनं जातम्। भीतः सन् सः नृपमवदत् – नास्त्येषा सम्यगौषधिः। नृपोऽवदत् – सत्यं वद, का वार्ता? वैद्यः राजानं सर्वं वृत्तान्तमकथयत्। नृपः यदा स्वस्थो जातः तदा सः स्वकीयं कुटिलं भ्रातरं कारागृहे प्राक्षिपत्। तत्पश्चात् महान्तं कविं भारविम् अन्वेष्य नृपः तस्य सम्मानमकरोत् येनेदं सुन्दरं श्लोकं रचितम् –
"सहसा विदधीत न क्रियाम्०"।

वस्तुतः विवेकशून्यः मानवः कदापि सफलतां प्राप्तुं न शक्यते।

अविवेकः जनः निर्णये सदा अक्षमो भवति।
विवेकाभावे जनः दिग्भ्रमितो भवति।
अतः सर्वैः विवेक–पूर्णं कार्यं कर्तव्यम्।

आनन्द किशोर
पञ्चम वर्ष

Experience the World

"Experiencing the World", is an elegant and powerful formulae for true success and happiness; relevant for turbulent time; it could radiate some kind of positive energy urgently needed for discovering mettle.

To begin with, I am blessed to be in an environment of extra-ordinary people in my life, failing which it would not be possible for me to do what I do to advance my mission of life.

A new born child represents perfection and the state of being to which, each of us in duty bound to return. Wide population spectrum does not know how to live until it is hour to die and that is a shame. Most of us spend the best years of our lives running after the coin, owning apartments, watching television, finding faults in others. Most of us die at twenty five and buried at eighty five or so. Will you allow that to happen to you? Please do not let that happen to you.

Many do cry, this is not a better place to line in. There are wars, famine, crimes, distrust, disobedience and the like; there is still much darkness in the world. "Quit true" but trust me, there is also more light in it than the darkness ever. Darkness is the name given to the absence of light, and candles are being lit all across the planet. Big Bank for the further hope is knocking you doors, open the doors and allow it to enter.

True, money makes life easier and affords a good deal of freedom. Is it easier to stick your head in the sand? Yes, like and Ostrich (that confront your resistance to the truth). And the truth of the matter is that there is absolutely nothing wrong with making money and possessing beautiful things, amassing wealth. Have a lovely home, drive a luxury car, travel to exotic place, wear costly clothes, and live in palacial building, enrolling your children in reputed institutions in the pursuit of so called costly and better education. I am not suggesting that you should stop experiencing and enjoying such worldly pleasures. Astonishing truth, they were created by the same hidden power(force) that created the stars, the clouds, the mountains, the trees, the streams and the oceans, flora and it fauna.

Remember, these worldly possessions must not be your driving force. Do not base your identity and your self-worth on them. Know that ultimately these are perishable, and will not last. Key things to be born in mind. Have your beautiful things but do not let them to own you. Do not permit them to enslave you. Stay with the main aim of your life, discover your highest potential giving of yourself to others and making a difference by living for something more important than yourself. Success is important but significance is even better, being the real name of the game. Ends are fine but in no way, means to be at lowest ebb. Mahatma Gandhi advocates for right-means.

"Be gentle with yourself. We grow and mature from our mistakes. Good judgement comes form experience. Experience comes from making mistakes and mistakes come from bad judgement." The cardinal point is to learn from your mistakes and build a foundation of wisdom. Life is short and the years will slip away very quickly like grains of sand passing through fingers on a hot day at the beach. No cost can bring the years missed. You are meant to shine and let your talents see the light of the day. See how great the emperor Asoka was: Few lines to honor him.

"Across the hazy and weather beaten rocks, And the names of tens and thousands of monarchs that crowd the column of Indian history, the name of Asoka shines and shines almost as a star."

You can blame everyone else what is not happening or working in your life, never having to look at yourself and make the change required. Mind it, every single one of us, greatness written into our DNA. Happiness is our birth right but we have to pay for it.

Life is so fluid. Everything is also always changing. The way you think it is going to unfold is not the way it is going to unfold. Here is the fun of the whole exercise - accept it as a gift. Life will never work out the way your life has unfolded to date. Has it turned out as you planned it would? That is completely true.

I am really going through a hard time right now, to be honest. I have had along the way success ever dreamed of. It is all horrible, unexpected how wonderful many things have turned out.

No one can control life or understand its grand design. Yet, trust me, there is a perfection to it. Even, experiences you are with now, over the tides of time, have a beautiful blessing that has gained enormous value and richness to your life.

Look at Leo Tolstoy sayings, "Just imagine that the purpose of life is your happiness, only then life becomes a cruel and senseless thing. You have to embrace the wisdom of humanity. You intellect and your heart tell you that the meaning of life is to serve the forces that sent you into the world. Then life becomes a joy."

Never make the mistake of keeping it above your commitments to serve the force that sent your here, to make a difference while you walk the planet to love your family and to reclaim your biggest self.

I just don't sleep as much as most people do. Life is short and I do not waste my time. Could die tomorrow - who knows? So, I live each day, every fraction of a second completely. Now, look at the people such as - Mahatma Gandhi, Nelson Mandela, Martin Luther King, Sir C. V. Raman, Mother Teresa and Helen Keller who discovered a cause that they give their lives over to. They connect and commit to some kind of a crusade that they decided their lives could stand for.

Well, "the top one mountain is the bottom of the next." See, you scale one mountain; other peaks (to be conqured) are waiting. The state of imperfection is actually what makes us human. And the deeper you go within yourself, the more you realize how little I know. We grow most from our big challenges. Just, hard times might come to us. We may blame to situation, fate. We start observing the things or the world through sad and hopeless frame of reference or eyes. We receive from life not what we want but who we are. Trust that the winter of your sorrow will transform in the summer of your joy, just as the brilliant rays of the morning sun always follows the darkest volume of the night.

I think I am living the life I dreamed of. I have a lovely and intelligent wife who loves me deeply. I am blessed with two healthy and happy children who are excellent in all they chose to do. I am getting handsome salary. Appreciation also runs after me. But who is knowing of tomorrow? I have discovered that pain and adversity are the horse powers to design individual progress. Nothing helps you learn, grow and evolve more quickly than these two. Suffering occurs when something happens that we did not want or expect. Yes, there is a human side; you meet sufferings; pain hurts you, these will eventually subside and a stronger, wiser you will emerge.

Courage is not the absence of fear but the willingness to walk through your fear in pursuit of a goal that is important to you. Fear and fortunes are two sides of the same coin. Have you ever thought of the head and heart - the role they play in our life? The Head and Heart must function in harmony to live a beautiful life. Live completely in the Head and you cannot sense the breath and rhythm of life.

Live completely in the heart, you can get yourself acting like- love struck fool, with poor judgement and no discipline. To beautify the life, it is all a fine balance needed - one that takes time and experiences ripples to become right. "The only thing you can expect in life is the unexpected, and if you like to make God laugh, tell him you plan."

Dear!

Let me honor your potential and existence. It takes more energy for a body to move in state friction than the same to move in kinetic friction. It takes big resolve and power to overcome the gravitational forces of the crowd and begin to live more truly. The space shuttle uses more fuel during its first three minutes since its take off than it requires during the reminder of its orbit round the Earth for the same reason; there is a pull exerted by the world that takes more energy to overcome. Please overcome it, you must, my friend, to avoid a life of regret and sadness. Nothing good comes without some kind of sacrifice, And good is never late.

Raj Kumar Prasad
Head, Department of Physics
Netarhat Inter College
Netarhat via Gumla
E-mail : rkprasadnet@gmail.com

NUCLEAR MEDICINE

Nuclear Medicine is a medical specially that is used to diagnose and treat diseases in a safe and painless way. Nuclear medicine procedures permit the determination of Medical information that may otherwise be unavailable, required surgery or necessitate more expensive and invasive diagnostic tests.

- Why is it called Nuclear medicine?

  Nuclear medicine refers to ,medicine that is attached to a small quaintly of radioactive material (a radioisotope) this combination is called a radio pharmaceutical. There are many different radio pharmaceuticals available to study different parts of the body.

- How do radio pharmaceuticals work?

- Radiopharmaceuticals are introduced into the patient's body by injection, swallowing or inhalation. The amount given is very small. The pharmaceutical is designed to go to a specific place in the body where there could be disease or an abnormality. The radioactive part of the radio pharmaceutical that emits radiation, known as gamma rays (similar to X-rays), is then detected using a special camera called a gamma camera. This type of camera allows the nuclear medicine physicians to see what is happening inside your body. During this imaging procedure, the patient is asked to lie down on a bed and then the gamma camera is placed a few inches over the patient's body. Pictures are taken over the next few minutes. These images allow expert nuclear medicine physician to diagnose the patient's disease.

- Are Radio pharmaceuticals Safe?

- Absolutely, like any medicine, they are prepared with great care. Before they are used, they are tested carefully and are approved for use by the U.S. Food and drug Administration.

- Is the radioactivity Harmful?

  Although exposure to radioactivity in very large doses can be harmful, the radioactivity in radio pharmaceuticals is carefully selected by the nuclear medicine physician to be safe.

- What Kind of Diseases Can Nuclear Medicine Diagnose?

  Nuclear medicine can diagnose many different kinds of diseases. It can be used to identify abnormal lesions deep in the body without exploratory surgery. The procedures can also determine whether or not certain organs are functioning normally. For example-nuclear medicine can determine whether or not the heart can pump blood adequately. It can determine a patient's blood volume, lung function, vitamin absorption and bone density. It can locate the smallest bone fracture before it can be seen on X-ray. It can also identify sites of seizures, Parkinson's disease, Alzheimer's disease.

- Can Nuclear Medicine Treat Diseases?

  Yes. For instance, thousands of patients with hyperthyroidism are treated with nuclear medicine (using radioactive iodine) every year. It can be used to treat certain kinds of cancers (lymphomas) and it can treat bone pain that is a result of cancer.

- How is nuclear medicine different from an X-Ray, A c t-Scan, an Ultrasound, or an MRI?

  Nuclear medicine can detect the radiation coming from inside a patient's body. All of these other procedures expose the patient to radiation from outside the body using machines that send radiation through the body. As a result, nuclear medicine determines the cause of a medical problem based on organ function in contrast to the other diagnostic tests, that determine the

presence of disease based on anatomy or structural appearance. One nuclear medicine procedure, called a PET (Positron emission tomography) scan, precisely localizes many types of diseases in the body just by determining how the disease use sugar. No other imaging methods has the ability to use our body's own functions to determine disease status.

⊙ How long has nuclear medicine been a medical specialty?

Nuclear Medicine is older than CT, MRI and ultrasound. It was first used in patients over 60 years ago. Today it is an established medical specialty, practiced every day in all major countries in the world. In the US alone more than 333 million procedures have been performed. That is more than every individual living in the united states.

The National Institutes of Health (NIH) promotes research in nuclear medicine and new advances are made every day. The constant refinement of nuclear medicine equipment and procedures and the development of new radio pharmaceuticals promise to serve patients for generations to come.

Radha Kumari
H.O.D.
Biology Department
Netarhat Residential School

The Criying Nature

Have you heard of a crying nature,
From a tree or an animal creature.
Calling for help as now it weeps,
Shouting, for it is in great grief.
Nature had given whatever we need,
But we never care about on which we feed.

One day was there when we were hungry,
Nature gave happily without being angry.
We were naked with nothing to wear;
It was the nature which swept our tears.
When we needed seeds, it gave us roots.
When we needed food, it gave many fruits.

But things have changed to the unselfish nature;
We have become cruel and cunning creature.
Nature gave us wooden wheel;
We exploit it to stainless steel.
It gave us animals and the birds with feathers;
We hunt them down for flesh,bones and leathers.

Nothing we spare, only we exploit;
The thing we find is just to spoil.
We cut down trees, but forget to plant;
But nature spares us for what we want.
We brought out global warming and pollution
But this lack of plants will bring no solution.

We must not forget, God being the constructor
Can at the time be the greatest destructor.
We are the puppets to be played on his tune;
And it takes no time for him to mute this tune.
We are human beings made to try;
With our efforts, we must not make nature cry.
We must pledge to recover our mistake;
Our oath should be real and must not be fake.

Adarsh Kumar
Ashram :-Babha
YEAR :- V

Need of Education to Solve Environment Problem

The most general and probably best known definition for the environment is "everything that surrounds us". This is pretty basic, broad and uninspiring. If we want people to develop proper values about wanting to protect the environment, we need a definition that "Environmental Protection accounts for the complex ecological and social relationships among all species, particularly humans". Thus, a more inclusive definition is: "the environment is the complex set of physical, geographical, biological, social, cultural and political conditions that surrounds an individual or organism that ultimately determines it form and the nature of its survival." For development to be sustainable – to meet the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet theirs – it is essential that people take into account environmental concerns just as strongly as they concentrate on economic progress.

The pressure on the world's environment and ecosystem are numerous and comes from myriad and diverse sources. Natural resources, land, water, forests and various animal species are being degraded or lost at an alarming rate in many places throughout the world. The reasons for the magnitude and rate of this destruction are many and complex. They include poverty, greed, untenable economic models, mismanagement of resources, lack of adequate education and trained personnel, under-development, deforestation, illegal dumping of hazardous wastes, global warming, the depletion of the ozone layer, pollution and many more. Essentially, an over-emphasis on economic development without environmental system considerations lies at the heart of why our planet's environment is in such peril.

Therefore, when the concept of sustainability is applied to our modern society, it takes on added dimensions. Beyond just having our species survive, the sustainability of society implies preserving the capacity to explore, reflect on and understand new things, all the hallmarks and foundations of education.

Environment and education are both vital elements of human existence that can be used to enhance the quality of the human condition. The environment provides the space and essential ingredients for life where humans are able to interact with each other, with the infrastructure and with the environment itself. On the other hand, education is the process and result through which teaching and learning operates. Through this process, knowledge, values, attitudes and skills are imparted to the learner. With the growing awareness of these environmental problems, consideration should be given to

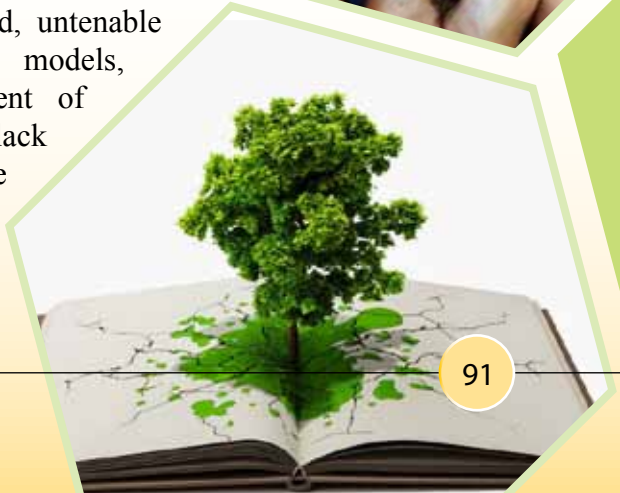

the types of educational programmes that can meet the requirements for creating a sustainable world.

There is no doubt that education is an essential component of development and one of its preconditions. In the Jharkhand region, environmental education has to be given high importance and place in primary as well as secondary education. Concern for nature and natural resources has been a part of Indian civilization for hundreds of generations. The people of Asia share common scriptures and tradition, which are replete with examples that show how their ancestors were environmentally conscious and advocated concepts of sustained usage of resources through many social customs, myths, taboos, traditions and religious beliefs.

Thus, it is time to give careful thought to what type of integrated environment-based education will be most appropriate and how education can best address the current problems in our country. Students need an understanding of ecological concepts or information about what is causing the problem? Are there specific critical thinking skills such as problem-solving or decision-making that can help them understand and tackle the problems? Are there practical skills that can help people solve the problems immediately such as learning how to plant a tree, separate their garbage, recycle and compost? Are they motivated to get involved? Do they agree that environmental problems exist? If not, why not? All these questions assume a different form of "literacy" than has been defined in the traditional sense. We need an "ecologically focused literacy" if we are to conserve and maintain an environment that sustains the human species.

In education, we talk about basic literacy – the ability to read, write and do arithmetic. These skills are believed to be the underlying conditions necessary for people to successfully make a life for themselves and to follow the rules necessary to live in modern society. Ecological literacy may be something even more important, as we are talking about having the knowledge and competence to live on this planet for the foreseeable future and beyond.

Ecological literacy is about understanding the principles of organization of ecosystems and their potential application is to understand how to build sustainable human society. It combines the sciences of systems and ecology in drawing together elements required to foster learning processes toward a deep appreciation of nature and our role in it.

Ecological literacy and systems thinking imply recognition of the manner in which all phenomena are part of networks that define the way any element functions. Systems thinking are therefore necessary to understand the complex interdependence of ecological systems, social systems and other systems, at all levels.

With an understanding of ecological literacy, perceptions will naturally shift. Protecting the environment will become a basic principle for prioritizing thought and action in a sustainable society. In the face of the increasing capacity of industrial systems to destroy habitats and the climate system, the explicit declaration of the principles of ecological literacy, and the resulting awareness of the importance of living within the ecological carrying capacity of the

earth, are increasingly necessary. Whether ecological literacy can address the infamous value/action gap is unclear.

To effectively integrate "environmental protection" into our existing curriculum, it is first important to know what the local, regional and national environmental problems are. It might help to make a list of all the environmental problems you can uncover and then cluster or group the problems according to type. For example, you could divide the problems into waste issues and into those involving the overuse of resources. You might also indicate which problems are most pressing in your local area and whether the problems affect a larger region of the country as a whole.

In thinking about local environmental problems, make sure to consider the role your students play in causing a problem and the role they could play in helping to solve the problem. For example, are they part of the problems now? How are their families connected to the problems? How well do your students understand the problems and from what perspective? Are they motivated to help find solutions? Have any students taken part in efforts to find solutions?

It's also important to think about the future role your students will play in the community.

We should also think how students can help to solve environmental problems now. Can they plant trees, design educational exhibits for the community? Since we are dealing with Environmental Protection as mentioned before, this usually translates into some type of action or behaviour change outcome. Thus, we must think above the approach we will take with our lesson. A Project-based Learning Approach (PBL) with an action component or an experiential learning, but classroom based approach.

Ranjan Kumar Singh
Agriculture Teacher

Examination of Life

God is the examiner,
And we are his examinee.
Life is an answer book,
On which we have to
Write the answer of our exam.

World is the examination hall
In which we are sitting to take exam.
Time allowed three hours.
There are three bells and
Each will ring at an interval.
The first bell rings at childhood,
The second at youth and the third at an old age.

The last and final bell is indicated
By the messenger of god.
And exam gets over.
If we happens to fail, once more
We are reborn to take the exam.
And if we pass, we go to heaven
And no more life again.

Amar Kumar
Ashram:- ARUN
Year:- v

Book Review of-"A Flight Of Pigeons"

"Men never do evil so completely and cheerfully as when they do it from religious conviction."

An aesthetic sentence taken from the desk of Ruskin Bond on his novella-"A Flight Of Pigeons." The sentence seems quite simple as it is formed using very common words but yet it is brimming with a sorus of sense. During a religious conflict or a war, a common man doesn't face bullets, arrows or swords passing through them, but the torment of losing their kith and kin is of no comparison that may not be visible apparently. When fully went through the novella, found it a laudation to such mute sufferers irrelevant of their class, community or religion they belong to.

Instead of spending the whole rainy vacation as an indolent, going through some novel was quite piquant and fortunately, I got a diaphanous novel that lilts with the time passing by, so called "A Flight Of Pigeons" written by Ruskin Bond- an Indian author of British origin. He is known for his contribution to children's literature. He is better perceived as 'Indian Wordsworth.' The personality took birth on 19th May 1934. He was awarded with 'Sahitya Academy Award' in 1992 for ' Our Trees Still Grow In Dehra.' The novel of him that I went through binds you all time until you finish it. Being boisterous is one of its ilk. While scrutinizing the book, one finds himself deeply engrossed in it by long odds.

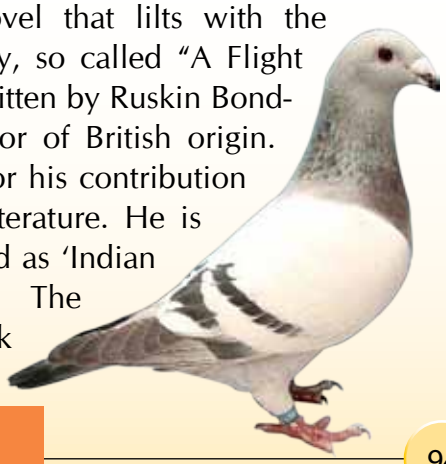

The whole novel is based against the backdrop of 1857 uprising in Shahajahanapur. This is a story witnessed, experienced and told by Ruth Labadoor, a 13 yrs old British girl. The story starts from the massacre of the British civilians in the church where she watches her father die in front of her. She along with her mother Mariam {the cynosure}, grandmother, aunt and cousin takes refuge in the house of very kind-hearted Lala Ramjilal's house. But captivated by the grace of Ruth, Javed Khan forcibly brings her and mother to his house with a cherished desire of convincing Mariam to make Ruth his second wife.

Javed Khan emerges out as a character who leaves no stone unturned to make his desire a reality, but on the other hand, he is sensible enough to wait for willing acception of the matrimony from other side. Mariam being an erudite and dulcet lady uses her whole bag of tricks. She brings Javed around by striking a deal with him that future Delhi must decide

the future of this alliance. The status quo continuous with a question mark almost a year and few months.

Mariam and Ruth's luxurious locks, polite speech, and dexterous needle-work and of course affable nature win them many women's appreciations and supports. Kothiwali plays a vital role in supporting them.

They were always afraid due to being acquainted with circumstances. But it is rife that Britishers had ruled almost nine decades upon us so when they regained the place, Javed kept his words and left Ruth and her mother. Really, the ending of story watered my alacrity when Javed instead of leering, glares at Ruth and eludes away.

The saga is of survival of women who took refuge in hostile situation but their wit, grit and luck led them to the light beyond the dark tunnel and they led a usual life. The novel delivered the goods. I found the writings of Bond very emotional and inspirational. He rules over the mind of readers by showing whate'er he desires. Every Indian abhors Britishers as they didn't do handsome with us but the spellbinding creation of Bond coerces us to pay sympathy for and favour Ruth and Mariam inspite of having their nationality as Britishers. The effect and essence of novel wasn't evanescent but immortal. Thanks a lot to 'AFOP' and Bond for imbuing my inured nerves with an iota of infomania illudely. Treat it as a request or admonition, but if possible, please do go through the book.

"An erudite writer who reigns o'er hearts,
With extols and ovations be he crowned;
One whose creations are spellbinding,
He is Ruskin Bond, He is Ruskin Bond."

Amit Kumar
III YEAR

CARPE DIEM

O! My dear friends
Understand the value of time.
Don't restrict your life for shortcuts.
There's no option,
To escape from struggles of life.
So proceed by clearing the obstacles.

Yesterday is dead,
Tomorrow hasn't arrived yet,
You have just one day
And that is today.
Don't loss it being judgemental.
Try to make best use of it.

Time is a brave sailor
Who doesn't know to come back.
Life is very small,
Sitting idly may not be judged at all.
Take initiative to go ahead,
Seize the day to make it memorable,
As life will not provide another chance.

Hardip Mahto
Pradeep House
III YEAR

Blackmarketing

Black marketing is common in our country today. We are forced to pay higher prices to buy the essential commodities. The artificial scarcity is created in the market. Needy people have to buy things from the black market. Sometimes sugar, sometimes cement, sometimes baby food and sometimes life- saving drugs are hoarded. There high demand and low supply results in black marketing. This is high time for businessman to be happy. They approach to make maximum profit by selling the hoarded goods in the black market. There are different cause of black marketing. When production is low and the distribution system is faulty there may be black marketing of the item. Sometimes only the faulty distribution system leads to black marketing. But most of the time, some big businessman create an artificial shortage of things. They hoard it and then allow the demand for the thing to go up. They release that item slowly. Customers move from shop to shop for the item. They are forced to pay higher prices for the thing. Thus, some big businessman make huge profit through blackmarketing. Sometimes the government officials are also responsible for blackmarketing. There are many things which are distributed through permits and licence. Officials are so idle, selfish and corrupt. They don't issue permit in time. Naturally, a state of scarcity of the thing is created in the market. Some businessman wait for such a golden opportunity. They start selling things in the blackmarket. Thus, they earn maximum profit. At times, lack of supervision and control by the government machinery leads to blackmarketing of the good. On some occasions, corrupt official and immoral businessman are in league with each other to create an artificial shortage of thing. Thus, they sell it in blackmarket and both are gainers. Hoarding and Blackmarketing must be checked. Production must go up to the meet and demand. The distribution system should be made faultless. Government officials should be active and watchful. Licence of permits should be issued on time. Only right persons should get them so that the goods should not move into the black-market. Hoarder should be punished. Blackmarketers should be dealt strictly. Businessman should not be allowed to indulge in black-marketing. Blackmarketing is a social evil. It is a curse to society. The government should be alert. But society will also have to fight to put an end to this practice of hoarding and black-marketing.

Rahul Roshan
Kishore House
II YEAR

Amazing Facts

- Chimps are the only animal that can recognise themselves in a mirror.
- Owls are the only birds that can see the blue colour.
- Antarctica is the only continent that is without reptiles or snakes.
- Honeybees have hair on their eyes.
- Tuesday did not exist on calendars until 1955.
- Hummingbird is the only bird that can fly backward.
- A Zebra is white with black stripes.
- A whip makes a cracking sound because its tip moves faster than its speed of sound.
- Beethoven couldn't even hear his own ninth symphony when he composed it. He was deaf.
- Until 1896, India was the only source of diamonds in the world.
- In its lifetime, a shark can grow, lose and replace thousands of teeth.
- Coca-cola was originally green
- It is physically impossible for a pig to look up into the sky.
- Elephants are the only animals that can't jump.
- The electric chair was invented by a dentist.
- It's impossible to sneeze with your eyes open.
- Crocodiles swallow stones to help then dive deeper.
- The end of the river is called its mouth.
- Our eyes are always of the same size from birth, but our nose and ears keeps on growing.

Saurav Kr. Gupta
Shailesh kr.

Partial Brain Transplant

In 1982, doctor Dorothy T. Krieger, chief of endocrinology at Mount Sinai Medical Centre in New York city, achieved success with a partial brain transplant in mice.

In 1998, a team of surgeons from the University of Pittsburgh Medical Centre attempted to transplant a group of brain cells to Alma Cerasini who had suffered severe stroke that caused the loss of mobility in her right limbs as well as limited speech. The team's hope was that the cells would correct the listed damage.

Similar concepts

The whole - body transplant is just one of the several means of putting a consciousness into a new body that have been explored by both scientists and writers. Edgar Rice Burroughs the mastermind of "Mars" involves a surgeon who does this as his main operation and a man from earth, the narrator and main character, who is trained to do it as well. Robert Heinlein's 1970 science fiction novel "I Will Fear no Evils" features a male character named Johann Sebastian Bach Smith whose entire brain was transplanted into his deceased secretary's skull.

A similar procedure often found in science fiction is the transfer of one consciousness to another without moving the brain. This is found in many sources, most often a body swap between two characters of an ongoing television series; It occurs in the original 'Star Trek' series twice, in the 'Ex-Files' episodes, in the serial 'Mindwarp' and in movies like. Freaky Friday, Farscape, Stargate SG-1, Buffy the Vampire Slayer, Dollhouse, Red Dwarf, Avatar, Dark shadows; even in Archie comics. There is no movement of the brain. However, it is not quite the same as a whole body transplant.

In the horror film 'The Skeleton Key', the Protagonist, Caroline, discovers that the old couple she is looking after are poor voodoo witch doctors who stole the bodies of two young privileged children in their care using the ritual which allows them to swap bodies. Unfortunately, the evil old couple also trick

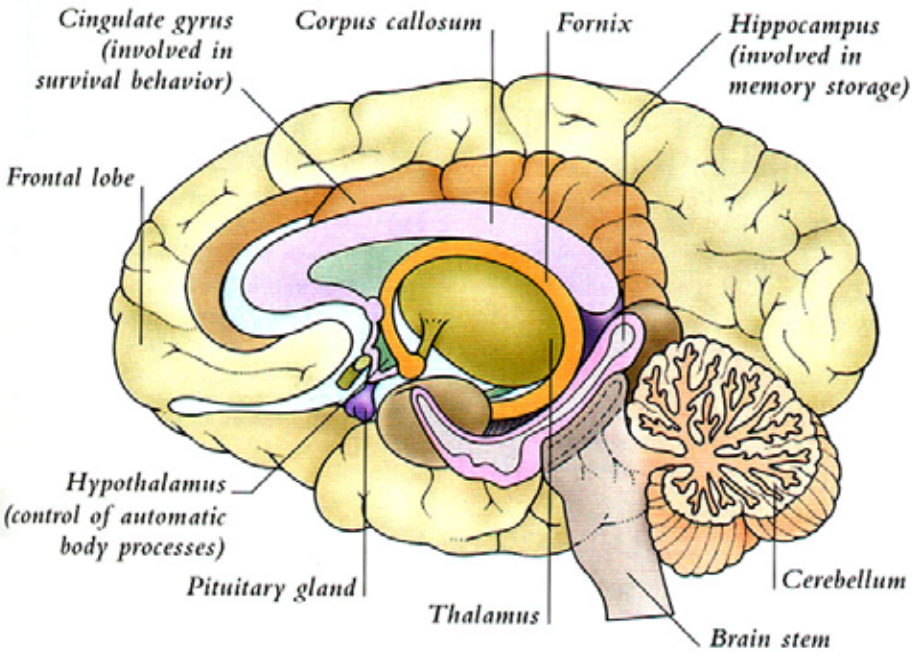

Caroline and their lawyers into the same procedure and both end stuck in an old dying bodies unable to speak while the witch doctors walk off their young bodies.

In Anne Rice's 'The Tale of the Body Thief', the vampire 'Lestat' discovers a man, Raglon James, who can will himself into another person's body. Lestat demands that the procedure be used on him to allow him to be human once again, but soon finds that he has made an error and is forced to recapture James in his vampire form so he can take his body back.

Similar in many by ways the idea of mind uploading, promoted by Marvin Minsky and others have a mechanistic view of natural intelligence and an optimistic outlook regarding artificial intelligence. It is also a goal of Realism, a small cult based in Florida, France, and Quebec. While the ultimate aim of transplanting is transfer of the brain to a new body optimised for it by genetics, proteomics and other medical procedures, in uploading the brain itself moves nowhere and may even be physically destroyed or discarded; the goal is rather to duplicate the information pattern contained within the brain.

Another similar literacy theme, though different from either procedure described above, is the transplantation of a human brain into an artificial, usually robotic body. Examples of this include : Caprica, Full metal Alchemist, Ghost in the shell; Robocop; the DC comics superhero Robot man; the Cyber man television series, or full-body cyborgs in many works in the cyberpunk genre. In one episode of Star Trek, Spock's brain was stolen and installed in a large computer like structure and in "I, Mudd", Uhura offered immortality in an android body. The novel 'Harvest of Stars' by Paul Anderson features many central characters who undergo such transplant and deals with the difficult decisions facing a human contemplating such a procedure. In the 'Star-War' the expanded universe were created by taking the brains of grievously wounded TIE fighter pilot aces. Emperor Palpatin also imbued them with the dark side giving them a sixth sense and making them into extensions of his own will.

Thus we can say that the theme of Brain Transplant is whole heartedly entertained in Science Fiction.

Prince Kumar

Dr. Wilson's Secret Room

I had visited my aunt's village after a long time, the village which I have always cherished in my memory. We had brought a furry and cute kitten. Aunt Mary loved to have a pet. She was flabbergasted to see a lovely kitten with green glittering eyes. She lovingly embraced her and tried to extend poignant relations with her. She spent most of her time with the kitty in the house.

It was a calm and serene morning. I was as usual glued to my video games, suddenly, I listened screaming sounds hovered around the kitchen. Something bad had happened. The kitten was not opening her eyes. Aunt Mary started sobbing. It might have fractured her leg. We were perplexed. We had a brainstorm at the moment. Uncle said ,"Don't worry, our kitty will be healthy soon. There lives a veterinary doctor across the river. He can treat her...". I was saddled with that job. I currently held the kitty and through the bustling lanes eventually landed across the river. I furiously knocked the door of doctor's bungalow which was looking so magnificent and maintained. Somebody opened the door, looking so surly and scatty clad with shabby clothes. He was Dr. Wilson, one of the famous doctor of the village. He welcomed me warmly and asked me to sit on his glossy red sofa. Concerning the accident, I uttered all the things briefly. Touched with the matter, he certainly looked the kitty and carried the kitty elsewhere saying "I will soon be back giving her medicines". Then, I was alone with the silence room and the tick-tick of clock. A large mirror was glaring behind me. I stood up and went near to the mirror and started running figures through my hairs, incessantly. My eyes centred to a button attached beside the mirror. I was hardly stricken far into a room after the button has been pressed incidentally. This seems a secret room with suckling floor and numerous huge shelves. There were bottles and chambers showcased into shelves. These were packed with lizards, frogs, rats, kitten, rabbit and what not! That all smelled so unpleasant. Body parts

of animals were packed in ice tubs. There were chambers for living snakes . It all seems horrible. I was speechless and frighten...' 'Is Dr. Wilson a doctor or a butcher?' asked my terrified mind. As I seek for turning back, there appeared Dr, Wilson's monstrous face with a knife in a hand. I got plastered to a shelf; I was in dilemma and yet clueless.

"Eh! Where is my kitten?"
"Your kitty is in deep slumber"
"You are a cheater Dr. Wilson"

"No, no....., I am a handsome druggist. I catch animals and make drugs with their body parts and supply them to cities. You know, it has a huge profit. Who cares about stupid villagers and stupid animals?"

Lo and behold, I pushed him into the chamber and succeeded in escaping from his access. I ran towards village with quick feet and huddled the villagers, told them all about the reality of Dr. Wilson's deceits and deeds.

The villagers with soaring rage moved into the Wilson's house. The lunatic crowd flared up. The multitude broke into the doors and thronged to the secret room in hue and cry. But certainly, the hullabaloo got in silence.

The crowd surrounded something. I jostled and saw that Dr. Wilson was dead. He had a mark of snake bite on his hand. My uncle looking so perturbed remarked that, "He was Dr. Blake Wilson, our ex-assistant in the research centre long ago. I thought he died in the fire accident of lab. What this happened to him..?" It was nothing but revenge whacked and erupted due to ill-treatments on animals.

Navin Kumar
Vikram House
IV YEAR

Facts about some English Words

- 'Rhythm' is the longest word without any vowel.
- 'Education' is the smallest word containing all vowel.
- 'Town' is the oldest word in English literature.
- 'Pnemoultramicroscopicsillicivianiosis' is the longest word ever in English literature. It is a lung disease.
- 'Orange' does not have any homophones.
- About 90% of all country's name have common letter 'a'.
- 'Strength' is the longest word containing just one vowel 'e'.
- The word 'Go' is the smallest sentence.
- The letter a, b, c, d never comes from one to ninety-nine.
- The smallest dot above 'i' is called tittle.
- 'Dreamt' is the only word that ends with 'mt'.
- There are elements starting with every letters except J, Q and W.

Ujjwal Goyal
IV Year

Yoga : A Way Of Life

Yoga has become a popular and effective path to physical and mental well being for increasing number of people around the world. Every year, many international travellers come to India seeking to learn this ancient Indian practice. Yoga instruction centres and ashrams in India, especially in holy towns like Rishikesh in the foothills of the Himalayas, draw serious students of yoga, as well as those who are just getting introduced to it.

Yoga is concerned with maintaining a calm mind. The philosophy of Yoga has been derived from wisdom and insight into physiology, ethics and spirituality collected together and practiced over thousands of years. The basic idea of Yoga is to unite the atma or individual soul with the Parmatma or the universal soul. In Sanskrit, the term 'Yoga' stands for 'Union'.

Patanjali codified the basic practices of yoga, such as Yogasans (padmasan, chakrasan, padhastasan, garurdhasan etc....) and Pranayamas (kapal bhati, anulom vilom etc.....) sometime between 200 and 300 B.C. His Yoga sutra describes the aim of yoga as knowledge of the self and outlines the eight steps or methods of achieving it. For example;

Yamas or eternal vows.
Niyamas or observances.
Yogasans or yoga postures.
Pranayam or breath control exercise.

Pratyahara or withdrawal of the senses from distractions of the outside world.

Dharana or concentration on an object, place or subject.

Dhyana or Meditation.

Samadhi or the ultimate stage of yoga meditation.

With its emphasis on physical and mental well-being, yoga offers people today the perfect cure for stress and anxiety disorders.

Our Prime Minister Narendra Modi has declared 21st June as a "National Yoga Day" from this year itself, just to reveal the importance of yoga in the life of Indian people. So come lets arise to support the long tradition of our Indian exercise i.e; Yoga, that can gift us not only the physical health but mental health too.

Adarsh Kr.
V year

Forgetting

Just few minutes ago,
I longed to write something;
But when picked up my pen,
I forgot everything.

I forgot everything what
I wanted to write;
Coerced my mind to rewind,
But the conclusion was still white.

Gave multiple options but
Nothing could fit;
I endeavoured many times,
Perhaps brain had deleted it.

Deletion of the program
Privileged me a subject;
'Forgetting' was the title,
My opinions be the gadget.

What I think about it
Is quite piquant;
'Tis a blissful bliss
To what God has sent.

Scrutinizing the topic presents
Two facets of a coin;
One does the handsome
To sorrow, another does join.

Handsome in the sense
We forget the waste;
And try to lead ahead
By trying our best.

Forgetting the clumsy pains,
Sorrows, Mistakes and Fights;
Leads one to glistering rays
From dark and painful nights.

If something bad is forgotten,
Without taking any time;
Circumstances of our mind
Will automatically be fine.

Doing so refreshes our mind,
And makes it clear;
For our past black days,
We don't need to shed tear.

Another aspect of forgetting
Is also powerful;
Forgetting something useful
Is always painful.

Those who donot forget things
That are waste;
They always do invite
Tension as their guest.

The oblivious guys of society
Are decried everywhere;
They are unable to concentrate
Chances of their success is rare.

Never forget such things,
Those are worthy and thus;
Preventing the problems,illude,
From being lengthy.

If we forget our ailments,
Forgetting is a boon;
But if forget something else,
It becomes a bone very soon.

Monu
III yr

Teacher: Ajay, what would you like to be in the next birth?
Ajay: A Giraffe.
Teacher: Why so?
Ajay: So that teachers wii not be able to slap me.

* * *

Chemistry teacher dropped a coin into acid and some reaction took place.
Teacher: Tell me, was the coin real or fake?
Monu: Fake.
Teacher: How?
Monu: If it was real, you would not have thrown it into acid.

* * *

Why is Facebook such a hit?
It works on the principle that people are more interested in other's life than their own.

* * *

A boy was cutting the sides of a tablet.
His friends asked him that why he was doing so.
He answered: So that there will be no side effects.

* * *

A father was teaching the spelling of ASSASSINATION to his son.
One ASS Behind that other ASS Behind that I And behind me the whole NATION.

* * *

Mangru gave a lotus to Richa and said: Vote for BJP.
Richa slapped him tightly and said: Vote for Congress.
Mother: Chintu, we need some oil for the lamp.
Chintu: Pour some water instead.
Mother: How do expect to burn a lamp with water?
Chintu: How will the lamp know what we are pouring.

* * *

Policemen: You will be rewarded with Rs. 5000 for wearing the seat belt while driving. What will you do with the money?
Motorist: I'll get a driving license with it.

* * *

Doctor: Did you try sleeping with the window open as I advise?
Patient: I did, Doctor.
Doctor: So is your asthma better?
Patient: Yes but all my gadgets have disappeared.

* * *

Mother: Sita! Don't eat ice cream or you may catch cold.
Sita: Don't worry I'll wear a sweater before eating it.

* * *

Hero: If I jump down from this building, I'll surely die.
Director: Don't worry this is the last scene of the film.

* * *

Teacher: What happens when Gold is exposed to air?
Student: It'll be stolen.

* * *

Teacher: Tanu, what will happen when Sun will not rise for a day?
Tanu: There will be a rise on our electricity bill.

Priyaranjan Sinha
III yr

Teacher's Day

Revered Principal Sir, Respected learned teachers and my dear senior's, classmates and juniors!

I really feel proud and privileged to stand before this august assembly to pay my gratitude and deep sense of regards to all my honourable teachers on this pious and solemn occasion of Teacher's day.

As we know that a day is ear-marked to celebrate Teacher's day on 5th September. In the found memory of our legend teacher- Dr. Sarvapalli RadhaKrishnan .

Today I am here to share my feelings on the Role and Contribution of teachers in shaping and moulding the growth of students.

Still I am not matured enough to fathom the limitless boundary of exemplary roles a teacher plays in the life of a budding students. But I know, and it is said:

"Teachers are the silent builder of a sound Nation"

It is true! A teacher is a builder, an architect who gives the shape and forms to the foundation of a Nation.

Gandhiji has rightly pointed out the prosperity and progress of nation very much depends on the hefty shoulders of students. Truly speaking a student is nourished and matured in the lap of teacher. Students are the store houses of energy that gets channelized under the stewardship of able and competent teacher.

Teacher's are not only those who are with us in the classroom. They are not only those who examine and access our academic performance. Even they are teachers who help beckon our paths of life to march ahead. In that sense, I think, our mothers, fathers, our figures of authority, our peers, our ideals, all play a vital role in fashioning our psyche. To me, one who installs and imbibes virtue in us he too should be regarded and revered as teachers!

No profession can equal the merit and sacrifice of teaching profession. After all teaching is a noble profession, isn't it?

Our late president Dr. APJ Abdul Kalam also used to show his deep faith and regard to teacher as a whole. He was absolutely convinced with his perception of the role and value of a teacher in the life of a student. It was not without anything that he mentions the role of his science teacher Sivasubramania Iyer who played a big role in the career of Kalam.

Undoubtedly, the service and contribution of teacher can never be marginalised.

On this sacred occasion, I sincerely extend my warm regards and respect to all my worthy teachers. I owe you a lot teacher! I respect you all! I adore you all!

I would ever cherish your company. I would ever crave for your yeoman's service. After all you all are the harbingers of knowledge. You are our path-makers . No reward, no citation, no material gift can repay your contribution.

We all will be always indebted to you for your missionary zeal and selfless service.

Once again, I wish you all- a happy, a healthy and peaceful life.

May god bless you all a long life so that we students may prosper under the shade of your blessings.

Finally, I bow my heart to pay my sense of gratitude to all our beloved teachers!

A big thanks to all of you!

Happy Teachers Day!

Speech by

Anshika Roy
Iii Year

The Hare and the Tortoise : New Version

Once upon a time a tortoise and a hare had an argument about who was faster. They decided to settle the argument with a race. They agreed on a route and started off the race. The hare shot ahead and ran briskly for some time. Then seeing that he was far ahead of the tortoise, he thought he'd sit under a tree for sometimes and relax before continuing the race . He sat under a tree and soon fell asleep. The tortoise plodding overtook him and soon finished the race, emerging as the undisputed champ.

The moral of this story : Slow and steady wins the race.

This is the version of the story that we've all grown up with. New version is that the hare was disappointed at losing the race and he did some soul searching. He realised that he'd lost the race only because of his over confidence, carelessness and lax. If he had not taken things for granted, there was no way the tortoise could have beaten him. So, he challenged the tortoise for another race. The tortoise agreed. This time, the hare went all out and ran without stopping from start to finish. He won by several miles.

The moral of this story : Fast and consistent will always beat the slow and steady. It's good to be slow and steady but better is to be fast and reliable.

But the story doesn't end here. The tortoise did some thinking and realise that there is no way he can beat the hare in a race through road. He thought for a while and found solution he then challenged the hare for another race but on a slightly different route. The hare agreed. They started off. In keeping with his self made commitment to be consistently fast, the hare took off and ran at top speed until he came to a broad river. The finishing line was a couple of kilometres on the other side of the river.

The hare sat there wondering what to do. In the mean time the tortoise plunged into the river., swam to the opposite bank, continued walking and finished the race.

The moral of this story : first identify your core competency and then change the playing field to suit your core competency. If your strength is analysed, make sure you do some sort of research, working accanding to your strength will not only get you noticed, but will also create opportunities for growth and advancement. The story hasn't ended.

The hare and the tortoise, by this time, had became a pretty good friends and they did. Some thinking together. Both realised their potantial and agreed to run the last race, but this time as a team. They started off and this time the hare carried the tortoise till the river bank. There tortoise took over and swam across with the hare on his back. On the opposite bank the hare again carried the tortoise and they reached the finishing point together. They both felt a greater sense of satisfaction more than they'd felt earlier.

The moral of this story : It's good to be individually brilliant and to have strong core competencies, but unless you are unable to work as a team and harness each other's core competencies, you will always perform poorly because there will be a situation at which you will perform worse and someone else does well.

Neither the hare nor the tortoise gave up their failure. The hare decided to work harder and put more effort after his failure. The tortoise changed his strategy because he was already as hard as he could. In life, when faced with failure, it is appropriate to work harder and put in more effort but one should have the knowledge where to put their effort s.

To sum up, the story of the hare and the tortoise teaches us many things. Chief among them are that fast and consistent will always beat the slow and steady, work to your competencies and resources and working as a team will always beat individual performer, never give up when faced with failure and finally compete against the situation – not against a rival.

Kunal Kumar
Kanva House
Iv Year

Grab Your Opportunity

Standing at the seashore, watching the approaching waves from a safe distance can bring visual satisfaction only. One will remain deprived of the real fun, till he steps forward and touches the water. Each wave comes in its own pace, washes away the shore and returns back. The opportunities in life are similar to the sea waves. If you are not alert to grab and avail them they will be gone with the time. These lines from Rabindranath Tagore's Geetanjali echo the same thought.

Pluck this little flower and take it, delay
not! I fear lest it droop and drop into the dust.
It may not find a place in thy garland,
But honour it with touch of pain from
thy hand and pluck it.
I fear lest the day
End before I am aware, and the time of
Offering go by.
Though its colour be not deep and its
smell be faint, use this flower in thy service
and pluck it while there is time.

Don't waste your time just by pondering over the subject- If luck will not favour us will the victory knock at our door or we will fail or succeed in life? Failure is determined by what you allow to happen and Success is determined by what you make happen. The latest issue of pursuit is in your hands now. Expressions from every corner claims at being an effort for awakening the laborious and creative minds, so that everyone can look ahead with the past unsurpassable glory and building of a developed future. Let others spirits be lifted up while having a positive glance through your achievements and let it stand true to its claim. So grab the opportunity when it comes and make best use of it before it expires. In the words of Antony J.D'Angelo-

"Wherever you go, no matter what the weather, always bring your own sunshine."

Nishi Hemrom
(English Teacher)

When I was Walking

When I was walking
Feeling so sad,
I felt something
That I am bad,
Because there 's no one by my side.

No one to care no one to guide.
Everywhere I find
There's no one behind.
Then I sigh
And began to cry.

I think i'm ace
In my dreaming place.
I am a Cain,
Of my own pain.
It sticks with me like a stain.

Now i'm in cage
And what's my image,
To say that day
I don,t have any way.
I'm confuse,So to choose.

My missing things
Which is going to swing,
Like tears
Dropped from my eyes,
As rain from skies.

Rishabh Raj
V year

Rain in Netarhat

When I had joined Netarhat first,
I used to weep a lot;
The culprit was no one but thirst,
Of love and affection I never got.
I didn't get whate'er I desire,
Neither the bill nor the coo;
Thinking only a thing, I was tired,
Where to go and what to do?
So once a day recalling my home,
My eyes were completely wet;
But sooner a raucous sound had come,
That scared us without any wait.
When everyone listened the sound,
Found it a thunder;
Instantly and eagerly, I too found,
Something that was a wonder!
Just only few minutes ago,
There was glistering rays of sun;
But now where did it go,
Leaving pleasure in epitome of rain.
The rain was so special for me,
For a number of reasons;
First, it had brought a tinge of glee,
Among all usual seasons.
The downpour wiped my tears away,
And stained all my ailment;
It disappeared my dismay,
I heartly remember every moment.
I had seen rain many times,
But this one was different;
The tune of raindrops were as hymns,
To glare the scene, I too was fervent.
Each moment of that time is immortal,
B'coz it was my first rain at N'hat;
The scene can't be called mortal,
Because of its unpredictable art.
My heart leaped up more heartly,
When white pearls started to fill courtyard;
The panorama was decorated beautifully,
Until each inch and every yard.
I broke into deep laughter when,
Saw seniors bathing in the stream;
Water imbued each and every drain,
And the trees were ameliorated green.
The event touched me fully,
So I was full of joy;
The exhilarating rain stopped truly,
Energizing every boy.
Rain at here is like a mystery,
That is quite different;
Drops reign over every tree,
That seems very piquant.
Clouds make the place spectacular,
By their kind presence;
The climate becomes cooler,
And replete the place with fragrance.
During rain, the path becomes slippery,
A bit difficult to walk;
Need attention and concentration in every,
Step to be taken forward.
The chirping of every bird,
After the rain stops;

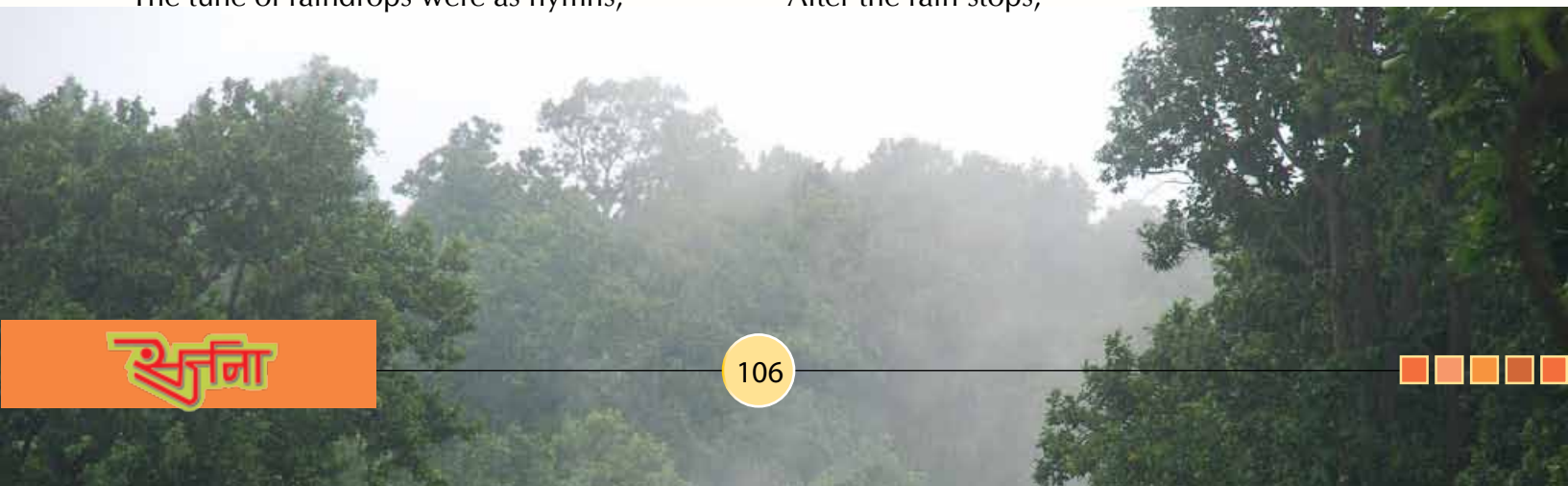

Feels as if never heard,
And infuses inmates with hopes.
The weather looks faint,
When clouds herald;
The place appears giant,
In the sense of beauty formed.
All the corners depict,
A thirsty companion;
In the love of cloud mist,
Embracing each other with a bunch of affection.
The weather is moist and humid,
That refreshes the denizens;
At a particular time, sunrays are deep,
In next few minutes, it rains.
The hark silence of nature,
Signals the arrival of rain;
Each and every creature,
Dancing as if playing hide and seek game.
Here's rain is pleasing,
That can't be forgotten;
It keeps everyone teasing,
Who ever saw such scene.
For me, that rain can't be forgotten,
As 'twas not only a rain;
It had shared my joy and pain,
Hence I never wept again.

Ami Krishna
III year

The power of Self Confidence

Dealing with the mind is creative
Dealing with people is a challenge
Dealing with the inanimate is monotony.

The mind is sharper than a knife. Use it to fight the challenge. Use it to sculpt the stone. Everyone is creative. We just need to find the right key to unlock it. Follow along the short story below to understand the power of Self-Confidence.

Stumbling over stones, a man was trying to find his way through a dark cave with a light of hope from a lantern. Finally, he could trace a ray of sunlight entering the cave which made him glitter with happiness.

But as he drew closer, he was bewildered to see a gigantic rock standing before him like a mammoth. Courage was the only strength he possessed to devastate the barricade. He pushed the rock with all his might, but it stood firmly denying to move. He tried again but it repudiated him from leaving the place. He felt as though being swallowed by a Blue Whale that was waiting to fulfil its enormous appetite. He sat at the foot of the massive rock in the mouth of the gargantuan cave looking back at his endeavour and said "I'll get out of here." This will add to his power and gave him more energy in pushing the colossal piece. The rock moved a little which motivated him to work harder. It enervated him but he was not put off. He seemed an ant before a giant, not in terms of size or potency, but in his attitude.

Slowly the road made the road for him, paying tribute to all his efforts. He walked along the bright and evergreen path before him with pride.

My point: We can find a lot of inspiration by looking around. Life is to learn. Look back and learn from mistakes. When a door closes in life, another opens. But, if you do not let go off the pains of yesterdays, the joy of today and tomorrow will never be discovered. There may be many causes for a problem. Identify the right one before finding a way to solve it. Heal the fear within by injecting the spirit of confidence.

Ayush & Fahad
III years

VIOLENCE AGAINST WOMEN

In an Indian family when a boy is born, he becomes a reason for celebration. A son means insurance. He will inherit his father's property and get a job to help and support his family. But when a girl is born, the expected reaction is quite different. Some parents weep when they find out their baby is a girl because, to them, a daughter is just another curse of expense.

A recent G-20 survey ranked India as the worst place to be born as a woman. Female feticide, domestic violence, sexual harassment and other forms of gender based violence constitute the reality of most girls and women's living in India.

When we talk about "Women Empowerment", the most important aspect that comes into the mind is the attitude of the society towards women. Women are still considered as burden and liabilities. They are also considered as properties. These kinds of attitudes give birth to the evil of violence against women. Violence against women may be in many forms. From birth till death women face many kinds of violence. Heise and Germain (1994) have stated various forms of violence experienced by women throughout their life span as under:

Forms of Violence experienced by women throughout their life span are as follows:

- Pre-birth-sex-selection abortion; Battering during Pregnancy; Coerced Pregnancy.
- Infancy female infanticide; emotional and physical abuse.
- Early child marriage; Sexual abuse by family members and strangers.
- Adolescence: Violence during courtship, economically coerced sex (eg; school fees); sexual abuse in the workplace; rape; sexual harassment.
- Elderly abuse of widows including property grabbing, accusations of witchcraft.

Major types of violence committed against Women are as under:

- Mental or Psychological torture.
- Family violence.
- Rape and sexual abuse.
- Acid throwing.
- Forced prostitution.
- Abduction.
- Violence of dowry.
- Torture during pregnancy.
- Murder.
- Abortion.

It is clear that violence against women is endemic in India. Women Empowerment is a process of creating awareness among women which develops inside them a capability to think, understand and decide for them. It also helps them to "realize their worth". Indian women are a large marginalized section of society. They suffer inequality in respect of social, educational, health, economic and political status. They are related to those factors which affect the quality of life such as- rampant poverty, lack of education, poor health stations, child bearing, child rearing, gender and health nutrition. There are no. of crimes which need to be addressed to streamline the existing women empowerment programmes in India as well as initiating actual work at the ground level.

Women make up to 50% of country's population but their living conditions are very tough and torturous. To initiate measurable actions at ground level, education of women should be given top most priority and female literacy programmes needed to be enforced across the country. The real change will be only visible when social attitudes and norms change. A clear vision is needed to remove the obstacles from the path of women's emancipation both from the government and women themselves. Efforts should be directed towards all round development of each and every section of Indian Women by giving them their due share.

Swami Vivekanand had said:

"That which doesn't respect women, will never became great now and nor will ever in future." And in pursuit of making India a great nation, let us work towards giving women their much deserved status.

Nikhil Shukla
IV year